बिहार के दर्शनीय स्थान

लेखक

श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ विद्यालंकार

प्रकाशक

ग्रन्थमाला - कार्यालय

बाँकीपुर

वक्तव्य

इस सुविस्तृत देश, भारतवर्ष में विहार सदा अपना एक विशेष स्थान रखता आया है। इसकी ऐतिहासिक महत्ता तो सर्वविदित है; इसलिये इसे अच्छी तरह जानने-समझने के लिये लोगों में उत्सुकता बनी रहती है। यहाँ के महत्वपूर्ण, प्रसिद्ध और दर्शनीय स्थान कौन-कौन से हैं तथा उनकी प्रसिद्धि और दर्शनीयता के क्या कारण हैं इसके जानने का कोई सुलभ साधन नहीं है। यों तो य्वन्-च्वाङ् (हेनसन) और बुकानन आदि प्राचीन और अर्वाचीन पर्य्यटकों के वृत्तान्तों में, जेनरल कनिंघम तथा आर-क्योलॉजिकल सरवे के अन्य रिपोर्टों में, जिला गजेटियरों में तथा अनुसंधान-सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाओं में यहाँ के महत्वपूर्ण स्थानों के वर्णन जहाँ-तहाँ छिटफुट मिलते हैं, पर अबतक किसी भाषा में ऐसी कोई पुस्तक नहीं है जिसमें विहार के प्रसिद्ध और दर्शनीय स्थानों के वर्णन एक साथ मिलें। अन्य प्रान्तों के संबंध में भी शायद ऐसी कोई पुस्तक नहीं है। बहुत दिन हुए, पटने के बाबू रामगोपाल सिंह चौधरी ने अँगरेजी में (Rambles in Behar) लिखकर इस सम्बन्ध में कुछ प्रयत्न किया था। पर इस पुस्तक में भी मुख्यतः दो-तीन जिलों का वर्णन है; बाकी जिलों में कई का तो वर्णन है ही नहीं और जिनका है उनका भी बहुत कम। पुस्तक आदि के अनुसंधान के साथ ही साथ स्वयं किसीका समूचे विहार में भ्रमण कर सभी स्थानों का आँखों देखा विस्तृत

वित्तान्त लिखना बहुत ही परिश्रम और खर्च का काम है। मालूम नहीं इसके लिये कब समय अनुकूल होगा। पर जब तक ऐसा नहीं होता तब तक पाठकों को यत्र-तत्र बिखरे हुए वृत्तान्तों के संक्षिप्त संग्रह पर ही सन्तोष करना होगा। लाचारी यही मैंने किया है और किया है 'विहार-दर्पण' नामक पुस्तक के तैयार करने के सिलसिले में। इसलिये इसमें त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। जिसके लिये आशा है, विचारवान पाठक क्षमा करेंगे।

भारत सरकार के आरक्योलॉजिकल डिपार्टमेन्ट ने अपने कुछ संग्रहीत चित्रों को छापने का अधिकार देकर तथा कुछ मित्रों ने चित्र भेजकर पुस्तक को सुन्दर और उपयोगी बनाने में जो सहायता पहुँचायी है, उसके लिये मैं उनका बहुत आभारी हूँ।

ग्राम कर्री
पो० महेशखुंट (मुँगेर)
फाल्गुन कृष्ण सप्तमी सं० १९९६

गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ

विषय-क्रम

विषय | पृष्ठ

———

विहार के दर्शनीय स्थान

विहार के दर्शनीय स्थान

पटना जिला

राजधानी पटना

पटना भारतवर्ष का एक सबसे पुराना ऐतिहासिक नगर है। यह २५°३७' उत्तरीय आक्षांश और ८५°१०' पूर्वीय देशान्तर पर गंगा के किनारे बसा है। यहाँ विहार प्रान्त की राजधानी और पटना कमिश्नरी तथा पटना जिले का सदर आफिस है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या १,५९,६९० है जिसमें १,१९,६४४ हिन्दू, ३८,२३८ मुसलमान, १,५७० ईसाई, १४९ सिक्ख, ३३ जैन, १५ आदिम जाति तथा ४१ अन्य जाति के लोग हैं।

पटना का प्राचीन नाम पाटलिपुत्र, कुसुमपुर, पुष्पपुर आदि है। आज से करीब ढाई हजार वर्ष पहले अजातशत्रु का पोता उदयन ने राजगृह के स्थान में पाटलिपुत्र को मगध-साम्राज्य की राजधानी बनाया। इसके बाद मौर्य्यवंश, नन्दवंश, सुंगवंश, कण्ववंश और गुप्तवंश आदि के राजे हजार वर्ष से अधिक तक पाटलिपुत्र की राजगद्दी से भारत के भिन्न-भिन्न भागों पर शासन करते रहे। मुसलमानी काल में भी शेरशाह के समय से पटना विहार की राजधानी रहा। यह नगर जैसा प्राचीन-

काल में बिलकुल लम्बा सा था प्राय: वैसा ही अब भी है। प्राचीन पाटलिपुत्र रेलवे लाइन के दक्षिण का और थोड़ा सा उत्तर का भाग है। कुम्हरार और बुलन्दी-बाग में जो खोदाई हुई है उससे मौर्य सम्राटों के महल का एक पत्थर का खम्भा, लकड़ी की दीवाल, रथ का पहिया तथा कितनी ही दूसरी चीजें मिली हैं। इसीके पास अगम कूआँ है जो अशोक के वक्त का बताया जाता है। इसका पुराना नाम अगम सर था। कहते हैं कि यह कूआँ नरक जैसा था और अशोक बौद्ध होने के पहले दुष्टों को पकड़ पकड़ कर इसी में डलवा देता था। इन दिनों आषाढ़ में यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। इसी के पास कुक्कुटा-राम संघाराम था जहाँ अशोक ने बौद्ध महासभा बुलायी थी। अगम कूआँ से दक्षिण बड़ी पहाड़ी, छोटी पहाड़ी और पंच पहाड़ी नाम के टील्हे हैं, जो बौद्धकाल के स्तूप समझे जाते हैं। उस काल का एक और चिन्ह भिखना-पहाड़ी में है। यहाँ लोग एक टील्हे की पूजा करते हैं जो भिखनाकुँवर के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं कि यह वही पहाड़ी टील्हा है जिसे अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र के रहने के लिये बनवाया था। गुलजारबाग रेलवे स्टेशन के पास कमलदह नाम का एक तालाब है। यहाँ एक जैन मंदिर है जहाँ स्थूलभद्र का निवास-स्थान बताया जाता है। यहाँ से कुछ दूरी पर घोरसर या ज्ञानसर है जो पाटलिपुत्र के सप्तसर में से एक सर समझा जाता है। इसी के पास शाह अरजनी की दरगाह है। इस शाह साहब की मृत्यु १६२३ ई० में हुई थी। जिस टील्हे पर दरगाह है उसे लोग चन्द्रगुप्त के सुप्रसिद्ध गंगप्रासाद का स्थान बताते हैं। बाबा प्यारेराम के बाग के पास, जहाँ शीतला देवी का मन्दिर है, सप्तसर में से राम-सर और श्यामसर थे। रामसर को अब लोग रामकटोरा और

श्यामसर को सेवें कहते हैं। मंगल तालाब भी सप्तसर में से ही एक है। यह नाम अब पटना के एक कलक्टर मि० मैंग्लस के नाम पर पड़ा है।

पटना-सिटी मुसलमानी वक्त का बसा हुआ शहर है। अजीम उश्शान ने इस शहर का नाम अपने नाम पर अजीमाबाद रखा था। यह शहर चारों ओर से घिरा था। इसमें दो मुख्य दरवाजे थे—पूरब दरवाजा और पच्छिम दरवाजा। इन दरवाजों के चिह्न अपने स्थान पर अब भी देखने में आते हैं। शहर की दीवाल भी टूटे फूटे रूप में कई जगह देखने में आती है। शेरशाह के बनवाये किले के कुछ हिस्से इस वक्त भी मौजूद हैं। चौक थाना के पास मदरसा मस्जिद है जो १६२६ ई० की बनी बतायी जाती है। चौक-थाना वह स्थान है जहाँ चेहलसतून नामक मशहूर इमारत थी। यहीं फरुकशियर और शाहआलम बादशाह घोषित किये गये थे। यहीं सिराजुदौला का पिता सूबेदार हेयावत जंग मारा गया था। उसकी कब्र बेगमपुर में है जो उसकी स्त्री चिमनी बेगम के नाम पर मशहूर है। कब्र के पास पाटलिपुत्र के सप्तसर में से एक सर है जहाँ भादों में मेला लगा करता है। गंगा के किनारे महाराजघाट में राजा रामनारायण का महल है। इनके अलावे शेरशाह की मस्जिद, अम्बर मस्जिद, पीर-बहोर का मंदिर, फक्रुद्दौला की बनायी मस्जिद आदि पुराने जमाने की इमारतें हैं। पटना-सिटी के पूरब बाग-जफरखाँ है, जहाँ मुसलमानी वक्त में लोगों को फाँसी आदि की सजा दी जाती थी। वहाँ बक्शी घर और सूली घर के चिह्न अब भी देखने में आते हैं। उसी ओर गुरु का बाग है जहाँ की बावली देखने योग्य है। सीटी में जहाँ तहाँ पुराने खँडहर दीख पड़ते हैं।

पटना-सिटी में दो प्रसिद्ध हिन्दू मन्दिर हैं—एक बड़ी पटनदेवी का, दूसरा छोटी पटनदेवी का। सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह का जन्म पटना-सिटी में ही हुआ था। यहाँ उनके जन्म-स्थान पर एक मंदिर बना है जिसे हर-मंदिर कहते हैं। यहाँ गुरु गोविन्द सिंह के खड़ाऊँ, जूता, तलवार तथा दूसरे हथियार पाये जाते हैं। ग्रन्थ साहब पर उनका हस्ताक्षर भी है। सिक्ख लोग इसे अपना एक प्रसिद्ध तीर्थ मानते हैं। मीर कासिम ने जहाँ २०० अंगरेजों को मारकर एक कूएँ में डलवा दिया था वहाँ उस कूएँ पर एक मीनार बना दी गयी है।

अंगरेजों के वक्त में शहर धीरे-धीरे पच्छिम की ओर बढ़ने लगा। इधर पहले शहर के धनी लोगों के बाग थे, पीछे घर भी बनने लगे। आखिर शहर बढ़कर बाँकीपुर तक आया। अभी हाल में जब बिहार बंगाल से अलग किया गया और पटना बिहार की राजधानी बना तो शहर और भी दक्षिण-पच्छिम जाकर गर्दनीबाग तक पहुँचा। यहाँ इन दिनों लाट साहब की कोठी, उनका दफ्तर सेक्रेटरियट और कौंसिल-भवन देखने लायक चीजें हैं। गर्दनीबाग सेक्रेटरियट के क्लर्कों के लिये बसाया गया है। यहाँ से थोड़ी दूर पर हाईकोर्ट है। पटना जंक्शन के पास से एक सड़क उत्तर-दक्षिण की ओर गयी है जो पटना-गया-रोड कहलाती है। इस सड़क के किनारे सूबे का सबसे बड़ा पोस्ट आफिस, सर्चलाइट अखबार का दफ्तर, इलाहाबाद बैंक, अजायब घर और कलक्टर की कोठी हैं। अजायब घर को अनपढ़ लोग जादूघर कहते हैं, मगर यह नाम गलत है। पटना-गया-रोड के पास ही सिन्हा लाइब्रेरी है। यह पटने की ही नहीं बल्कि प्रान्त की सबसे बड़ी सार्वजनिक अंगरेजी लाइब्रेरी है। इसे श्रीयुत सच्चिदानन्द सिन्हा ने कायम किया है।

पाटलिपुत्र की खुदाई का एक दृश्य

पटने का अजायबघर

खुदाबख्श ओरियन्टल लाइब्रेरी, पटना

गोलघर, पटना

पटना-गया-रोड के उत्तरी छोर के पास गोलघर है। १७७० ई० में जब विहार-उड़ीसा में बहुत बड़ा अकाल पड़ा तो उस समय के बड़े लाट सर जानशोर ने सोचा कि एक ऐसा मकान बनाया जाय जिसमें खूब अन्न भर के रखा जा सके और अकाल के समय में उस अन्न से लोगों की सहायता की जाय। १७८६ में यह मकान बनकर तैयार हुआ, लेकिन इसमें कभी अन्न नहीं रखा गया। यह ९६ फीट ऊँचा है। इसके ऊपर चढ़ने से पटना एक बाग सा मालूम पड़ता है। गोलघर के पास एक बहुत बड़ा मैदान है। मैदान के पास से इक्जबिशन-रोड और फ्रेजर-रोड पटना जंकशन की ओर गयी हैं।

मैदान के पास से दो सड़क पूरब की ओर गयी हैं, एक को उपरली सड़क और दूसरी को निचली सड़क कहते हैं। उपरली सड़क ही शहर की मुख्य सड़क है। इसी सड़क पर कलक्टरी और अदालत कचहरी, बी० एन० कालेज, बड़ा अस्पताल, मेडिकल कालेज, अदालत के पास बी० एन० डब्लू० आर० का महेन्द्र घाट स्टेशन है जहाँ जहाज लगता है। खुदाबक्स लाइब्रेरी, ला (कानून) कालेज, पटना कालेज, युनिवर्सिटी हॉल, साइन्स कालेज और इंजिनियरिंग कालेज हैं। खुदाबक्स लाइब्रेरी में अरबी फारसी की बहुत पुरानी और अच्छी अच्छी किताबें हैं, जिसके लिये यह दुनिया में मशहूर है। निचली सड़क पर ट्रेनिंग कालेज और कई-स्कूल हैं। पूरब पटना-सिटी की ओर बढ़ने पर रास्ते में पत्थर की मस्जिद मिलती है, जिसे १६२६ ई० में बादशाह जहाँगीर के बेटे ने बनवाया था। गुलजारबाग में सरकारी प्रेस है। पच्छिम की ओर ऊपरली सड़क दीघाघाट और दानापुर की ओर गयी है।

बाँकीपुर सब-डिविजन

बाँकीपुर—पटना शहर के एक हिस्से को बाँकीपुर कहते हैं।

दीघा—गंगा के किनारे यह व्यापार का केन्द्र है। यहाँ कार कम्पनी (रिभर्स स्टीम नेभिगेशन कम्पनी) का आफिस और कारखाना है। यहाँ से बड़े-बड़े जहाज ग्वालन्दो (बंगाल) तक और छोटे-छोटे जहाज गंगा में बक्सर तक और सरयू में बरहज तक जाते हैं। पटना-जंकशन से ई० आई० आर० की लाइन यहाँ तक आयी है। पहले बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का जहाज यहीं लगता था, पर अब वह कुछ पूरब हटकर लगता है। दीघा में थाने का सदर आफिस है। यहाँ १८ वीं सदी के कुछ मकान हैं।

पुनपुन—यह स्थान बाँकीपुर से ८ मील दक्षिण है। तीर्थ के लिये गया जानेवाले यात्री यहाँ सिर मुड़ाते हैं और पुनपुन नदी में स्नान करते हैं।

फुलवाड़ी—पटना और दानापुर के बीच रेलवे लाइन के पास यह एक कसबा है। महम्मद साहब का यहाँ कोई स्मृतिचिह्न है। मुसलमान इसे तीर्थ-स्थान मानते हैं और इसे फुलवाड़ी-शरीफ कहते हैं। साल में यहाँ एक बार मेला लगता है। फुलवाड़ी में थाने का सदर आफिस है।

दानापुर सब-डिविजन

दानापुर—यह दानापुर सब-डिविजन का सदर आफिस है। पटना से थोड़ी ही दूर पर यह एक शहर है जिसकी आबादी २४,२२१ है। यहाँ आटे और तेल के मिल हैं। लकड़ी की चीजें यहाँ बहुत बनती हैं। बिहार सरकार की यहाँ छावनी है, जहाँ पलटन रहती है। इस छावनी की जन-संख्या १०,२१७ है।

खगोल—दानापुर सब-डिविजन का यह एक छोटा सा शहर है। यहाँ की जन-संख्या ७,४१२ है। ई० आई० रेलवे का दानापुर स्टेशन इसी स्थान पर है, इसी कारण यह एक मुख्य स्थान हो गया है। शहर में म्युनिसिपैलिटी का प्रवन्ध है। ईसाई धर्म प्रचारकों का भी यहाँ अड्डा है। खगोल में थाने का सदर आफिस है।

नौबतपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

पालीगंज—यह इस नाम के थाने का सदर आफिस है।

विक्रम—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बिहटा—यहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन है। ऊख का एक मिल यहाँ कायम हुआ है। फागुन महीने में शिवरात्रि के समय इस स्थान पर एक बहुत बड़ा मेला लगता है।

भगवानगंज—इस गाँव में एक स्तूप का चिन्ह है जो चीनी-यात्री ग्वन् च्वाङ् द्वारा वर्णित द्रोणस्तूप समझा जाता है। उसने लिखा है कि भगवान बुद्ध के शरीर की राख को ब्राह्मण द्रोण ने घड़े में लेकर तत्कालीन ८ राजाओं में बाँट दिया था। अन्त में वह अपने हिस्से में वही घड़ा लेता आया और उस पर अपने गाँव में एक स्तूप बनवाया। बहुत दिनों के बाद जब अशोक राजा हुआ तो उसने वह घड़ा उखाड़ मँगवाया और फिर वहाँ स्तूप बनवा दिया। इस स्तूप के पास ही पुनपुन नदी बहती है।

भरतपुरा—यहाँ १८ वीं सदी में भरतसिंह नाम के एक जमींदार रहते थे, जिन्होंने यहाँ एक किला बनवाया था।

मनेर—इस स्थान की छोटी दरगाह और बड़ी दरगाह प्रसिद्ध हैं। छोटी दरगाह का मकान बहुत ही सुन्दर है। ये दोनों दरगाह सतरहवीं सदी के शुरू में बनायी गयी थीं। बड़ी दरगाह शेख यहिया की कब्र है। इनकी मृत्यु १२९० ई० में हुई थी।

बादशाह बाबर और सिकन्दर लोदी भी यहाँ तीर्थ के लिये आये थे। मनेर में थाने का सदर आफिस है।

बाढ़ सब-डिविजन

बाढ़—यह बाढ़ सब-डिविजन का सदर आफिस है। यहाँ की जन-संख्या ९,७५० है। यहाँ ई० आई० आर० का स्टेशन है। बाढ़ में चमेली का तेल बहुत दिनों से तैयार किया जाता है। यहाँ बराबर नदियों की बाढ़ होते रहने के कारण इस स्थान का नाम ही बाढ़ पड़ गया। मुसलमानी वक्त में यहाँ कई लड़ाइयाँ हुई थीं। मुँगेर से पटना आते वक्त मीरकासिम यहाँ ठहरा था और यहीं मुर्शिदाबाद के जगतसेठ और सरूपचंद को मार डाला था।

अठमलगोला—यहाँ ई० आई० आर० का स्टेशन है। बिहार से बंगाल जाने के मुख्य रास्ते की हेफाजत के लिये अठारहवीं सदी में यहाँ सिपाहियों का अड्डा था।

पुनरक—यहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन है। बिहार से बंगाल जाने के रास्ते में सैनिकों का यहाँ एक पड़ाव था। इस गाँव में सूर्य भगवान का एक मंदिर है।

फतुहा—यह एक छोटा शहर है। यहाँ की जन-संख्या ९,३९२ है। यहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन है। रेशमी और सूती कपड़े इस स्थान में तैयार किये जाते हैं। इसके आसपास मुसलमानी वक्त में कई लड़ाइयाँ हुई थीं। फतुहा में थाने का सदर आफिस है।

बख्तियारपुर—यहाँ थाना, डाक-बंगला, धर्मशाला और ई० आई० आर० का स्टेशन हैं। यहाँ से एक छोटी लाइन बिहार और वहाँ से राजगिर तक गयी है जिसकी लम्बाई ३२$\frac{3}{4}$ मील है।

वैकुंठपुर—खुशरूपुर रेलवे स्टेशन से एक मील उत्तर गंगा के किनारे यह एक गाँव है। बादशाह अकबर के मन्त्री राजा मानसिंह की माता यहीं मरी थीं। कहते हैं कि राजा मानसिंह ने ही इस गाँव को बसाया था।

मोकामा—बाढ़ सब-डिविजन का यह एक छोटा सा शहर है। यहाँ की जन-संख्या १,४२६० है। यहाँ से ई० आई० रेलवे की एक लाइन गंगा के किनारे मोकामा-घाट तक गयी है, जहाँ बी० एन० डब्ल्यू० का जहाज आकर मिलता है। मोकामा में थाने का सदर आफिस है।

सरमेरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

विहार सब-डिविजन

विहार—पंचाना नदी के किनारे यह विहार सब-डिविजन का सदर आफिस है। इस शहर की जन-संख्या ४६,९९४ है। पहले इस स्थान का नाम उदन्तपुरी था। ८ वीं सदी से लेकर १२ वीं सदी तक यहाँ पाल-राजाओं की राजधानी थी। गोपाल ने यहाँ बहुत बड़ा विहार बनवाया था। इसी से इस स्थान का नाम भी विहार पड़ गया। बख्तियार खिलजी ने आकर इसे तहस-नहस कर डाला। शेरशाह के पटना में किला बनवाने तक दक्षिण विहार के मुसलमान सूबेदार यहीं रहते थे। यहाँ बहुत से पीरों की दरगाह हैं जिससे मुसलमान लोग इसे विहार शरीफ कहते हैं। यहाँ एक छोटी सी पहाड़ी है जो पीर पहाड़ी कहाती है। यहाँ बुद्धदेव कुछ दिन ठहरे थे। पीछे यहाँ कपोतिका संघाराम बना। चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् ने इस संघाराम को देखा था। यहाँ एक मुसलमान पीर मलिक इब्राहिम की दरगाह है। इस पीर की मृत्यु १३५३ ई० में हुई थी। इस पीर के कारण ही

लोग इस पहाड़ी को पीर पहाड़ी कहते हैं। शहर के अन्दर अकबर के वक्त की दो मस्जिद हैं जिनमें एक जुम्मा-मस्जिद है। यहाँ की छोटी दरगाह और मकदुम शाह की दरगाह भी मशहूर है। इस शहर में गुप्त-राजाओं के वक्त का १४ फीट ऊँचा स्तम्भ है जिस पर कुमार गुप्त और स्कन्द गुप्त का उल्लेख है। १७६३ ई० में बादशाह शाह आलम ने यहाँ अपनी राजधानी बनायी थी। यहाँ एक पुराने किले का चिन्ह अब भी देखने में आता है। जहाँ तहाँ पुराने स्तूप टील्हे के रूप में दिखाई पड़ते हैं।

इस्लामपुर—यहाँ से एक छोटी लाइन जाकर फतुहा में ई० आई० आर० से मिली है। यहाँ एक बड़े बौद्धमठ का चिह्न है। इस्लामपुर में थाने का सदर आफिस है।

एकंगरसराय—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

गिरियक—पंचाना नदी के किनारे यह एक गाँव है। गाँव के पच्छिम जो पहाड़ी है उसे बौद्ध लोग इन्द्रशिला समझते हैं जहाँ, कहा जाता है कि, बुद्धदेव ने इन्द्र के प्रश्नों का उत्तर दिया था। यहाँ बहुत से विहार और स्तूप के चिह्न हैं। गिरियक पर्वत जंगलों से भरा है। पर्वत पर देखने लायक चीजें हैं—जरासंध की बैठक, हंस स्तूप, गिद्धद्वारी गुफा, असुरबाँध, किला और अगिन-धारा। गिरियक में थाने का सदर आफिस है।

चण्डी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

घोसरावाँ—यह स्थान विहार से ७ मील दक्षिण-पच्छिम है। यहाँ बौद्धकाल के बहुत से टूटे-फूटे मठों और स्तूपों के टील्हे हैं। इनमें दो प्रधान हैं, एक वह जिसपर आशा देवी का मंदिर है और दूसरा वह जो वज्रासन विहार का बचा हुआ अंश समझा जाता है।

तेतरावाँ—यह गाँव विहार से ६ मील दक्षिण-पूरब है। यहाँ दो बड़े सुन्दर पोखर हैं—दिग्घी पोखर और बालम पोखर।

जरासंघ की बैठक, राजगृह (पटना)

हरमंदिर—गुरु गोविन्द सिंह का जन्मस्थान, पटना सिटी

शाहदौलत का मक़बरा, मनेर (पटना)

नालन्दा विश्वविद्यालय की खुदाई का एक दृश्य, नालन्दा (पटना)

यहाँ बहुत से टील्हे हैं जो पुराने बौद्धमठ मालूम पड़ते हैं। विद्वानों का कहना है कि यहाँ बहुत बड़ा बौद्ध विहार रहा होगा।

तेलरहा—यह गाँव बिहार से बहुत दूर दक्षिण है। कहते हैं कि यह वही तैलधक स्थान है जहाँ एक बहुत बड़ा बौद्ध विहार था जिसमें एक हजार विद्यार्थी पढ़ते थे। सातवीं सदी में चीनी यात्री ग्वन् च्वाङ् यहाँ आया था। जमीन खोदने पर अब भी बौद्धकाल की बहुत सी चीजें यहाँ मिलती हैं।

नालन्दा—यह स्थान नालन्दा स्टेशन से तीन मील पर बड़-गाँव नामक गाँव के पास है। आज से हजार वर्ष पहले यहाँ बहुत बड़ा बौद्ध विश्वविद्यालय था जो दुनिया भर में नामी था। यहाँ भारतवर्ष, चीन, जापान, तिब्बत, लंका आदि देशों के हजारों विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री ग्वन् च्वाङ् ने भी यहाँ कई वर्षों तक पढ़ा था। जमीन खोदने पर यहाँ बहुत से पुराने मकान के चिन्ह मिले हैं। यहाँ सूर्यकुंड के पास कार्तिक में छठ पर्व के अवसर पर मेला लगा करता है।

पावापुरी—जैनधर्म को फैलानेवाले महावीर स्वामी की मृत्यु इसी स्थान पर हुई थी। यहाँ दो मंदिर हैं—एक जल मंदिर और दूसरा थल मंदिर। कहते हैं कि जहाँ महावीर स्वामी मरे थे वहाँ थल मंदिर और जहाँ वे जलाये गये थे वहाँ जलमंदिर है। यह मंदिर एक तालाब के अन्दर है। दोनों मंदिरों के बीच एक टील्हे पर छोटे से मंदिर में महावीर स्वामी के पैर के चिह्न हैं। पावापुरी का पुराना नाम अपापापुरी बताया जाता है।

बड़गाँव—दे०—"नालन्दा"।

राजगिर—राजगिर या राजगृह बिहार से १२३ मील दक्षिण पच्छिम है। बी० बी० लाइट रेलवे लाइन यहाँ समाप्त होती है। यह मगध राज्य की प्राचीन राजधानी है। रामायण काल के पहले

राजा वसु ने यहाँ अपनी राजधानी बनायी थी। महाभारत काल में यहाँ जरासंध राज्य करता था। उन दिनों इस स्थान का नाम गिरिव्रज था। जरासंध के किले को पत्थर की दीवाल अब भी देखने में आती है। इसे लोग जरासंध की बाँध कहते हैं। यहाँ के एक स्थान को लोग जरासंध का अखारा बताते हैं, जहाँ जरासंध और भीम में गदायुद्ध हुआ था। ऐतिहासिक युग में बिम्बिसार यहाँ का राजा हुआ। उसी समय इसका नाम राजगृह पड़ा था। अजातशत्रु ने पहाड़ी से कुछ दूर उत्तर हटकर अपनी नयी राजधानी बसायी थी। इसे नया राजगृह कहते हैं। वर्तमान राजगिर गाँव इसी स्थान पर है। बुद्धदेव ने पहले पहल यहीं दो ब्राह्मणों से शिक्षा पायी थी। ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी वे बराबर यहाँ आया करते थे। सम्राट अशोक ने संयास ग्रहण करके जीवन के अपने अन्तिम दिन यहीं बिताये। समय समय पर यहाँ बहुत से स्तूप और विहार बने जिनके चिह्न अब भी मौजूद हैं। राजगृह जैनियों का भी तीर्थ-स्थान है और यहाँ उनके कितने ही मंदिर हैं। स्वास्थ्य के लिये यह बहुत अच्छा स्थान है।

राजगिर पहाड़ की चोटियों में वैभव गिरि, विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि, सोनगिरि, शैलगिरि आदि प्रसिद्ध हैं। शैलगिरि को ही कुछ लोग गृद्धकूट बताते हैं। यहाँ की गुफाओं में सोन भंडार, सत्तपानी गुफा, देवदत्त गुफा, राजपिंड गुफा आदि हैं। सत्तपानी गुफा में ही पहली बौद्ध महासभा हुई थी। यहाँ के यष्टिवन, वेणुवन, तपोवन और बुद्धवन आदि स्थान मशहूर हैं। हिन्दू राजगृह को तीर्थस्थान मानते हैं। यहाँ ठंढे और गरम जल के बहुत से झरने हैं। इन्हें लोग कुंड कहते हैं। कुंडों के आस-पास मंदिर बने हुए हैं। इन कुंडों में सरस्वती कुंड, वैतरणी कुंड, शालिग्राम कुंड, ब्रह्म कुंड, काश्यप

कुंड, व्यास कुंड, मार्कण्डेय कुंड, गंगा-यमुना कुंड, सप्तऋषि कुंड, सीता कुंड, राम कुंड, गणेश कुंड, सूर्य कुंड, चन्द्र कुंड, अनन्त ऋषि कुंड, शृंगी ऋषि कुंड आदि हैं। शृंगी ऋषि कुंड मुसलमानों के अधिकार में चला गया है और वे इसे मकदुम कुंड कहते हैं। मलमास में यहाँ एक मास तक बहुत बड़ा मेला लगता है।

सिलाव—यह स्थान बिहार से ५ कोश दक्षिण है। यहाँ का चूरा और खाजा प्रसिद्ध है। सिलाव थाने का सदर आफिस है।

स्थावाँ—यह थाने का सदर आफिस है।

हिलसा—यहाँ थाना, डाक-बंगला और एक बड़ा सा बाजार है। यहाँ साल में एक बार मेला लगता है। इस स्थान पर एक पुरानी दरगाह है जो बहुत मशहूर है।

गया जिला

गया सब-डिविजन

गया—जिले का मुख्य शहर गया फल्गू नदी के किनारे २४°४९' उत्तरीय अक्षांश और ८५°१' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ जिले का सदर आफिस है। सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार गया-शहर की जन-संख्या ८८,००५ है, जिसमें ६६,४६२ हिन्दू, २०,५९६ मुसलमान, ५०८ ईसाई, ३७५ जैन, ४४ सिक्ख, १२ आदिम जाति तथा ८ अन्य जाति के लोग हैं।

शहर के उत्तर में मुरली और रामशिला पहाड़ी, दक्षिण में ब्रह्मयोनि पहाड़ी, पूरब में फल्गू नदी तथा पश्चिम में खुला मैदान और कतारी पहाड़ी हैं। शहर दो भागों में बँटा है—पुराना शहर और नया शहर। नया शहर साहबगंज नाम से प्रसिद्ध है। पुराना शहर हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। भारत के भिन्न-भिन्न भागों से हिन्दू लोग यहाँ पितरों को पिंड देने के लिये आते हैं। साहबगंज में अंगरेजों का निवास-स्थान और सरकारी कचहरियाँ हैं। व्यापार का केन्द्र भी यही स्थान है, गया के मंदिरों में विष्णुपद का मंदिर सबसे प्रधान है। इसे अठारहवीं सदी में इन्दौर की महारानी अहल्याबाई ने बनवाया था। इस मंदिर में विष्णु के पद का चिन्ह है। दूसरा मुख्य मंदिर गदाधर नामधारी विष्णु भगवान का है। गयासुरी देवी का मंदिर भी प्रसिद्ध है, जहाँ महिष-मर्दिनी अष्टभुजी दुर्गा की मूर्त्ति है। इनके अलावे सूर्य्यदेव का मंदिर, प्रपितामहेश्वर का मंदिर और कृष्ण-

द्वारका के मन्दिर भी मुख्य हैं। कुछ और भी छोटे-छोटे मंदिर हैं, जिनमें पाल-राजाओं (८००–१२०० ई०) के समय की मूर्त्तियाँ हैं। एक मंदिर में वृक्ष से फूल या फल तोड़ते हुए हाथी की एक मूर्त्ति है जो लगभग दो हजार वर्ष की समझी जाती है।

गया के आसपास की पहाड़ियों को भी हिन्दू लोग पवित्र दृष्टि से देखते हैं। उन पर कई मंदिर बने हुए हैं। इन पहाड़ियों में गया के दक्षिण का ब्रह्मयोनि पहाड़ सबसे ऊँचा है। इसकी ऊँचाई ४५० फीट है। पहाड़ के ऊपर एक गुफा है जिसे लोग ब्रह्मयोनि कहते हैं। सनातनी हिन्दुओं का कहना है कि जो इसके अन्दर प्रवेश करता है वह पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है। पहाड़ी पर ब्रह्म की एक मूर्त्ति भी है जो १६३३ ई० की समझी जाती है। शहर से उत्तर एक रामशिला पहाड़ी है जहाँ एक मंदिर में शिवलिंग है, जिसे लोग पातालेश्वर महादेव कहते हैं। मंदिर के नीचे का भाग १०१४ ई० का बना है।

वैदिक काल में सर्वप्रथम यहाँ गय नामक सुप्रसिद्ध राजा ने अपना राज्य स्थापित किया था। उसीके नाम पर इस शहर का नाम गया पड़ा। पुराणों में यहाँ गयासुर के होने की कहानी लिखी है। आश्विन मास के प्रथम पक्ष में, जिसे पितृपक्ष कहते हैं, गया में पितरों को पिंड देनेवाले तीर्थयात्री बहुत बड़ी संख्या में आते हैं।

गया में यात्री-अस्पताल के सामने १६ फीट ऊँचा एक स्तंभ है, जो यहाँ १७८९ ई० में बकरौर नामक स्थान से लाया गया था। यह वहाँ अशोक-स्तम्भ का ऊपरी हिस्सा था।

गया में दो नामी पुस्तकालय हैं—एक तो हैलीडे लाइब्रेरी और दूसरा मन्नुलाल लाईब्रेरी। हैलीडे लाइब्रेरी सन् १८५७ में बंगाल के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के नाम पर उनके यहाँ आने की

यादगारी में कायम हुई थी। मन्नुलाल लाईब्रेरी हिन्दी की अच्छी लाईब्रेरो है जिसकी स्थापना १९११ ई० में हुई थी।

अतरी—यहाँ थाना का सदर आफिस है।

इमामगंज—यहाँ थाना का सदर आफिस है।

कुरकीहार—वजीरगंज स्टेशन से यह तीन मील की दूरी पर है। पुराने समय में यह एक प्रसिद्ध स्थान था। यहाँ पुराना खँडहर और तरह-तरह की मूर्त्तियाँ पायी जाती हैं। इसके पास पुनावाँ नामक गाँव में भी बौद्धकालीन भग्नावशेष पाये जाते हैं।

कौंच—यह स्थान टेकारी से ४ मील की दूरी पर है। यहाँ कोंचेश्वर महादेव का मंदिर है जो सातवीं सदी का बना समझा जाता है। मंदिर में विष्णु के दशावतारों की मूर्त्तियाँ हैं। गाँव में और भी कई पुराने मंदिर हैं।

कौवाडोल पहाड़ी—यह जिले के उत्तरी हिस्से में बेला रेलवे स्टेशन से ६ मील और बराबर पहाड़ी से एक मील की दूरी पर है। इसकी ऊँचाई ५०० फीट है। यहाँ शीलभद्र का प्रसिद्ध बौद्धमठ था। शीलभद्र बंगाल के एक राजघराने का व्यक्ति था। सातवीं सदी में व्वन् च्वाङ् (ह्वेनसन) इस स्थान को देखने आया था। मठ का भग्नावशेष अब भी मौजूद है और यहाँ बुद्ध की ८ फीट की एक मूर्त्ति है। इसके अलावे यहाँ कई हिन्दू मूर्त्तियाँ भी हैं।

खिजरसराय—यहाँ थाना का सदर आफिस है।

गुरपा पहाड़ी—यह गुरपा रेलवे स्टेशन से एक मील की दूरी पर है। इसकी तीन चोटियाँ हैं। सबसे ऊँची चोटी १,००० फीट ऊँची है। इसका पुराना नाम गुरुपाद गिरि था। कुछ लोग कहते हैं कि यही कुक्कुटपाद गिरि है जहाँ बुद्ध के शिष्य काश्यप ने समाधि ग्रहण किया था।
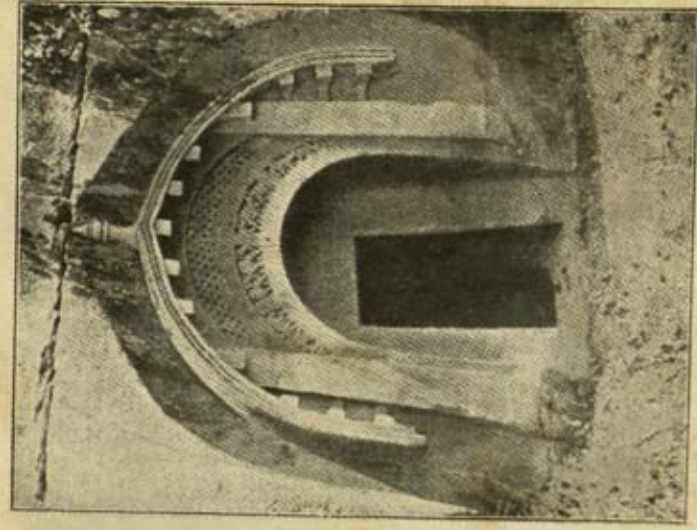
लोमश ऋषि का गुफा, बराबर पहाड़ी (गया)
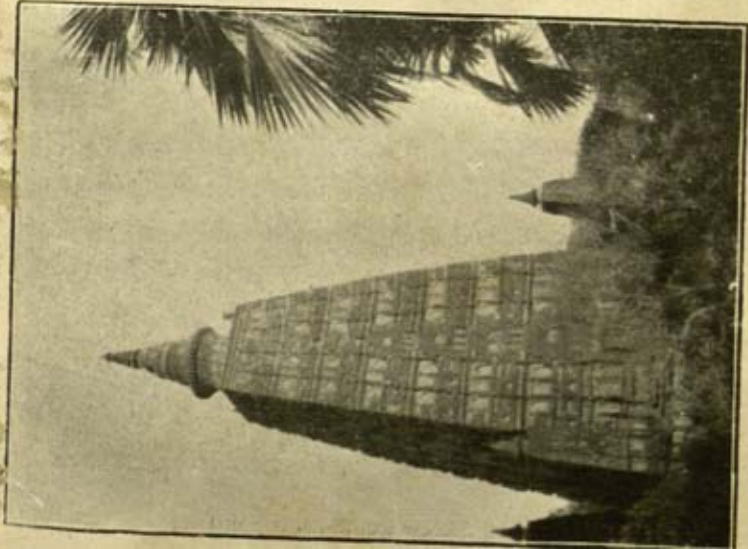
गया में पिंडदान का एक दृश्य
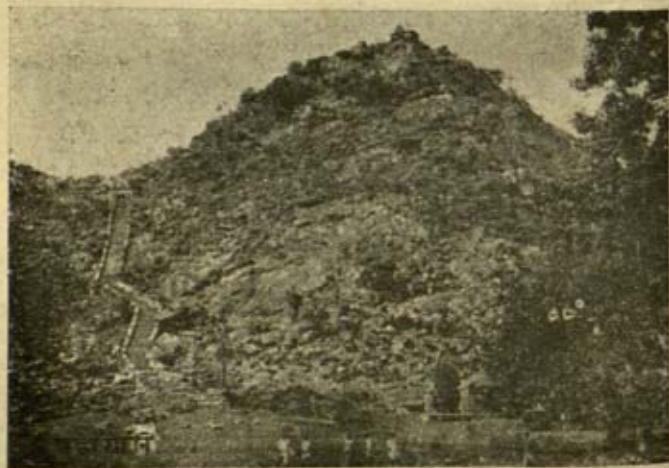
गयाशिर—ब्रह्मयोनि पर्वत, गया

गुरुआ—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

जेठियन—यह एक गाँव है। यह वही स्थान है जो बौद्ध साहित्य में यष्टिवन नाम से प्रसिद्ध है। चीनी यात्री फाहियान यहाँ आया था। उसने लिखा है कि यहाँ बाँस का जंगल था। भगवान बुद्ध यहाँ सात दिनों तक रह कर उपदेश देते रहे। अशोक ने यहाँ पर एक स्तूप बनवाया था। यहाँ से कुछ दूर दक्षिण-पूरब की ओर भी एक स्तूप था जहाँ पहले बुद्धदेव ने बरसात में तीन मास तक रहकर उपदेश दिया था। राजा विम्बिसार यहाँ बुद्ध भगवान के दर्शन के लिये आया था। इसके आस-पास गर्म जल के कई झरने हैं। भलुआही पहाड़ी के पास व्यास नामक बौद्ध संन्यासी का स्थान बताया जाता है। चण्डू पहाड़ी पर राजपिंड नाम की एक बड़ी गुफा है। उसे लोग असुरों का राजभवन बताते हैं।

टेकारी—गया से १६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर यह एक छोटा शहर है जहाँ म्युनिसिपैलिटी का भी प्रबन्ध है। यहाँ टेकारी के राजा का किला है, जिसे इस राजवंश के संस्थापक राजा सुन्दरसिंह ने १८ वीं सदी में बनवाया था। टेकारी-राज के कारण ही इस स्थान की प्रसिद्धि है। यह राजघराना प्रतिष्ठित है, इस घराने के लोग भूमिहार ब्राह्मण हैं। टेकारी में थाने का सदर आफिस है।

डुमरिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

नागार्जुनी पहाड़ी—दे० "बराबर पहाड़ियाँ"।

परैया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

प्राग्बोधि पहाड़ी—बोधगया के सामने फल्गू नदी के पूर्वी किनारे पर मोरा झील से लेकर गंजास गाँव तक एक पर्वत-माला है जिसे लोग मोरा या गंजास पहाड़ी के नाम से जानते हैं,

पर इसके बीच का हिस्सा डोंगरा पहाड़ी कहलाता है। कहते हैं कि यह पर्वतमाला वह प्राग्बोधि पहाड़ी है जहाँ बुद्धत्व प्राप्त करने के ठीक पहले बुद्ध भगवान् गये थे। बौद्ध ग्रन्थों में इस सम्बन्ध में एक कहानी है। लिखा है कि जब भगवान बुद्ध यहाँ ठहरे हुए थे तो एक दिन अचानक पहाड़ी हिल उठी और अकाश-वाणी हुई कि हे गौतम यह स्थान तुम्हारे ज्ञान प्राप्त करने के उपयुक्त नहीं है; यहाँ से थोड़ी दूरी पर जाओ, वहाँ तुम्हें ज्ञान प्राप्त होगा। यहाँ अशोक के बनवाये सात स्तूपों के चिह्न देखने में आते हैं। एक गुफा में अष्टभुजी दुर्गा की मूर्त्ति है, जिस पर ९ वीं या १०वीं शताब्दी का शिलालेख है। गुफा के पास कुछ पुराने मकानों के चिह्न हैं।

प्रेतशिला—गया से ५ मील उत्तर-पश्चिम की ओर यह एक पहाड़ी है जिसकी ऊँचाई ५४० फीट है। यहाँ यमराज का एक मंदिर है जहाँ हिन्दू लोग पिंड-दान करते हैं। मंदिर के सामने एक कुंड है जो रामकुंड कहलाता है। पहाड़ी के नीचे भी तीन कुंड हैं।

फतहपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बकरौर—बोधगया से आधे मील की दूरी पर नीलांजन और मोहान नदी के बीच यह एक गाँव है। गाँव के दक्षिण एक बड़े स्तूप का चिह्न है। यह अब भी २५ फीट की ऊँचाई और १५० फीट के घेरावे में रह गया है। इससे थोड़ी ही दूर पर एक स्तम्भ का निचला हिस्सा है। इसीका ऊपरी हिस्सा १७८९ ई० में गया ले जाया गया था। कथा है कि बुद्ध भगवान किसी जन्म में हाथी का बच्चा हुए थे। वह बच्चा इसी स्थान पर जंगल में घूमा करता था और अपनी अंधी मा के लिये खाना बटोरता था। इसीकी यादगारी में अशोक ने यहाँ स्तम्भ और स्तूप

बनवाये। यहाँ एक तालाब है जो मातंगवापी कहलाता है। इसके किनारे मातंगेश्वर महादेव का मंदिर है। मातंग का अर्थ हाथी है। मालूम पड़ता है उपर्य्युक्त कथा के सम्बन्ध से ही मातंगवापी और मातंगेश्वर का निर्माण हुआ। यहाँ एक दूसरा हिन्दू मंदिर भी है जहाँ एक कुंड है। यहाँ हर साल मेला लगता है।

बराबर पहाड़ियाँ—सदर सब-डिविजन को उत्तरी सीमा पर पहाड़ियों का एक समूह है जो बराबर नाम से प्रसिद्ध है। इसकी सिद्धेश्वर चोटी पर सिद्धेश्वरनाथ महादेव का मंदिर है। पास के एक शिलालेख से यहाँ का शिवलिंग छठी-सातवीं सदी का बना मालूम पड़ता है। पहाड़ पर दो ऐसे कुंड हैं जिनका जल झरने के रूप में नीचे बहकर आता है, जहाँ यह पाताल-गंगा कहलाता है। यहाँ भादो के अनन्तचतुर्दशी के दिन मेला लगता है। बराबर पहाड़ियों में अशोक के बनवाये चार सुन्दर गुफाएँ हैं जो आज इन नामों से प्रसिद्ध हैं—कर्ण चौपर गुफा, सुदामा गुफा, लोमस ऋषि गुफा और विश्वझोपड़ी। विश्वझोपड़ी को लोग विश्वामित्र की गुफा बताते हैं। इन गुफाओं के पास अशोक के शिला-लेख भी हैं।

सिद्धेश्वरनाथ चोटी से आधा मील पूरब नागार्जुनी पहा-ड़ियाँ हैं। कहते हैं कि यहाँ प्रसिद्ध बौद्ध संन्यासी नागार्जुन रहते थे। यहाँ तीन गुफाएँ हैं। सबसे बड़ा गुफा गोपीगुफा कहलाता है। ये गुफा अशोक के पोते दशरथ के बनाये बताये जाते हैं। इन गुफाओं के पास भी शिलालेख हैं। इन पहाड़ियों में सब लगाकर सात गुफा होने के कारण लोग इन्हें सतघरवा भी कहते हैं। यहाँ पहले बौद्ध-विहार का होना भी बताया जाता है।

कुछ पुराने भवनों के भग्नावशेष मिलते हैं। जहाँ-तहाँ मुसलमानों की कब्रें भी देखने में आती हैं।

बाराचट्टी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बिशुनपुर टँरवा—दे० "हसरा पहाड़ी"।

बेलागंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बोधगया—गया से थोड़ी ही दूर पर बौद्धों का यह सबसे पवित्र स्थान है। संसार के भिन्न-भिन्न देशों के बौद्ध यहाँ तीर्थ के लिये आते हैं। यहीं एक पीपल के पेड़ के नीचे बुद्धदेव ने बुद्धत्व प्राप्त किया था। अशोक ने एक लाख स्वर्णमुद्रा खर्च कर यहाँ एक मठ बनवाया। अशोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा ने यहाँ से बोधिवृक्ष की एक शाखा लंका में लगायी थी जो वहाँ अब भी कायम है। अशोक के बनवाये मठ के टूट जाने पर सीथियन राजाओं ने उसी स्थान पर दूसरा मठ बनवाया। वही मंदिर टूटते-फूटते और मरम्मत होते वर्तमान रूप में कायम है। ३३० ई० में लंका के राजा मेघवर्ण ने इस मठ के पास यात्रियों के रहने के लिये बहुत बड़ा भवन बनवाया था। ६०० ई० में बौद्धधर्म विरोधी बंगाल के राजा शशांक ने सबको तहस-नहस कर दिया और बोधिवृक्ष को भी जड़ से उखाड़ फेंका। हर्षवर्द्धन ने फिर से बोधिवृक्ष लगाया और मठ भी बनवाये। चीनी यात्री फाहियान और य्वनच्वाङ् (ह्वेनसन) यहाँ आया था। नवीं-दसवीं शताब्दी में पाल राजाओं के समय यहाँ की दशा फिर सुधरी। ग्यारहवीं सदी में बर्मा के राजा ने यहाँ के मंदिर की मरम्मत कराया। बारहवीं सदी में मुसलमानों के आने पर यहाँ की दशा फिर खराब हुई। १८८४ ई० में अंगरेज सरकार ने २ लाख रुपया खर्च करके मंदिर की मरम्मत करायी। १८७६ ई० में बोधिवृक्ष आँधी से गिर गया

था। जड़ से फिर दूसरा वृक्ष खड़ा हुआ जो इस समय कायम है। इस समय मंदिर हिन्दू महन्त के कब्जे में है। हिन्दू लोग बुद्ध को विष्णु के दशावतारों में गिनने लगे हैं। यहाँ की बुद्ध की मूर्त्ति को चंदन पहना दिया गया है और हिन्दू लोग भी इसे पूजते हैं। मंदिर के पास अशोक के स्तम्भ तथा बहुत से स्तूप के चिन्ह और मूर्त्तियाँ मौजूद हैं। यहाँ खोदाई करने पर और भी कई चीजें निकली हैं। बोधगया में थाने का सदर आफिस है।

ब्रह्मयोनि—दे० "गया"।

माँद पहाड़ियाँ—सदर सब-डिविजन के दक्षिण-पश्चिम की ओर ग्रैंडट्रङ्क रोड पर पहाड़ियों का एक समूह है। खँडहरों से पता चलता है कि इसके पास पहले कोई बड़ा शहर था। चट्टानों में बौद्धों और शैवों के मठ के भग्नावशेष हैं। दो मील पूरब बुरहा नामक स्थान भी पुराना शहर मालूम पड़ता है। यहाँ गर्म जल के झरने और बौद्ध-विहार के चिन्ह हैं। इसी तरह गुनेरी नामक स्थान में भी बौद्ध-विहार का भग्नावशेष है। यहाँ बुद्ध की एक बड़ी मूर्त्ति और कई छोटी-छोटी मूर्त्तियाँ हैं। गुनेरी का पुराना नाम श्री गुणचरित था।

राम शिला—दे० "गया"।

वजीरगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है। यहाँ पंच मंदिर नाम का शिवालय है, जहाँ शिवरात्रि में मेला लगता है।

शेरघाटी—मोरहर नदी और ग्रैंडट्रङ्क रोड के किनारे यह पहले एक शहर था और रामगढ़ जिले में पड़ता था। १८७१ ई० तक यहाँ सब-डिविजन का सदर दफ्तर रहा। यह सब-डिविजन तोड़ कर जहानाबाद सब-डिविजन कायम किया गया। यहाँ पहले बहुत से अंगरेजों का भी निवास स्थान था। सब-डिविजन टूट जाने पर शहर उजाड़ पड़ गया है। यहाँ एक पुराना किला

है जो कोल राजाओं का समझा जाता है। शेरघाटी अब थाने का सदर आफिस रह गया है।

हसरा पहाड़ी—यह पहाड़ी वजीरगंज रेलवे स्टेशन से ४ मील दक्षिण-पच्छिम की ओर है। कुछ लोग कहते हैं कि यह पहाड़ी वह कुकुट पादगिरि है जहाँ बुद्ध के प्रधान शिष्य कश्यप की समाधि बतायी जाती है। बौद्धों की पहली महासभा कश्यप ने ही राजगिर में बुलायी थी। इस पहाड़ी के पास बौद्धमठों के बहुत से भग्नावशेष हैं। यहाँ एक स्तूप है जो अब भी २५ फीट ऊँचा है। यहाँ बहुत सी मूर्त्तियाँ भी हैं। एक मूर्त्ति पर दसवीं सदी का लेख है। हसरा कोल से दक्षिण हजार फीट ऊँची चोटी पर एक स्तूप का चिन्ह है जिसे चीनी यात्री ह्वेनत्सांग ने देखा था।

हसरा पहाड़ी से डेढ़ मील पच्छिम विसुनपुर टँरवा नामक गाँव है जहाँ भैरव स्थान नामक मंदिर में दो सेवकों सहित बुद्ध की पाँच फीट की एक मूर्ति है। यह मूर्त्ति हसरा पहाड़ी में मिली थी। इस पर के लेख से मालूम पड़ता है कि यह नवीं-दसवीं सदी की बनायी हुई है।

औरंगाबाद सब-डिविजन

औरंगाबाद—यह जम्हौर रेलवे-स्टेशन से ९ मील दूर ग्रैंड-ट्रंक-रोड के किनारे २४°४५′ उत्तरीय अक्षांश और ८४°२३′ पूर्वीय देशान्तर पर एक छोटा शहर है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या ७,४२८ है। यहाँ सब-डिविजन का सदर दफ्तर है।

ओबरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

उमगा—इस गाँव का दूसरा नाम मूंगा भी है। यहाँ पहले

एक पहाड़ी किला था। देव के राजा के पूर्वज यहाँ १५० वर्षों तक राज्य करते रहे। इस समय इस स्थान की प्रसिद्धि का कारण है यहाँ की पहाड़ी पर का पत्थर का मंदिर, जो ६० फीट ऊँचा है। एक शिलालेख से यह मंदिर पन्द्रहवीं सदी का जान पड़ता है। मंदिर के दक्षिण एक तालाब है जिसके पास पुराने किले का चिन्ह अब भी मौजूद है। यहाँ और मंदिरों के भी चिन्ह हैं।

कुटुम्बा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

गोह—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

दाऊदनगर—यह एक छोटा शहर है जिसे औरंगजेब के वक्त का विहार के सूबेदार दाऊद खाँ ने बसाया था। यह व्यापार का एक केन्द्र था। अब भी यहाँ कपड़ा, कम्बल, दरी वगैरह बनते हैं। यहाँ थाना, अस्पताल, आनरेरी मजिस्ट्रेट की कचहरी तथा सिंचाई विभाग के असिस्टेन्ट इंजिनियर और सर्कल अफसर के दफ्तर हैं। यहाँ दाऊद खाँ की बनायी हुई एक बड़ी सराय है। शहर में म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है।

देव—इस गाँव में पन्द्रहवीं सदी का बना पत्थर का एक सूर्य मंदिर है जिसका गुम्बज करीब १०० फीट ऊँचा है। यहाँ कार्तिक और चैत में मेला लगता है।

यहाँ एक बहुत पुराने राजपूत घराने के राजा रहते हैं जो अपना सम्बन्ध उदयपुर के राणा से बतलाते हैं। कहते हैं कि पन्द्रहवीं सदी में राणा के भाई राय भानसिंह जगन्नाथ जाने के वक्त इस ओर आये थे। उमगा की निस्पुत्र विधवा रानी ने इन्हें पुत्र मानकर रख लिया और अपना राज्य इन्हें सौंपा। इनके वंशज पीछे देव चले आये और यहीं रहने लगे।

नवीनगर—पुनपुन नदी के किनारे यह एक गाँव है जहाँ पीतल के बर्तन और कम्बल बनते हैं। पास में ही चन्द्रगढ़ नाम

का गाँव है जहाँ सतरहवीं सदी का बना एक पुराना किला है। यहाँ थाने का सदर आफिस है।

पाचर पहाड़ी—औरंगाबाद सब-डिविजन की पूर्वी सीमा पर यह एक पहाड़ी है जहाँ की एक गुफा में पार्श्वनाथ की मूर्त्ति तथा अन्य जैन मूर्त्तियाँ हैं। पास के गाँवों में पुराने खँडहर पाये जाते हैं।

वारुण—यहाँ सोन नदी पर ई० आई० रेलवे का पुल है जो हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा और दुनिया का दूसरा बड़ा पुल समझा जाता है। इसकी लम्बाई १०,०५२ फीट है और इसके बनाने में २४ लाख रुपया खर्च हुआ था। दुनिया में इससे बड़ा पुल इंगलैण्ड की टे नदी का पुल है जो १०,५२७ फीट लम्बा है। ग्रैंड-ट्रंक-रोड वारुण के पास ही सोन को पार करता है। यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम है सोन-ईस्ट-बैंक। वारुण में थाने का सदर आफिस है।

मदनपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

रफीगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

जहाँनाबाद सब-डिविजन

जहाँनाबाद—यह एक छोटा शहर है जहाँ सब-डिविजन का सदर दफ्तर है। यह मोरहर और यमुना नदी के किनारे २५°१३′ उत्तरीय अक्षांश और ८५°०′ पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ की जन-संख्या सन् १९३१ की गणना के अनुसार ८,७६४ है। शहर दो भागों में बँटा है। लोगों के रहने के घर, अस्पताल और पोस्ट-आफिस मोरहर नदी के उत्तर तथा सरकारी कचहरियाँ, डाक-बंगला और एस० डी० ओ० की कोठी नदी के दक्षिण हैं। इस भाग के पास एक छोटा रेलवे स्टेशन हरकी है

और जहानाबाद स्टेशन कुछ दूर उत्तर है। पहले यहाँ शोरा नमक और कपड़े का बड़ा कारबार होता था।

अरवल—यह गाँव सोन के किनारे है। किसी समय यहाँ कागज बहुतायत से बनता था। इस समय यहाँ थाना, अस्पताल, डाक और तारघर, डाक-बंगला तथा सिंचाई विभाग का एक आफिस है। बहुत दिनों से यहाँ एक स्पेनिश परिवार रहता है।

कुरथा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

घेजन—मकदुमपुर रेलवे-स्टेशन से ५ मील की दूरी पर मोरहर नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ बुद्ध और अवलोकितेश्वर की बड़ी मूर्तियाँ हैं। अवलोकितेश्वर की मूर्त्ति पर एक लेख है जिससे मालूम होता है कि इसे नालन्दा से आये हुए स्थविर रत्नसिंह ने अपने दो शिष्यों को प्रदान किया था। एक आधुनिक मंदिर में तारा की मूर्त्ति है जिसे हिन्दू लोग पूजते हैं। यहाँ और भी कितनी पुरानी मूर्त्तियाँ पायी जाती हैं।

घोसी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

धरावत—बराबर पहाड़ी से ५ मील उत्तर-पच्छिम यह एक गाँव है। कुछ लोग कहते हैं कि यहीं पहले गुणमति बौद्ध-विहार था। दक्षिण भारत के एक बौद्ध-संन्यासी गुणमति ने यहाँ के माधव नाम के एक ब्राह्मण पंडित को हराया था। उसी की यादगारी में यहाँ बौद्ध-विहार बना, जिसे सातवीं सदी में चीनी यात्री य्वन-च्वाङ् ने भी देखा था। यहाँ के पुराने शहर, स्तूप और मठ आदि के भग्नावशेष खँडहर के रूप में मौजूद हैं। जहाँ-तहाँ बहुत सी मूर्त्तियाँ भी पायी जाती हैं। यहाँ एक बड़ा पोखर है जिसे चन्द्रपोखर कहते हैं। कहा जाता है कि इसे राजा चन्द्रसेन ने खोदवाया था।

मकदुमपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

लाठ—जहानाबाद सब-डिविजन की दक्षिण-पूरब सीमा पर यह एक गाँव है। यहाँ ५३ फीट लम्बा और ३ फीट मोटा एक पत्थर का बहुत पुराना स्तम्भ पड़ा हुआ है। कहते हैं कि घरावत के चन्द्रपोखर के लिये यह लाठ लाया गया था। यहाँ यह क्यों पड़ा रहा इसके सम्बन्ध में तरह-तरह की कहानियाँ प्रसिद्ध हैं।

नवादा सब-डिविजन

नवादा—यह एक छोटा शहर है जो २४°५३' उत्तरीय अक्षांश और ८५°३३' पूर्वीय देशान्तर पर खुरी नदी के दोनों किनारे पर बसा है। यहाँ नवादा सब-डिविजन का सदर दफ्तर है। नदी के बायें किनारे पर पुरानी आबादी है और दाहिने किनारे पर नयी आबादी, जहाँ सरकारी कचहरियाँ, छोटा जेल, अस्पताल और स्कूल हैं। १९३१ ई० की गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या ७,४८५ है। १८५७ के सिपाही विद्रोह के समय यहाँ बड़ा हलचल मचा था और आन्दोलनकारियों ने सरकारी दफ्तरों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। नवादा से दो मील उत्तर एक तालाब के अन्दर जैनमंदिर है।

अफसाँर—नवादा सब-डिविजन के बिल्कुल उत्तर में यह एक गाँव है जहाँ विष्णु के वराह-अवतार की एक बड़ी मूर्त्ति है। यह मूर्त्ति एक ऊँचे टील्हे पर है जो विष्णु के मंदिर का भग्नावशेष है। यहाँ के एक शिलालेख से मालूम पड़ता है कि यह मंदिर मगध के गुप्तवंश के राजा आदित्यसेन ने ६०० ई० में बनवाया था। मूर्त्ति भी लगभग उसी काल की मालूम पड़ती है। टील्हे के आसपास बाद की बनी हुई और भी कई मूर्त्तियाँ हैं।

ककोलत—नवादा से १५ मील दक्षिण-पूरब की ओर यहाँ एक जलप्रपात है।

कौआकोल—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

गोविन्दपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

दरियापुर पार्वती—जिले के उत्तरीय सीमा पर यह एक गाँव है। कहते हैं कि यहीं कपोतिका बौद्ध-विहार था जिसे सातवीं सदी में चीनी यात्री य्वन्-च्वाङ् ने देखा था। गाँव के पास की पहाड़ी को लोग पार्वती या गढ़ पारावत कहते हैं। इसके आस-पास बहुत से खँड़हर और टील्हे हैं जो विहार के भग्नावशेष मालूम पड़ते हैं। बौद्धग्रन्थों में लिखा है कि एक बार जब भगवान बुद्ध यहाँ ठहरे हुए थे तो एक व्याधा दिन भर कोई पक्षी न पकड़ सकने के कारण भूखा रह गया। वह भगवान के पास आकर उलाहना देने लगा कि आपके ही कारण आज के दिन मुझे भोजन नहीं मिला। भगवान ने कहा कि आग जलाओ, तुम्हें भोजन मिल जायगा। उसने आग जलायी और उसी समय एक मरी हुई कपोती आकाश से आ गिरी जिसे खाकर वह तृप्त हुआ। कहते हैं कि इसी कथा की यादगारी में यहाँ कपोतिका-विहार बनाया गया था।

पकरी बरवाँ—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

रजौली—नवादा सब-डिविजन के दक्षिण में धनारजी नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ पहले म्युनिसिपैलिटी भी थी। यहाँ से आठ मील उत्तर अकबरपुर में नानक पंथियों का मठ है। रजौली में थाना आफिस है। कहते हैं कि रजौली के दक्षिण की पहाड़ियों में सप्तऋषियों का निवासस्थान था। लोमस, दुर्वासा, शृंगि आदि के नाम पर चोटियों के नाम हैं। यहाँ साल में एक बार मेला लगता है और हिन्दू तीर्थयात्री इन चौटियों के दर्शन करते हैं। प्रसिद्ध ग्राम्य गीत के नायक लोरिक का जन्मस्थान यहीं समझा जाता है। लोरिक का विवाह पास के बौरी या

अगौरी गाँव की एक कन्या से हुआ बताया जाता है। यहा एक गहरा पत्थर है। कहते हैं कि यह इसमें भांग घोटा करता था। रजौली के आसपास अबरक की कई खानें है। इनमें सिंगर और दुबौर की खान मुख्य हैं। ऋष्यश्रृंग के नाम पर सिंगर और दुर्वासा के नाम पर दुबौर नाम का पड़ना बताया जाता है।

वारसलीगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सीतामढ़ी—हसुआ से ६ मील दक्षिण-पच्छिम यह एक चट्टान है, जहाँ १६ फीट लम्बा और ११ फीट चौड़ा एक सुन्दर गुफा है, जिसमें बहुत सी मूर्त्तियाँ खोदी हुई हैं। कहते हैं कि वनवास के समय यहीं सीता ने लव और कुश को जन्म दिया था और यहीं पर इन दोनों भाइयों ने रामचन्द्र की सेना से युद्ध किया था। इस स्थान से एक मील उत्तर-पूरब की ओर बारट नामक गाँव है जो वाल्मीकि ऋषि का स्थान समझा जाता है। यहाँ ऊँचे टील्हे पर एक पुराना किला है। पास ही में रसूलपुर गाँव में शेख मुहम्मद की दरगाह है, जो बहुत पुरानी समझी जाती है। यह दरगाह एक हिन्दू मंदिर के स्थान पर बनी मालूम पड़ती है।

हसुआ—गया-नवादा रोड पर तिलैया नदी के किनारे यह एक छोटा शहर है। १९३१ ई० की गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या ७,१३१ है। यहाँ मिट्टी के बर्तन बहुत सुन्दर बनते हैं। यहाँ बहुत से धनी जमींदार रहते हैं। साउथ-बिहार-रेलवे का यहाँ तिलैया नाम का स्टेशन है। यह स्थान व्यापार का केन्द्र हो गया है। अठारहवीं सदी में यहाँ नामदार खाँ और कामगार खाँ नाम के दो भाई हुए जो नामी योद्धा थे। उनके पास बहुत बड़ी जागीर थी। हसुआ में थाने का सदर आफिस है।

आरा जिला

आरा सब-डिविजन

आरा—जिले का यह मुख्य शहर २५°३४′ उत्तरीय अक्षांश और ८४°४०′ पूर्वीय देशान्तर पर है। यह जिले का सदर आफिस है। गंगा से यह १४ मील दक्षिण और सोन से ८ मील पश्चिम है। इस शहर की जन-संख्या ४८,९२२ है जिसमें ३५,७९३ हिन्दू, १२,४३२ मुसलमान, ४९२ जैन, १९५ ईसाई और १० अन्य जाति के लोग हैं। यह ई० आई० रेलवे के मुख्य लाइन पर है। यहाँ से एक छोटी लाइन ससराम तक गयी है, जो आरा-ससराम-लाइट रेलवे कहलाती है।

इस शहर का नाम आरा क्यों पड़ा इसके सम्बन्ध में कई मत हैं। कुछ लोग कहते हैं कि अरण्य से आरा नाम हुआ। यहाँ पुराने जमाने में जंगल था। अब भी शहर के पास अरण्य देवी का एक मंदिर है। कुछ लोग बताते हैं कि आराम नगर से आरा नाम पड़ा। आराम बौद्धमठ को कहते हैं। यहाँ बहुत से बौद्धमठ थे इसीलिये इस नगर का नाम आराम-नगर पड़ गया।

लोगों का यह भी कहना है कि आरा का बहुत पुराना नाम चक्रपुर या एकचक्रपुर था। महाभारत में लिखा है कि इसके आसपास में बकासुर नाम का एक राक्षस रहता था, जो प्रतिदिन चक्रपुर या बक्री नामक गाँव से एक आदमी को पकड़-पकड़ कर खाया करता था। लोग बारी-बारी से प्रतिदिन उसके पास एक आदमी भेजा करते थे। वनवास के समय एक बार

पाण्डव चक्रपुर पहुँचे और एक ब्राह्मण के अतिथि हुए। संयोग से उस दिन उसी ब्राह्मण के घर से एक आदमी को उस राक्षस के पास जाना था। उस ब्राह्मण के उपकार का बदला चुकाने के लिये भीम खुद उस राक्षस के पास जाने को तैयार हुए और उस घर के किसी आदमी को जाने नहीं दिया। भीम को वह राक्षस खा नहीं सका, उल्टे भीम ने उसे बक्री गाँव में मार दिया और लाश चक्रपुर ले आये। आरा के पास बक्री गाँव अब भी मौजूद है।

बौद्धग्रन्थों में लिखा है कि भगवान् बुद्ध ने यहाँ एक मनुष्य भक्षक राक्षस को अपना अनुयायी बना लिया था इसी के स्मारक में सम्राट् अशोक ने यहाँ एक स्तूप और एक स्तम्भ खड़ा किया था, जिस पर सिंह की एक मूर्त्ति थी। चीनी यात्री ह्वेन-च्वाङ् यहाँ आया था।

बादशाह बाबर महम्मद लोदी को हराकर आरा पहुँचा था। जिला जज की पुरानी कचहरी के पास एक स्थान है, लोग कहते हैं कि बाबर ने पश्चिम बिहार पर विजय प्राप्त करने का उत्सव इसी स्थान पर मनाया था। यह स्थान हाल तक शाहाबाद कहलाता था और मोगल बादशाहों के वक्त में शाहाबाद सरकार के फौजदार इसी स्थान पर रहते थे। शाहाबाद सरकार के नाम पर ही पीछे जिले का नाम पड़ा।

इस शहर के इतिहास में सन् १८५७ का बलवा एक मुख्य घटना है। १८५७ की २५ जुलाई को दानापुर के देशभक्त सैनिक अंगरेजों के विरुद्ध खड़े होकर शाहाबाद आये। इनमें बहुत से इसी जिले के रहनेवाले राजपूत थे। जगदीशपुर के प्रभावशाली और उत्साही जमींदार कुँवर सिंह इन सबों का सरदार बना। अब तो बहुत से लोग इस दल में आकर मिल

गये। इन लोगों ने जेल तोड़ कर कैदियों को निकाल दिया और सरकारी खजाना लूट लिया। यहाँ बहुत थोड़े से अंगरेज थे इससे ये लोग आन्दोलनकारियों का मुकाबला नहीं कर सके। इन लोगों ने अपने स्त्री-बच्चों को कहीं बाहर भेज दिया और खुद किले की तरह बने हुए एक अंटाघर में जा छिपे। इस अंटाघर को एक रेलवे इंजिनियर ने बनवाया था और ऐसे ही खतरे के मौके में सुरक्षित रहने के लिये उसे खूब मजबूत कर दिया था। ८ दिन तक ये लोग इसी घर में बन्द रहे। बलवाइयों ने इसे तोड़ने की बहुत कोशिश की पर वे सफल नहीं हो सके। इसके बाद दूसरी जगहों से अंगरेज सैनिकों के कई दल पहुँचे। अन्त में उनकी विजय हुई, आन्दोलनकारी दबाये गये और कितने को फाँसी हुई। शहर में डिंडोरा पिटवाया गया कि जिनके जिम्मे हथियार हो वे ४८ घंटे के अन्दर कैम्प में आकर हथियार दे जायँ। फौरन ७ हजार हथियार लोगों ने जमा कर दिये। फिर कुछ ही दिनों में शांति हो गयी। वह अंटाघर जहाँ अगरेज लोग छिपे थे आज आरा-हाउस नाम से प्रसिद्ध है।

आरा में देखने लायक पुरानी चीजें विशेष कुछ नहीं हैं। यहाँ एक जुम्मा मस्जिद है जो औरंगजेब के वक्त की बनायी हुई बतायी जाती है। अठारहवीं सदी के अन्त में जॉन डीन यहाँ का कलक्टर था। उसने एक मुसलमानी औरत से शादी की थी। उसकी बनवायी हुई यहाँ एक मौलाबाग मस्जिद है। उसी अहाते में जॉन डीन की भी कब्र है। शहर में जैनियों के कई सुन्दर मंदिर हैं। जिले के सदर स्थान में जो आफिस और कचहरियाँ होती हैं वे यहाँ भी हैं।

जगदीशपुर—यह सदर सब-डिविजन में एक छोटा सा शहर है जिसकी जन-संख्या ९६६१ है। यह शहर पहले चारो ओर

जंगलों से घिरा था। कुँवरसिंह यहीं के रहनेवाले थे। जंगलों के कारण अंगरेज लोग आन्दोलनकारियों को दबाने में बहुत दिनों तक असमर्थ रहे। एक बार दो सौ अंगरेज सैनिक इन पर चढ़ाई करने के लिये जंगल में घुसे थे पर आन्दोलनकारियों ने उनका ऐसा सामना किया कि वे लोग घबड़ा कर भागे। उन लोगों की बड़ी दुर्दशा हुई। २०० में सिर्फ ५९ सैनिक जीते वापस आ सके। पीछे बहुत खर्च करके जंगल कटवाया गया तब जाकर आन्दोलनकारी दबाये जा सके। अब उस स्थान में खेती खूब हो रही है। जगदीशपुर में थाना का सदर आफिस है।

देवबरुणार्क—यह गाँव आरा से २७ मील दक्षिण-पश्चिम है। यहाँ दो बहुत पुराने मंदिर हैं। बड़े मंदिर के सामने गुप्त-साम्राज्य के समय के चार स्तम्भ हैं जिनमें एक पर जीवित गुप्त (७४० ई०) की शिलालिपि है। मंदिर के पास ही गुप्तकाल का एक और स्तम्भ है जिसके ऊपर उत्तर, पूरब, दक्षिण, पश्चिम चारो दिशाओं के स्वामी कुबेर, इन्द्र, वरुण और यम की मूर्त्तियाँ हैं। नीचे आठो ग्रहों को टूटी-फूटी मूर्त्तियाँ हैं।

पीरो—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बरहरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बिहिया—यह ईस्ट इंडियन रेलवे लाइन पर एक गाँव है जो व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ १८७४ ई० में बैल से चलायी जानेवाली चीनी की एक मिल बनी जो अब भी कायम है। पीछे सूबे के अन्दर इस मिल की नकल पर बहुत सी मिलें बनीं जिससे ऊख की खेती बढ़ी। बहुत पुराने जमाने में हरिहोवंश के राजपूत आदिम जाति चेरो लोगों को भगा कर बिहिया में बस गये थे। उनके किले के चिह्न अब भी देखने में आते हैं। सन् १५२८ के लगभग राजा भूपतदेव ने माहिनी

नाम की एक ब्राह्मण स्त्री का सतीत्व नष्ट किया था। उस स्त्री ने अपने शरीर को अपवित्र समझ कर जला दिया और मरते समय हरिहोवंशियों को महाश्राप दिया जिसके डर से वे लोग भाग कर वहाँ से बलिया जिला चले गये। उस स्त्री की समाधि पीपल वृक्ष के नीचे रेलवे लाइन के पास है जिसे देखने को बहुत सी स्त्रियाँ आया करती हैं।

बीबीगंज—आरा से थोड़ी दूर पश्चिम यह एक गाँव है। १७६४ ई० में जब शुजाउद्दौला और मीर कासिम की सेना से मुकाबला करने के लिये अंगरेजी सेना बाँकीपुर से बक्सर की ओर बढ़ी थी तो बीबीगंज में दोनों ओर की सेना में मुठभेड़ हो गयी थी। सन् १८५७ के बलवे में बक्सर से आते हुए अंगरेज सैनिकों को आन्दोलनकारियों ने इस स्थान पर रोका था।

मसाढ़—आरा से ६ मील पश्चिम यह एक गाँव है। इसका पुराना नाम महासार था। चीनी यात्री य्वन्-च्वाङ् यहाँ आया था। उसने अपने उच्चारण के अनुसार इसे मो-हो-सो-लो लिखा है। यहाँ जैनों का एक मंदिर है जो १८१९ ई० का बना हुआ है। इस मंदिर में आठ जैन-मूर्त्तियाँ हैं जिनमें सात पर सन् १३८६ ई० के शिलालेख हैं। इन लेखों से मालूम होता है कि उस समय यहाँ मारवाड़ से कुछ जैन आ बसे थे जिन्होंने मूर्त्तियों का निर्माण कराया था। इन लेखों से इस गाँव का पुराना नाम महासार भी सिद्ध होता है। यहाँ की बाकी एक मूर्त्ति पर, जो १८१९ ई० की है, लिखा है कि जब करुप देश में अंगरेजों का राज्य था उस समय आरामनगर के बाबू शंकरलाल ने यह मूर्त्ति प्रदान की थी। इस लेख से आरा का पुराना नाम आरामनगर और शाहाबाद जिले का पुराना नाम करुप देश साबित होता है। वाल्मीकि रामायण में करुप और मलद प्रान्त बहुत

पवित्र स्थान माना गया है। कुछ लोग अनुमान करते हैं कि ये ही दोनों अब कारीसाथ और मसाढ़ गाँव के रूप में हैं और पास ही पास मौजूद हैं। यहाँ शिवलिंग बहुत पाये जाते हैं। कारीसाथ स्टेशन के पास एक पुराना जलाशय है जिसे लोग शिवभक्त बाणासुर की कन्या उषा की क्रीड़ावापी कहते हैं। यहाँ से कुछ दूर बलि नामक गाँव बाणासुर के पूर्वज बलि की राजधानी समझा जाता है।

महादेवपुर—सदर सब-डिविजन के बिलकुल दक्षिण में यह एक गाँव है। यहाँ ४२ फीट ऊँचे दो मंजिले मंदिर का भग्नावशेष है।

सन्देश—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सहर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

शाहपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बक्सर सब-डिविजन

बक्सर—गंगा के किनारे यह सब-डिविजन का सदर-आफिस है जो २५°३४′ उत्तरीय अक्षांश और ८३°५८′ पूर्वीय देशान्तर पर है। शहर में म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है। यहाँ की जन-संख्या १३,४४९ है। यहाँ ई० आई० आर० का स्टेशन और विहार का सबसे बड़ा सेन्ट्रल जेल है।

कहते हैं कि वेद-मन्त्र की रचना करनेवाले बहुत से ऋषि यहाँ हुए। इस स्थान को वेदगर्भ कहते थे। यहाँ गौरीशंकर के मंदिर के पास एक तालाब है जिसका पहले नाम था अघसर अर्थात् पाप को दूर करनेवाला। कहते हैं कि वेदशिरा नाम के एक ऋषि ने दुर्वासा ऋषि को डराने के लिये व्याघ्र का रूप बनाया। इस पर क्रोधित होकर दुर्वासा ने उन्हें शाप दिया कि

तू व्याघ्र ही बना रह। अन्त में इसी तालाब में नहाने से वेदशिरा अपना असली रूप पा सके। तब से इस तालाब का नाम पड़ा व्याघ्रसर। पीछे इस शहर का नाम धीरे-धीरे व्याघ्रसर से बघसर और अन्त में बक्सर हो गया। बक्सर में रामेश्वरनाथ महादेव का मंदिर प्रसिद्ध है। कुछ लोग कहते हैं कि बक्सर के पास ही विश्वामित्र का सिद्धाश्रम था। लेकिन वाल्मीकि रामायण से पता चलता है कि सिद्धाश्रम देवकुंड के पास सिधरामपुर नामक स्थान में रहा होगा जो पटना से करीब ५० मील दक्षिण है। ताड़का-वन, जहाँ राम-लक्ष्मण ने ताड़का का वध किया था, विहिया के पास जान पड़ता है।

सन् १७६४ में मीर कासिम और अवध के नवाब शुजा-उद्दौला की सेना को अंगरेजों ने बक्सर के पास ही हराया था। यह अंगरेजों की अन्तिम विजय थी जिसे प्राप्त कर वे बंगाल-विहार के मालिक बन बैठे। अभी कुछ दिन हुए अपनी इस विजय के स्मारक स्वरूप अंगरेजों ने यहाँ एक विजय-स्तम्भ बनवाया है।

गंगा के किनारे बक्सर का किला बहुत दिनों से युद्ध की दृष्टि से अपनी एक खास महत्ता रखता आ रहा था। इस विजय के बाद यह किला अंगरेजों के हाथ में चला आया। किले के आस-पास की जमीन १७७० ई० में सैनिक कार्य के लिये ली गयी। १८४२ ई० तक किले के अन्दर सेना की छावनी रही।

चौसा—कर्मनाशा नदी के पूरबी किनारे पर यह एक गाँव है। यहाँ ईस्ट इण्डियन रेलवे का स्टेशन है। यह वही प्रसिद्ध स्थान है जहाँ सन् १५३९ में बंगाल से लौटते वक्त हुमायूँ को शेरशाह ने हराया था। शेरशाह कर्मनाशा नदी के किनारे पहले से अफगान सैनिकों को लेकर हुमायूँ की राह रोकने के लिये खड़ा होगया। हुमायूँ शेरशाह का मुकाबला न कर सकने के

कारण तीन महीने तक यहाँ रुका रहा और अन्त में शेरशाह को बंगाल-बिहार का शासक कबूल कर उससे सन्धि कर ली। लेकिन शेरशाह ने धोखा देकर अचानक रात में चढ़ाई कर दी। हुमायूँ एक भिश्ती के सहारे किसी तरह गंगा पार कर दिल्ली पहुँचा, पर उसके आठ हजार सैनिक मारे गये। हुमायूँ ने उस भिश्ती को एक दिन के लिये अपनी राजगद्दी पर बैठाया था।

डुमराँव—बक्सर सब-डिविजन में यह एक छोटासा शहर है जिसकी जनसंख्या १४,४२१ है। यहाँ मनुष्यों और पशुओं के लिये अस्पताल, हाई स्कूल, ई० आई० रेलवे का स्टेशन और म्युनिसिपैलिटी हैं। डुमराँव-राज के कारण यह स्थान बहुत प्रसिद्ध है। राजघराने के लोग अपने को सुप्रसिद्ध राजा विक्रमाजित के वंशज बताते हैं। डुमराँव में थाने का सदर आफिस है।

नावानगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बरह्मपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

भोजपुर—डुमराँव से दो मील उत्तर यह एक गाँव है। इसका नाम उज्जैन के राजा भोज के नाम पर पड़ा, जिसने कुछ राजपूत सरदारों को लेकर यहाँ के आदि निवासी चेरो जाति के लोगों को मार भगाया था। भोज राजाओं के पुराने महलों के चिन्ह अब भी देखने में आते हैं। इस गाँव के नाम पर परगने का भी नाम पड़ा। बल्कि जिले का सारा उत्तरीय भाग भोजपुर नाम से पुकारा जाता है। कहते हैं राजा भोजसिंह के मरने के बाद उसका राज तीन हिस्से में बँट गया—डुमराँव राज, बक्सर राज और जगदीशपुर राज। जगदीशपुर के बाबू कुँवरसिंह और अमरसिंह के नाम सिपाही-विद्रोह के सम्बन्ध में प्रसिद्ध हैं।

बक्सर और जगदीशपुर के राज का अन्त हो गया। अब केवल डुमराँव राज रह गया है।

राजपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

ससराम सब-डिविजन

ससराम—सब-डिविजन का यह मुख्य शहर ग्रैंड-ट्रंक-रोड पर २४°५७′ उत्तरीय अक्षांश और ८४°१′ पूर्वीय देशान्तर पर है। ई० आई० आर० के ग्रैंड-कॉर्ड-लाइन का यहाँ एक स्टेशन है। आरा से आयी हुई एक छोटी लाइन भी यहीं समाप्त होती है। ससराम शहर की जन-संख्या २५,१७५ है। ससराम का पूरा नाम सहसराम या सहस्रारामा है। कहा जाता है कि यह नाम पुराण-प्रसिद्ध सहस्रार्जुन के नाम पर पड़ा, जिसकी हजारों बाहें परशुराम ने काटी थीं। सहस्रार्जुन भाग कर यहीं आया था और यहीं उसकी मृत्यु हुई थी। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि राजा सहसराम के नाम पर इस शहर का नाम पड़ा। राजा को मुसलमानों ने धोखेबाजी से मार कर नगर छीन लिया था।

ससराम में सबसे पुरानी चीज अशोक का शिलालेख है, जो शहर से पूरब चंदनपीर पहाड़ी की चोटी के पास एक छोटी गुफा के अन्दर है। जहाँ शिलालेख है वह स्थान कोई प्राचीन बौद्ध-स्थान मालूम पड़ता है, जिसे पीछे मुसलमानों ने कब्जे में कर लिया। मुसलमान लोग गुफा को चंदनपीर का चिराग-दान कहते हैं। चन्दनपीर की दरगाह पहाड़ी की चोटी पर है। इसके पास तम्बाकू के एक व्यापारी का १८०४ ई० का बना एक मकान है। पहाड़ी के नीचे जहाँगीर के वक्त की सन् १६१२ ई० की एक टूटी-फूटी मस्जिद है। यहाँ से एक मील दक्षिण तारा-चंडी पहाड़ी पर चण्डी देवी की मूर्त्ति के पास नायक प्रतापधवल नामक एक स्थानीय राजा का शिलालेख है जो १२ वीं सदी का

है। इस राजा का शिलालेख तुतराही में भी पाया जाता है।

ससराम में देखने लायक सब से सुन्दर चीज एक बड़े तालाब के बीच बना हुआ शेरशाह का मकबरा है। यह हिन्दुस्तान के अन्दर पठानकाल की भवन-निर्माण-कला का एक सब से सुन्दर नमूना है। इस मकबरे को शेरशाह ने अपने जीवन-काल में ही अपने लिये बना रखा था। शेरशाह का जन्मस्थान यहीं था। उसकी मृत्यु यहाँ नहीं हुई थी पर उसकी लाश यहीं दफनायी गयी थी। यह मकबरा ज्यों का त्यों कायम है। शहर के बीच में शेरशाह के पिता हसन खाँ सूर का मकबरा है जो १५३८ ई० का बना है। यह भी एक सुन्दर मकबरा है लेकिन अब कुछ टूटी-फूटी हालत में है। शेरशाह के मकबरे से आधा मील उत्तर-पच्छिम एक तालाब के ही अन्दर शेरशाह के बेटे बादशाह सलीम शाह का मकबरा है। यहाँ उसकी लाश १५५२ ई० में ग्वालियर से लायी गयी थी। इस राजवंश का पतन शीघ्र ही हो जाने से यह मकबरा कभी पूरा नहीं किया जा सका। इस मकबरे में जाने का पत्थर का पुल बहुत ही सुन्दर है। शेरशाह का मकबरा बनवाने वाला अफसर अलावल खाँ का टूटा-फूटा मकबरा भी शहर के बाहर दक्षिण की ओर देखने में आता है।

शहर के अन्दर उल्लेख योग्य दूसरी इमारतें किला, ईदगाह और तुर्की हम्माम हैं। किला नामक इमारत को लोग हसन खाँ सूर का महल बताते हैं। ईदगाह शाहजहाँ के वक्त में मुजाहिद खाँ ने बनवाया था। तुर्की हम्माम शेरशाह के समय का समझा जाता है। ससराम में शेख कबीर दरवेश का कायम किया हुआ एक खानका है जहाँ एक मस्जिद और एक बड़ा मदरसा है। बादशाह फरुकशियर ने १७१७ ई० में और शाह आलम ने १७६२ ई० में यहाँ के लिये कुछ गाँव दिये थे।

रोहतासगढ़ (शाहाबाद)
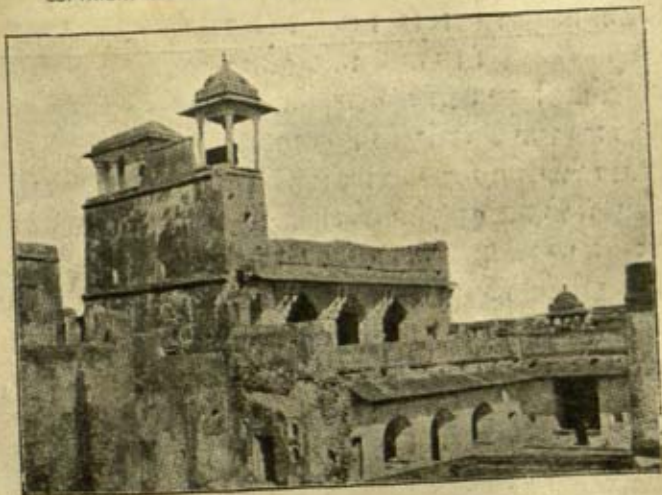
रोहतासगढ़ में राजा मानसिंह का भवन

मुंदेश्वरी मंदिर, रामगढ़ (शाहाबाद)

शेरशाह का मकबरा, ससराम (शाहाबाद)

अकबरपुर—रोहतासगढ़ के पास सोन के किनारे यह एक गाँव है जिसे राजा मानसिंह ने सम्राट् अकबर के नाम पर बसाया था। यहाँ डेहरी-रोहतास-लाइट-रेलवे समाप्त होती है। इसके पास १७ वीं सदी का एक मकबरा है। यहाँ अस्पताल, थाना और डाक-बंगला हैं। लेकिन थाने का नाम रोहतास ही है। सन् १८५७ के स्वतन्त्रता-युद्ध में छोटा नागपुर के देशभक्त सैनिक चतरा में अंगरेजी सेना से लड़ने के बाद यहीं चले आये थे। लेकिन यहाँ भी जब अंगरेजों ने उन्हें तंग किया तो वे रोहतासगढ़ के जंगल में चले गये।

कोआथ—यहाँ एक अस्पताल और पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट के इंजिनियर का सदर आफिस है।

करगहर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

गुप्तेश्वर—शेरगढ़ से आठ मील की दूरी पर कैमुर की पहाड़ी में यह एक गुफा है जिसमें एक शिवलिंग है। गुफा के अन्दर कई खोह हैं। यहाँ साल में एक बार मेला लगता है।

चेनारी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

डेहरी—सोन के किनारे यह स्थान व्यापार का एक केन्द्र है। यहाँ ईस्ट इंडियन रेलवे के ग्रैंड-कार्ड-लाइन का एक स्टेशन है। यहाँ ग्रैंड-ट्रंक-रोड सोन नदी को पार करती है। यह सोन नहर का केन्द्र स्थान है। यहाँ डालमिया एण्ड कम्पनी के कई बड़े-बड़े कारखाने और मिल हैं। इस कारण अब इसका नाम डालमिया नगर पड़ गया है। यहाँ सोन नदी पर १०,०५२ फीट लम्बा पुल है। यह हिन्दुस्तान में तो सबसे बड़ा पुल है ही लेकिन दुनियाँ के पुलों में भी इसका दूसरा स्थान है। पहला स्थान यूरोप की टे नदी के पुल का है। डेहरी में थाने का सदर आफिस है।

तिलौथू—ससराम और रोहतासगढ़ के बीच यह एक गाँव है जहाँ औरंगजेब के वक्त की एक मस्जिद है।

तुतराही—कुदरा नदी की एक शाखा तुतराही इसी स्थान पर पहाड़ी से अलग होती है। यह स्थान तिलौथू से ५ मील पश्चिम है। यहाँ शीतला देवी और जगधात्री देवी के मंदिर हैं और पास ही में ११५८ ई० की एक शिलालिपि है। इस शिलालेख से मालूम होता है कि नायक प्रतापधवल नाम का एक स्थानीय राजा, जिसका जिक्र रोहतासगढ़ और ससराम के ताराचंडी चट्टान के शिलालेखों में भी हुआ है, अपने परिवार, राजपंडित, कोषाध्यक्ष, द्वारपाल और दास-दासियों के साथ यहाँ तुतराही जल-प्रपात के पास तीर्थ करने आया था। इसीके पास एक चट्टान में खोदी हुई देवी की मूर्त्ति के चारो ओर कई शताब्दी बाद के कुछ शिलालेख हैं।

डालमिया नगर—दे० "डेहरी"।

दिनारा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

देव मार्कण्डेय—नासरीगंज से ५ मील उत्तर यह एक गाँव है जहाँ एक टील्हे पर तीन मंदिर और तीन शिवलिंग हैं। कहते हैं प्रधान मंदिर विक्रम सं० १२० (६३ ई०) में राजा फुलचंद चेरो की स्त्री गोभाविनी का बनवाया हुआ है। इस मंदिर में विष्णु और सूर्य की मूर्त्तियाँ हैं; दूसरे मंदिर में सूर्य की और तीसरे में चौमुखी महादेव की मूर्त्ति हैं। जेनरल कनिंघम ने इन मंदिरों को छठी-सातवीं सदी का बताया था पर पीछे के अन्वेषकों ने इन्हें इसके बहुत दिन बाद का बताया है।

नासरीगंज—यह व्यापार का एक केन्द्र है। पहले यहाँ कागज बनाने के छोटे-छोटे २१ कारखाने और चीनी साफ करने के ४२ कारखाने थे। कागज बनाने का थोड़ासा काम

हाल तक होता रहा है। अब यहाँ तेल, आटा और चीनी का मिल खुला है। यहाँ थाने का सदर आफिस है।

नोखा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

विक्रमगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

रोहतासगढ़—यह प्राचीन पहाड़ी किला जिले के अन्दर देखने लायक सबसे सुन्दर चीजों में एक है। यह किला उत्तर-दक्षिण करीब ५ मील लम्बा और पूरब-पच्छिम करीब ४ मील चौड़ा है। इसका घेरावा करीब २८ मील है। इस किले का नाम सुप्रसिद्ध सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व के नाम पर पड़ा है। यहाँ हरिश्चन्द्र और रोहिताश्व दोनों के मंदिर हैं। लोगों का कहना है कि यहाँ राजा रोहिताश्व की राजधानी थी। इस जिले के आदिवासी खरवार, ओराँव और चेरो सभी के वंशज बताते हैं कि हमारे पूर्वज किसी समय इस गढ़ के मालिक थे। गढ़ के कई स्थानों में १२ वीं और १३ वीं सदी के कुछ शिला-लेख हैं। फुलवारी नामक स्थान के ११६९ ई० के एक लेख से मालूम पड़ता है कि जपिला के नायक प्रतापधवल ने रोहतास-गढ़ तक एक सड़क बनवायी थी। पलामू जिले के अन्दर सोन के दूसरे किनारे पर वर्तमान जपला ही वह जपिला स्थान समझा जाता है। इस राजा के सम्बन्ध में ससराम के पास की तारा-चंडी पहाड़ी पर तथा तुतराही में भी शिलालेख हैं। यहाँ के एक दूसरे शिलालेख से मालूम पड़ता है कि यह राजा खयारवल वंश का था। कुछ लोग कहते हैं कि शायद इसी शब्द का अप-भ्रंश, खरवार शब्द है। लाल-दरवाजा के पास १२२३ ई० का शिलालेख है, जिसमें प्रतापधवल के एक वंशज का वर्णन है।

१५३८ ई० में यह किला हिन्दू राजा के हाथ से शेरशाह के हाथ में चला गया। कहते हैं कि जब चुनारगढ़ शेरशाह के

हाथ से निकल गया तो उसने रोहतासगढ़ पर ही कब्जा कर लेना चाहा। लेकिन इस किले को जीतना आसान काम नहीं था इसलिये उसने चालबाजी सोची। उसने गढ़ के हिन्दू राजा को कहला भेजा कि हुमायूँ हम पर चढ़ आया है, हमारे स्त्री-बच्चे और खजाने को अपने यहाँ रहने दीजिये। राजा ने विपत्-काल में शरण आये हुए की रक्षा करना धर्म समझा। पर शेरशाह ने डोलियों पर बेगमों और खजाने को न भेज कर उन-पर सशस्त्र अफगान सिपाहियों को भेजा और पीछे खुद भी वहाँ पहुँचा। राजा जान लेकर भागा और किला तथा राजकोष शेरशाह के हाथ लगा। हुमायूँ से लड़ते समय शेरशाह ने अपने खजाने और बाल-बच्चे को इसी गढ़ में रखा था।

अकबर के वक्त में जब मानसिंह बंगाल विहार का वाय-सराय बनाया गया तो उसने रोहतासगढ़ को ही अपना सदर आफिस बनाया। उसने किले की पूरी मरम्मत करायी, यहाँ अपने रहने के लिये महल बनवाये, जलाशय दुरुस्त कराया और परसियन तरीके पर एक सुन्दर बाग लगाया। जब वह मर गया तो किला बादशाह के वजीर के प्रबन्ध में चला गया जो यहाँ के लिये गवर्नर नियुक्त किया करता था। १६४४ ई० में शाहजहाँ ने अपने पिता से विद्रोह करते समय अपने परिवार के लोगों को यहीं रखा था। जब मीर कासिम उधुआनाला के पास अंगरेजों से हार गया तो उसने अपने स्त्री-बच्चे, अपने साथियों के स्त्री-बच्चे तथा खजाने को इसी किले में रक्षा के लिये भेजा था। जब बक्सर में मीर कासिम की अन्तिम हार हुई तो वह अपने स्त्री-बच्चों को रोहतास से भी लेकर भागा।

किले का मुख्य भाग अब राजघाट और कठौतिया में दीख पड़ता है। गढ़ के भीतर के महलों में तख्त-पादशाही और

आइना-महल बहुत सुन्दर है। तख्त-पादशाही चौमंजिला इमारत है। गढ़ के अन्दर फैले हुए बहुत से पुराने टूटे फूटे मकान हैं। इनमें मुख्य शेरशाह के वक्त की इमारत जामा मस्जिद या आलमगीर मस्जिद तथा हवस खाँ का रौजा है। रौजा के सामने १५८० ई० की बनी एक मस्जिद है। पास में मुगलकाल की बहुत सी कब्रें हैं। राजमहल से थोड़ी दूर पर एक गुफा में एक मुसलमान पीर की कब्र है। रोहतास अधित्यका के नीचे एक बड़ी कब्र पर फारसी लिपि में लिखा है कि जब किला १६३८ ई० में बना था तो उस समय किलादार इखलास खाँ था।

डेहरी से रोहतास तक छोटी लाइन गयी है। रोहतास के पास अकबरपुर एक गाँव है जहाँ थाने का सदर आफिस है। लेकिन थाना का नाम रोहतास ही है।

सूरजपुरा—विक्रमगंज से ४ मील उत्तर-पच्छिम यह एक गाँव है जहाँ एक पुराने खानदान के कायस्थ जमींदार रहते हैं, जिन्हें राजा की उपाधि है। वर्तमान राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह और उनके भाई कुमार राजीवरंजनप्रसाद सिंह अपने सार्वजनिक कामों के लिये प्रसिद्ध हैं।

शेरगढ़—यह ससराम से २० मील दक्षिण-पच्छिम शेरशाह का सन् १५४०–४५ का बनवाया एक टूटा-फूटा किला है। रोहतासगढ़ की अपेक्षा शेरगढ़ की अधित्यका नीची है लेकिन इसका दृश्य बहुत ही सुन्दर है। इस किले के चारो ओर पत्थर की दीवाल है, जिसका घेरावा ४ मील है। बीच-बीच में कई मजबूत फाटक बने हुए हैं। यहाँ के महल, दिवानखाना और तहखाना आदि देखने लायक चीजें हैं। एक फाटक के पास एक पुरानी मस्जिद है।

भभुआ सब-डिविजन

भभुआ—भभुआ सब-डिविजन का यह सदर आफिस है, जो २५°२′ उत्तरीय अक्षांश और ८३°३७′ पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ की जन-संख्या ६,००२ है। यहाँ ई० आई० आर० की ग्रैंड-कॉर्ड-लाइन का स्टेशन है।

अघौरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

कुदरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

गारोहाट—भभुआ से ७ मील दक्षिण-पश्चिम गारोहाट में, कहा जाता है कि, एक चेरो सरदार का निवास-स्थान था। यहाँ पुराने मकानों के चिह्न बहुत दूर तक देखने में आते हैं।

चाँद—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

चैनपुर—भभुआ से ७ मील पश्चिम यह एक गाँव है। यहाँ शेरशाह के एक दरबारी का मकबरा है। शेरशाह या अकबर के वक्त का यहाँ एक किला भी है जिसके चारो ओर खाई है। यहाँ हरसू ब्रह्म का स्थान है जिसे बहुत दूर-दूर के लोग जानते हैं। कहते हैं हरसू ब्राह्मण यहाँ के राजा शालिवाहन के पुरोहित थे। किसी कारण रानी उनसे नाराज हो गयो। रानी के कहने से राजा ने उनका घर ढहवा दिया। इस पर उन्होंने १४२७ ई० में राजा के द्वार पर धरना देकर आत्म-हत्या कर ली। वे ब्रह्मभूत हो गये और राजा के वंश का नाश कर दिया। एक लड़की बची जिसका वंश अब भी चल रहा है। कहते हैं वह लड़की उन पर बहुत दया करती थी। चैनपुर में थाने का सदर आफिस है।

दरौली—यहाँ कुछ पुराने मंदिरों और मकानों के चिन्ह हैं।

दुर्गावती—यहाँ डाक-घर, पुलिस-स्टेशन, डाक-बँगला और रेलवे-स्टेशन हैं। पहले इसी के पासवाले गाँव सबय में

थाना था जिसके अन्दर मोहनिया और भभुआ भी थे। यहाँ १७६४ ई० में नवाब मीर जाफर और ईस्ट-इंडिया-कम्पनी की सेना ठहरी थी।

पटना—गारोहाट से कुछ मील दक्षिण इस स्थान में आदिम जाति सवर की पुरानी इमारतों के चिन्ह हैं।

भगवानपुर—भभुआ से ६ मील दक्षिण एक गाँव है जहाँ बहुत पुराने-घराने के राजपूत जमींदार रहते हैं। उनका कहना है कि वे लोग तक्षशिला से आये थे और प्रसिद्ध राजा पोरस उनके पूर्वज थे।

मुन्देश्वरी—भभुआ से ७ मील दक्षिण-पश्चिम रामगढ़ गाँव के पास एक पहाड़ी पर जिले का सबसे पुराना हिन्दू-मंदिर है जो ६३५ ई० का बना बताया जाता है। यहाँ और भी कितने पुराने मंदिरों और मूर्त्तियों के भग्नावशेष हैं।

मोहनिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

रामगढ़—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

वैद्यनाथ—रामगढ़ से ६ मील दक्षिण यह एक गाँव है। कहते हैं कि यह आदिम सवर जाति के राज्य का केन्द्र स्थान था। यहाँ एक टील्हे पर पुराने मंदिरों, मूर्त्तियों और स्तम्भों के भग्नावशेष मिलते हैं। पालवंशी राजा मदनदेव पाल की एक शिलालिपि भी यहाँ मिली है।

सवथ—दे० "दुर्गावती"।

मुजफ्फरपुर जिला

मुजफ्फरपुर (सदर) सब-डिविजन

मुजफ्फरपुर—मुजफ्फरपुर जिला और कमिश्नरी का सदर आफिस मुजफ्फरपुर शहर छोटी गण्डक के दक्षिणी किनारे २६°७' उत्तरीय अक्षांश और ८५°२४' पूर्वीय देशान्तर पर है। इस शहर को १८ वीं सदी में चकलानाई परगना का एक अमला मुजफ्फर खाँ ने अपने नाम पर बसाया था। सन् १८१७ में इनमें सिर्फ ६६७ घर थे लेकिन अब तो यह बहुत विस्तृत रूप में बसा हुआ है और इसमें कई हजार घर होंगे। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जन-संख्या ४२,८१२ है। इसमें २४,८४१ पुरुष और १७,९७१ स्त्रियाँ हैं। यहाँ की जन-संख्या में ३०,६४८ हिन्दू, ११,८०१ मुसलमान, ३४८ ईसाई और १५ दूसरे लोग हैं।

शहर के पास दो बड़े तालाब हैं एक सिकन्दरापुर तालाब और दूसरा अखाड़ाघाट तालाब। ये छोटी गण्डक के धारा परिवर्तन के कारण बने हैं। गण्डक इस समय शहर से आधे मील की दूरी पर है। शहर से बाहर खुले मैदान के बीच सेना की छावनी है। १९३१ ई० में यहाँ की जन-संख्या २३७ थी जिसमें ४० हिन्दू, ४६ मुसलमान और १५१ ईसाई थे। बिहार प्रान्त के अन्दर सेना की छावनी दो ही है, एक बड़ी छावनी दानापुर में और दूसरी छोटी छावनी यहाँ मुजफ्फरपुर में। इस शहर के अन्दर जिले के सरकारी आफिसों और कचहरियों के अलावे

एक बी० ए० दर्जे का कालेज, एक संस्कृत कालेज और ६ हाई स्कूल हैं। छोटी गण्डक के किनारे और एक रेलवे-जंकसन पर रहने के कारण यह शहर व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यहाँ से ११ सड़कें भिन्न-भिन्न स्थानों जैसे हाजीपुर, लालगंज, रेवा-घाट, सोहांसी घाट, मोतिहारी, सीतामढ़ी, पुपरी, कमतौल, दरभंगा, पूसा और दलसिंगसराय को गयी हैं।

कटरा—यह स्थान मुजफ्फरपुर से १८ मील उत्तर पच्छिम लखनदेई नदी के किनारे है। यहाँ एक पुराने किले का भग्नाव-शेष है। यह किला ६० बीघा जमीन के घेरावे में था। इसकी दीवालें ३० फीट ऊँची हैं। कटरा थाना किले के भग्नावशेष पर ही बनाया गया है। यहाँ के लोग कहते हैं कि इस किले को राजा चाँद ने बनवाया था। यह राजा कौन था कुछ पता नहीं है। कहानी है कि जब राजा दरभंगा जा रहा था तो उसने अपने परिवार के लोगों को कह दिया था कि अगर तुम्हें मालूम हो कि हमारा झंडा गिर गया है तो समझना कि हम मर गये। उसके एक दुश्मन ने झंडा गिरा दिया। जब यह खबर किले में पहुँची तो चिता बनाकर राजा के परिवार के लोग उसमें जल मरे। यह कहानी जरीडीह की कहानी से बहुत मिलती जुलती है, जिसका वर्णन आगे मिलेगा।

काँटी—मुजफ्फरपुर से नरकटियागंज जानेवाली लाइन पर मुजफ्फरपुर के बाद ही काँटी रेलवे स्टेशन है। स्टेशन के पास इसी नाम की एक बहुत बड़ी बस्ती है जो व्यापार का एक केन्द्र है। यहाँ पहले शोरा और नील की फैक्टरियाँ थीं।

जैतपुर—यह स्थान मुजफ्फरपुर से ८ कोस पच्छिम है। यहाँ एक मठ है जिसे बहुत बड़ी जायदाद है।

पदमौल—मुजफ्फरपुर से ११ मील दक्षिण इस स्थान पर

मुगल बादशाहों के समय में एक कानूनगो रहता था। उसने यहाँ एक छोटा सा किला बनवाया था, जिसमें तोपें भी रहती थीं। किला का भग्नावशेष अब भी दिखाई पड़ता है।

पारू—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बखरा—इस गाँव में कुछ पुराने खानदान के जमींदार लोग रहते हैं। यहाँ पहले शोरा की और पास के सरैया गाँव में नील की फैक्टरी थी। एक दूसरे गाँव कोल्हुआ में स्तम्भ, एक स्तूप और एक पुराना तालाब हैं। स्तम्भ को लोग बखरा-स्तम्भ कहते हैं।

बरूराज—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

मनियारी—मुजफ्फरपुर से ८ मील दक्षिण यह एक गाँव है। यहाँ एक बहुत बड़ा मठ है जिसमें शिवरात्रि के अवसर पर मेला लगता है।

मीनापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

साहेबगंज—यह स्थान बाया नदी के किनारे व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यहाँ का जूता मशहूर समझा जाता है। यहाँ से कुछ दूर पर करनौल गाँव है जहाँ पहले नील की फैक्टरी थी। साहेबगंज में थाने का सदर आफिस है।

सूबेगढ़—मुजफ्फरपुर से १८ मील उत्तर-पच्छिम एक पुराने किले का भग्नावशेष है। इस किले का नाम सूबेगढ़ या सुबही गढ़ है। यह बागमती की एक पुरानी धारा जोगा नदी से घिरा है। किले की लम्बाई १३०० फीट और चौड़ाई ४०० फीट है। इसकी दीवालें ईंट की थीं जो अब गिर गयी हैं। किले के बीच में एक टील्हा है जो राजमहल का स्थान समझा जाता है। राजा का नाम सुहेलदेव था जिसे सुहेलदेवी या सुबही देवी नाम की एक लड़की थी। कहते हैं कि उसने घोषणा की थी कि जो

हमारे किले के असंख्य ताड़ के पेड़ को गिन दे उसीसे मैं विवाह करूंगी। अन्त में पास के गाँव सुकरी या सुआरीडीह के एक दुसाध ने ताड़ों को गिन दिया। सुहेलदेवी एक नीच जाति के आदमी से ब्याह करने के विचार से बहुत दुःखी हुई। आखिर उसकी प्रार्थना पर धरती फटी और वह उसमें समा गयी। यहाँ एक पत्थर मिला है जिस पर पहले मूर्त्तियाँ थीं। जेनरल कनिंघम ने यहाँ तुगलकशाह के नाम के दो सिक्के पाये थे। कनिंघम का ख्याल है कि यहाँ के किले को उसीने तोड़ा होगा। यहाँ से दक्षिण की ओर मुसलमानों की तीन कब्रें हैं।

शकरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सीतामढ़ी सब-डिविजन

सीतामढ़ी—सीतामढ़ी सब-डिविजन का प्रधान शहर सीतामढ़ी २६°३५' उत्तरीय अक्षांश और ८५°२९' पूर्वीय देशान्तर पर लखनदेई नदी के किनारे है। यहाँ दरभंगा से नरकटियागंज जानेवाली लाइन पर रेलवे स्टेशन है। यहाँ से सड़कें नेपाल की सीमा, दरभंगा और मुजफ्फरपुर को गयी हैं। यह व्यापार का एक केन्द्र है। यहाँ सखुआ, चपड़ा तथा नेपाल की दूसरी चीजें बिकती हैं। यहाँ का बैल बहुत अच्छा समझा जाता है और दूर-दूर के लोग यहाँ से इसे खरीद ले जाते हैं। सीतामढ़ी शहर की जन-संख्या १०,७०१ है इसमें ८,७५५ हिन्दू, १,८९५ मुसलमान, ४२ ईसाई और ९ जैन हैं।

सीताजी का उत्पत्ति स्थान यहीं समझा जाता है और सीता जी के नाम पर ही सीतामढ़ी का नाम होना बताया जाता है। कहते हैं कि एक बार जब अनावृष्टि के कारण जोरों का अकाल पड़ा तो यज्ञानुष्ठान करके राजर्षि जनक जी ने स्वयं हल जोतना शुरू किया था। इसी समय उन्हें एक घड़े

के अन्दर जमीन में गड़ी हुई बालिका सीता मिली। कहा जाता है कि उन्होंने इस स्थान पर एक कुंड बनवाया जिसे लोग सीता-कुंड कहते हैं। लेकिन कुछ लोग यहाँ से ३ मील दक्षिण-पच्छिम बनौरा नामक गाँव को ही सीता का जन्मस्थान मानते हैं। सीतामढ़ी में जानकी कुंड के पास एक मंदिर है वहाँ रामनवमी में बहुत बड़ा मेला लगता है। कहते हैं कि इस मंदिर की राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्त्तियों को बीरबल दास नामक एक साधु ने जमीन से उखाड़ा था। पास ही में तीन समाधियाँ हैं जिन्हें लोग बीरबल दास और उनके दो उत्तराधिकारियों की समाधियाँ बताते हैं। मंदिर की अपनी बहुत बड़ी जायदाद है।

चरौत—पुपरी से ८ मील उत्तर-पूरब इस गाँव में एक मठ है, जिसका सम्बन्ध नेपाल के मटिहानी मठ से है। इन मठों को अपनी बहुत बड़ी जायदाद है।

देवकली—यह गाँव शिवहर से ४ मील पूरब बेलसंड-सीतामढ़ी सड़क पर है। यहाँ एक बहुत ऊँचे टील्हे पर कुछ मंदिर हैं और पास में एक तालाब है। इस टील्हे को लोग द्रुपदगढ़ कहते हैं और बताते हैं कि महाभारत के प्रसिद्ध राजा द्रुपद का यहाँ किला था। मंदिरों में मुख्य मंदिर भुवनेश्वर महादेव का मंदिर है। यहाँ शिवरात्रि के अवसर पर मेला लगता है।

नानपुर—यह गाँव पुपरी से ४ मील दक्षिण है। यहाँ एक पुराने खानदान के धनी जमींदार रहते हैं। कहते हैं कि दो ढाई सौ वर्ष पहले पंजाबवासी नानपाय नामक एक व्यक्ति ने किसी तरह बादशाह को खुश कर यहाँ एक अच्छी जमींदारी हासिल की और नानपुर गाँव बसाया। कुछ दिनों के बाद

मुहम्मदअली खाँ और शेर अली खाँ नामक दो पठानों ने उससे जमींदारी छीन ली और अपने-अपने नाम से मुहम्मदपुर और शेरपुर गाँव कायम किये। बादशाह ने उनसे लगान वसूलने के लिये माधोसिंह को तहसीलदार बनाकर भेजा, लेकिन दोनों भाइयों ने उन्हें भी मार डाला। जब अंगरेजों का राज्य हुआ तो माधोसिंह के एक वंशज गुलाम सिंह ने अंगरेजों से मिलकर यह जमीन्दारी हासिल करली।

परसौनी—यह स्थान सीतामढ़ी से ९ मील दक्षिण-पच्छिम है। यहाँ एक मुसलमान जमींदार का निवासस्थान है जिनकी जमींदारी परसौनी-राज के नाम से प्रसिद्ध है। इस राज को १७ वीं सदी में परदिल सिंह ने कायम किया था, जो पीछे मुसलमान हो गया।

पुपरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बेलसंड—यह स्थान सीतामढ़ी से १२ मील दक्षिण है। यहाँ पहले नील की कोठी थी। इस समय यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बेला-मुछपकौनी—यह स्थान मुरहा नदी के किनारे है। असल में इस स्थान का नाम बेला है लेकिन कहते हैं कि चूँकि कुछ दिनों तक मुरहा नदी का जल पीने से लोगों की मूँछ पक जाती है इसलिये लोग इस स्थान को बेला मुछपकौनी कहने लगे हैं। यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बैरगनिया—सीतामढ़ी सब-डिविजन के उत्तर-पच्छिम कोने पर यह स्थान व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ थाना और रेलवे स्टेशन हैं।

मेजरगंज—यह स्थान जिले की उत्तरीय सीमा के पास है जहाँ थाने का सदर आफिस है। इस स्थान को लोग मले और

हलखौरा भी कहते हैं। नेपाल-युद्ध के समय यहाँ अंगरेजी सेना की छावनी थी। यहाँ अंगरेजों का एक छोटा सा कब्रिस्तान भी है।

शिवहर—यह स्थान सीतामढ़ी से १६ मील दक्षिण-पच्छिम है। यहाँ एक पुराने घराने के भूमिहार-ब्राह्मण जमींदार का निवास स्थान है। इन लोगों का सम्बन्ध बेतिया राजवंश से है। १७ वीं सदी में उग्रसेन सिंह ने सरकार चम्पारण को अपने अधिकार में किया और बेतिया राजवंश की स्थापना की। इनके वंशज बहुत दिनों तक वहाँ राज करते रहे। अंगरेजी काल के आरम्भ में युगलकेश्वरसिंह बेतिया राज से हटा दिये जाने पर बुन्देलखंड चले गये। लेकिन इनके पीछे राज चलना मुश्किल हो गया। आखिर ये बुलाये गये और इनको परगना मझवा और सिमराँव दिया गया। परगना मेहसी और ढबरा इनके चचेरे भाई श्रीकृष्णसिंह और अवधूतसिंह को मिला जिससे शिवहर राज कायम किया गया। शिवहर में थाने का सदर आफिस है।

सुरसंड—यह स्थान सीतामढ़ी से १५ मील पूरब है। कहते हैं कि सूरसेन नामक एक सरदार के नाम पर इसका सुरसंड नाम पड़ा। उसकी मृत्यु के बाद यह स्थान जंगल हो गया जिसे महेश झा और अमर झा नामक दो भाइयों ने फिर आबाद किया और वर्तमान सुरसंड राजवंश की स्थापना की। सुरसंड में थाने का सदर आफिस है।

सोनबरसा—यह स्थान जिले की उत्तरी सीमा पर है जहाँ थाने का सदर आफिस है।

हाजीपुर सब-डिविजन

हाजीपुर—हाजीपुर सब-डिविजन का प्रधान स्थान हाजीपुर गंगा और गण्डक के संगम के समीप २५°४१' उत्तरीय अक्षांश

और ८५°१२' पूर्वीय देशान्तर पर बसा हुआ है। बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की मुख्य लाइन इसी होकर गयी है और यहाँ उसका एक स्टेशन है। यहाँ से एक लाइन मुजफ्फरपुर को गयी हुई है। हाजीपुर के पास मुख्य लाइन पर गण्डक नदी में एक बहुत बड़ा पुल है जिस पर दोनों ओर पैदल चलने का भी रास्ता है। यहाँ १८६९ ई० से म्युनिसिपैलिटी भी कायम है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार हाजीपुर शहर की जन-संख्या १९,२९९ है।

गंगा और गण्डक के संगम पर तथा हरिहर क्षेत्र और पाटलिपुत्र के समीप रहने के कारण यह स्थान सदा ही एक प्रमुख स्थान रहा है। रामायण में लिखा है कि विश्वामित्र के साथ जनकपुर जाते समय राम और लक्ष्मण गंगा पार करके यहाँ ठहरे थे। ठहरने का निश्चित स्थान कुछ लोग रामचुरा और कुछ लोग रामभद्र बताते हैं। शहर के पच्छिम रामचन्द्र जी का एक मंदिर है।

वर्तमान हाजीपुर शहर १३४५ और १३५८ ई० के बीच बंगाल के शासक शमसुद्दीन इलियास का बसाया हुआ है। उसने यहाँ एक किला बनवाया था, जिसकी दीवाल अब भी देखने में आती है। कहते हैं कि यह शहर २० मील पूरब महनार तक और ४ मील उत्तर गदई सराय तक फैला हुआ था। बहुत दिनों तक यहाँ उत्तर बिहार की राजधानी थी और यहाँ का सूबेदार बंगाल के मुसलमान शासक के अधीन काम करता था। बादशाह अकबर और उसके विद्रोही बंगाल के सूबेदार के बीच यहाँ कई लड़ाइयाँ हुईं। अकबर ने यहाँ के सूबेदार दाऊद खाँ को परास्त कर यहाँ का किला तोप से उड़ा दिया। उसने उत्तर और दक्षिण

विहार को मिलाकर पटने में राजधानी कायम की। तब से इस स्थान की महत्ता जाती रही।

हाजीपुर के टोलों और महल्लों के नाम से जान पड़ता है कि यह एक बहुत बड़ा तथा धनधान्य पूर्ण शहर था और यहाँ पर मुसलमानों का खूब दबदबा था। हाजी इलियास की कब्र पुल के पास अब भी कायम है जहाँ साल में एक बार बहुत बड़ा मेला लगता है। पुराने किले के चिन्ह उसके पास ही नजर आते हैं। यहीं पर जामा मस्जिद है। इसके फाटक पर के एक लेख से मालूम पड़ता है कि इसे १५८७ में मकसुस शाह ने बनवाया था। एक दूसरे फाटक पर अरबी में एक लेख है जो पढ़ा नहीं जाता। यह मस्जिद एक हिन्दू मन्दिर के स्थान पर और हिन्दू मन्दिर के सामान से बना है। किले के अहाते के भीतर करीब सौ वर्ष पहले का बना एक सराय है जिसके बीच में एक पुराना दोमंजिला बौद्धकालीन मंदिर है जिसमें शिव की स्थापना है। मंदिर के ऊपर चारो ओर लकड़ी पर अश्लील चित्र खुदे हैं।

जरीडीह—भगवानपुर रेलवे स्टेशन से ३ मील दक्षिण बिथौली नामक गाँव में जरीडीह नाम का एक टोल्हा है। कहते हैं कि मुसलमानी काल के बहुत पहले यहाँ चेरो राजाओं का किला था। इसके चारो ओर गाँवों में दुसाध लोग रहते थे। ब्राह्मण लोगों के यहाँ आने पर एक बार पश्चिम की ओर से एक दुश्मन इन पर चढ़ाई करने के लिये आया। चेरो सरदार लड़ने को आगे बढ़ा। किले में अपने परिवार के लोगों से कहता गया कि अगर वे लड़ाई में झंडा को गिरा हुआ देखें तो समझें कि मैं मारा गया और तब वे भी दुश्मनों के हाथ पड़ने की अपेक्षा किले में आग लगा कर जल मरना अच्छा समझें। जब लड़ाई खतम हो गयी तो झंडा रखनेवालों ने झंडे को गिरा

दिया। यह देख किले के सब लोग किले में आग लगाकर जल मरे। जब राजा वापस लौटा तो किले को जलते हुए देखकर खुद भी उसमें कूद कर जल मरा। सन् १८८०-८१ में यहाँ खोदाई हुई थी जिसमें किले की दीवाल खोद निकाली गयी थी। उसका घेरा ३,००० फीट नापा गया था। यहाँ पीतल की कई मूर्त्तियाँ मिली थीं। इनमें दो मूर्त्तियों के लेख से मालूम होता था कि ये महीपालदेव के समय की बनी हैं।

पातेपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बसाढ़—हाजीपुर से २० मील उत्तर-पच्छिम २५°५९' उत्तरीय अक्षांश और ८५°८' पूर्वीय देशान्तर पर बसाढ़ एक गाँव है। लिच्छवियों के संघ-राज्य की राजधानी वैशाली यही स्थान समझा जाता है। भगवान बुद्ध यहाँ तीन बार आये थे। बौद्धों की द्वितीय महासभा यहीं हुई थी और यह स्थान बहुत दिनों तक बौद्ध धर्म का एक मुख्य अड्डा रहा। जैनियों के लिये भी वैशाली पवित्र भूमि रही है, क्योंकि जैन धर्म के प्रवर्तक बुद्धदेव के समकालीन भगवान महावीर की जन्म-भूमि यही थी।

लिच्छवियों के स्मारक स्वरूप एक विशाल टील्हे के सिवा यहाँ और कुछ नहीं रह गया है। इस टील्हे को स्थानीय लोग राजा विशाल का गढ़ कहते हैं। जेनरल कनिंघम ने १८७१ ई० में इस स्थान को देखकर लिखा था कि वैशाली के भग्नावशेषों में यहाँ एक उजाड़ किला और एक टूटा-फूटा स्तूप है। किला अब ईंट से भरा हुआ टील्हे के रूप में रह गया है जिसके चारो कोने पर चार बुर्जों की निशानी है। टील्हे के चारो तरफ खाई है। किले की दीवाल और चारो बुर्जों का स्थान टील्हे के और स्थानों से कुछ ऊँचा है। टील्हे की ऊँचाई सरजमीन से सात आठ फीट है। किले का मुख्य द्वार दक्षिण की ओर था

जहाँ खाई पर बाँध अब भी दिखाई पड़ता है। किले का घेरा करीब एक मील है। यह उत्तर से दक्षिण लगभग १७०० फीट लम्बा और पूरब से पश्चिम ८०० फीट चौड़ा है। खाई की चौड़ाई १२५ फीट है। किले के अन्दर एक हाल का बना मंदिर है।

किले के दक्षिण-पच्छिम कोने से १००० फीट की दूरी पर एक टूटा-फूटा स्तूप है जिसकी ऊँचाई करीब २४ फीट है। इस स्तूप के सिरे को समतल बनाकर पीछे इसपर कई मुसलमानी कब्र बनायी गयीं। सबसे बड़ी कब्र मीर अब्दाल की है जो करीब ५०० वर्ष की पुरानी है। इसके पास एक विशाल वटवृक्ष है। यहाँ चैत के महीने में एक बहुत बड़ा मेला लगता है। जेनरल कनिंघम का कहना है कि चूंकि यह मेला किसी मुसलमानी महीने में न लग कर हिन्दू महीने में लगता है, इससे अनुमान किया जा सकता है कि सम्भवतः यह मेला बहुत दिन पहले से किसी बौद्ध के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिये उसके समाधि-स्थान पर लगाया जाता हो।

सन् १९०४ में किले की खोदाई में यहाँ पुराने मकानों के चिन्ह मिले हैं। कुछ मकान तो सिर्फ कई शताब्दी पहले के और कुछ बहुत पुराने मालूम पड़ते थे। पुराने मकान ईसा की तीसरी शताब्दी के या इसके भी पहले के हो सकते हैं। राख और जलती हुई लकड़ियाँ सब जगह पायी गयीं जिससे अनुमान किया जाता है कि शायद यह स्थान लूटा गया हो और यहाँ आग लगा दी गयी हो। एक कोठरी में यहाँ बर्तनों के टुकड़ों, हड्डियों, जले चावलों और राखों में मिली हुई ७०० से अधिक खुदी हुई मोहरें (सील) मिलीं थीं। इन मोहरों में कुछ तो सरकार की और कुछ महाजनों तथा सौदागरों की थीं। दो मोहरों पर तिरहुत

राजा विशाल का गढ़, बसाढ़ (मुजफ्फरपुर)

बसाढ़ के प्राचीन स्तूप पर शाह काज़िन की दरगाह

अशोक स्तम्भ, कोल्हुआ (बसाढ़ के पास)

का पुराना नाम तीरभुक्ति खुदा था। ये मोहरें ४ थीं या ५ वीं शताब्दी की मालूम होती थीं।

बसाढ़ में बहुत से तालाब हैं। एक तालाब का नाम वामन तालाब है। यहाँ लोग कहते हैं कि पुराण प्रसिद्ध राजा बलि यहीं हुए थे और यहीं वामन भगवान ने बलि के गर्व को नाश किया था।

बसाढ़ के ३ मील उत्तर-पच्छिम और बखरा गाँव से एक मील दक्षिण-पूरब कोलहुआ नामक स्थान में बहुत से प्राचीन-कालीन भग्नावशेष हैं। इनमें एक पत्थर का स्तम्भ, एक टूटा-फूटा स्तूप, एक पुराना तालाब और कुछ पुराने मकानों के चिन्ह हैं। इस स्थान के विषय में चीनी यात्री ह्वन् च्वाङ् ने लिखा था कि वैशाली के उत्तर-पश्चिम भाग में अशोक का बनवाया एक स्तूप और ५०-६० फीट ऊँचा एक स्तम्भ है जिस पर सिंह की मूर्त्ति बनी हुई है। स्तम्भ के दक्षिण एक तालाब है जो भगवान् बुद्ध के यहाँ आने के अवसर पर उन्हीं के लिये खोदा गया था। तालाब से कुछ पश्चिम एक दूसरा स्तूप है जहाँ बन्दरों ने भगवान बुद्ध को मधु प्रदान किया था। तालाब के उत्तर-पश्चिम कोने पर बन्दर की एक मूर्त्ति बनी हुई है। ह्वन् च्वाङ् की लिखी हुई ये सब चीजें अब भी देखने में आती हैं। तालाब को आजकल लोग रामकुंड कहते हैं। स्तम्भ पानी की सतह से केवल ४५ फीट ऊँचा है। सम्भव है पहले से यह कुछ और धस गया हो। जमीन से ऊपर इसकी ऊँचाई सिर्फ २२ फीट है। इस पर अशोक का लिखा कोई लेख नहीं है। बहुत से दर्शकों ने इस पर अपने नाम आदि लिख दिये हैं। १७९२ ई० में एक अंगरेज ने भी अपना नाम इस पर लिख दिया था। यह स्तम्भ उन ६ स्तम्भों में से एक है जिन्हें अशोक ने बुद्ध के पवित्र स्थानों को दर्शन करने जाते समय उनके मुख्य-मुख्य स्थानों पर बनवाया था।

स्तम्भ के पास अशोक-स्तूप समझे जानेवाले टील्हे के ऊपर एक हाल के बने मंदिर में पालवंश के समय की कुछ बौद्ध-मूर्त्तियाँ हैं। स्तम्भ के पच्छिम भी दो टील्हे हैं। इस स्थान के चारो ओर कई मीलों तक बहुत से टील्हे और पुराने भग्नावशेष हैं जो वैशाली के वैभव को बता रहे हैं।

महनार—यह स्थान हाजीपुर से २० मील दक्षिण-पूरब बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की मुख्य लाइन पर महनार रोड स्टेशन के पास है। यहाँ एक बड़ा बाजार और थाने का सदर आफिस है। कहते हैं कि पहले हाजीपुर शहर यहाँ तक फैला हुआ था।

महुआ—यहाँ थाने का सदर अफिस है।

राघोपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

लालगंज—हाजीपुर से १२ मील उत्तर-पच्छिम गण्डक के किनारे यह एक शहर है। यहाँ एक बड़ा बाजार, अस्पताल, हाई स्कूल, थाना और म्युनिसिपल अफिस हैं। १९३१ की गणनानुसार इस शहर की जन-संख्या ९,१९२ है। लालगंज से दक्षिण सिंगिया एक गाँव है। बिहार में पहले-पहल यहीं पर १६७६ ई० के कुछ वर्ष पूर्व अंगरेजों की शोरा की फैक्टरी खुली थी।

वैशाली—दे० "बसाढ़"।

सिंगिया—दे० "लालगंज"।

हजरत जनदहा—महनार से ९ मील उत्तर यह एक गाँव है। यहाँ तम्बाकू का व्यापार खूब होता है। यहाँ एक मुसलमान फकीर दीवान शाह अली की कब्र है। मुसलमान इस स्थान को पवित्र समझ कर इसे हजरत जनदहा कहते हैं। इस फकीर के सम्बन्ध में तरह-तरह की कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। इसका चाचा मकदुम शाह अब्दुल फतेह भी बहुत नामी फकीर था। इसकी कब्र हाजीपुर में है।

दरभंगा जिला

दरभंगा सब-डिविजन

दरभंगा—जिले का प्रधान नगर दरभंगा बी० एन० डबल्यू० रेलवे लाईन पर छोटी बागमती नदी के किनारे बसा हुआ है। दरभंगा शब्द द्वारवंग या दरेवंगाल शब्द से बना हुआ बताया जाता है, जिसका अर्थ है बंगाल का दरवाजा। लेकिन बंगाल से दूर होने के कारण इस अर्थ में दरभंगा शब्द की उत्पत्ति होना ठीक नहीं मालूम होता। कुछ लोग कहते हैं कि इस शहर को दरभंगी खाँ नामक एक मुसलमान लुटेरा ने बसाया था इस कारण इसका नाम दरभंगा पड़ा। कमला और बागमती नदी की बाढ़ से बरसात के दिनों में इस शहर के चारो ओर पानी हो जाता है। इसलिये १८८४ ई० में ही सरकारी दफ्तर और कचहरियाँ दरभंगा से हटाकर उससे कुछ दक्षिण लहेरियासराय नामक स्थान में लायी गयीं। उसके बाद दरभंगा से लहेरियासराय तक लगातार शहर बस गया। सन् १९०६ में जब वहाँ जजी कचहरी खुली तो लहेरियासराय की रौनक और बढ़ गयी। टाउनहाल, अस्पताल और मेडिकल स्कूल भी लहेरियासराय में ही हैं। दरभंगा शहर में महाराजाधिराज दरभंगा का आनन्द-बाग, मोती महल, दरभंगाराज-अस्पताल और कई बड़े-बड़े मंदिर हैं। इस समय शहर पाँच छः मील तक फैला हुआ है। इस शहर के अन्दर तीन बड़े-बड़े और करीब ४०० छोटे-छोटे तालाब हैं। बड़े पोखरों में हड़ाही पोखर, दीघी तालाब और

गंगासागर की गिनती है। कुछ लोग अनुमान करते हैं कि मुसलमानी काल में सैनिकों के वासयोग्य ऊँची भूमि बनाने के लिये ये तालाब खुदवाये गये थे। हड़ाही पोखर के सम्बन्ध में एक विचित्र किम्वदन्ति भी है। कहते हैं कि राजा शिव सिंह के समय में दो सास-पतोहू सिर ।पर मछली की टोकरी लिये जा रही थीं कि एक चील सास की टोकरी में से एक बड़ी मछली लेकर भागा, पर वह उसको लेकर बहुत मुश्किल से उड़ सका। इस पर सास को तो मछली खोने का बहुत अफसोस हुआ पर पतोहू हँसने लगी। सास ने हँसने का कारण पूछा, लेकिन पतोहू बताने को तैयार नहीं हुई। इस पर झगड़ा बढ़ा। अन्त में राजा के पास अपील की गयी। वहाँ भी पतोहू कारण बताने को तैयार नहीं हुई। कहा कि यदि मैं ठीक-ठीक कारण बता दूंगी तो मैं मर जाऊँगी। राजा ने नहीं माना। इस पर लाचार होकर उसने कहा कि मैं महाभारत के समय में एक चील थी। युद्ध से मैं एक मृत व्यक्ति की एक विशाल बाहु को, जिसमें एक भारी स्वर्ण कंकण भी बँधा था, ‧आसानी से उठाकर यहाँ ले आयी थी। उसकी हड्डी अब भी गड़ी पड़ी है। उसने कहा कि हँसी मुझे इसलिये आयी कि मैं तो उतने भारी बोझ को उठा लायी पर यह चील एक मामूली मछली को भी आसानी से नहीं ले जा सका। इतना कह वह मर गयी। राजा ने बताये हुए स्थान को खोदवाया तो स्वर्ण कंकन सहित उसे बाँह का हाड़ मिला। कहते हैं कि जमीन खोदने से जो वहाँ एक पोखर बना वही हड़ाही पोखर नाम से मशहूर हो गया। लेकिन हड़ाही पोखर के सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है, जैसा पहले भी लिखा जा चुका है, कि इसे राजा हरिसिंह देव ने खोदव।या था। इसी तरह गंगासागर राजा गंगा देव का खोदवाया बताया जाता

है। खैर, जो हो इतने बड़े-बड़े और इतने अधिक पोखरों का होना इस शहर की एक विशेषता है।

सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार इस शहर की जन-संख्या ६०,६७६ है जिसमें ४२,२१७ हिन्दू, १८,३०८ मुसलमान और १५१ ईसाई हैं। १९३४ ई० के भूकम्प से इस शहर को बहुत क्षति पहुँची थी। इसके बाद शहर का मुख्य भाग नये सिरे से निर्मित हुआ है।

समूचे बंगाल और बिहार के अन्दर दरभंगा राज सबसे बड़ी जमींदारी है। इस राजवंश की उत्पत्ति १६ वीं सदी में महेश ठाकुर नामक एक व्यक्ति से बतायी जाती है। कहते हैं कि जब्बलपुर से आकर उन्होंने राजा शिवसिंह के वंशजों के यहाँ पुरोहित का काम करना आरम्भ किया था। उस समय शिवसिंह के वंशजों का तिरहुत पर नाम मात्र का ही अधिकार रह गया था। अकबर बादशाह को किसी तरह खुश कर महेश ठाकुर ने एक छोटी सी जमींदारी हासिल की वही आज दरभंगा राज के रूप में है। १७०० ई० में इस वंश के राघवसिंह को पहले-पहल बंगाल के नवाब अलीवर्दी खाँ द्वारा राजा की उपाधि मिली। इन्हें एक लाख रुपया सालाना मालगुजारी पर तिरहुत सरकार का मुकर्ररी पट्टा भी दिया गया। जिस समय बिहार प्रान्त पर अंगरेजों का अधिकार हुआ उस समय दरभंगा राज के मालिक नरेन्द्रसिंह थे। उनके दत्तक पुत्र प्रतापसिंह अपना निवासस्थान मधुबनी के पास भौरा नामक स्थान से हटाकर दरभंगा ले आये। उनके बाद उनके भाई माधवसिंह राजा हुए। इस वंश में इनके उत्तराधिकारी छत्रसिंह को पहले-पहल महाराजा की उपाधि मिली। इन्होंने अपने बड़े लड़के रुद्रसिंह को राजा बनाया और छोटे लड़के को

भरण-पोषण के लिये कुछ गाँव दिये। पर छोटे लड़के ने आधे राज का दावा किया। अन्त में कोर्ट से यही फैसला हुआ कि राज का अधिकारी ज्येष्ठ पुत्र, या ज्येष्ठ वंशधर ही हुआ करेगा। भाई या दूसरे लोगों को जीविका के लिये थोड़ी सी जमीन-जायदाद मिलेगी। तब से इसी नियम के अनुसार काम हो रहा है। यह राज कुछ समय तक कोर्ट आफ वार्डस के प्रबन्ध में चला गया। पीछे लक्ष्मीश्वर सिंह राजा हुए। इनके बाद इनके छोटे भाई सर रामेश्वर सिंह राज के मालिक बने। इनको राजा बहादुर की, फिर महाराज बहादुर की और अन्त में महाराजाधिराज की खानदानी उपाधि मिली। इनके बाद इनके बड़े लड़के महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह इस समय गद्दी पर हैं। छोटे लड़के महाराजकुमार विश्वेश्वरसिंह को निजी खर्च के लिये कुछ अलग सम्पत्ति मिली है। राज की सालाना आमदनी ८० लाख रुपया है। राज १९ सर्कलों में बँटा है और प्रत्येक का प्रबन्ध भार एक एक मैनेजर पर रहता है। राज का सदर आफिस दरभंगे में है। राज की जमींदारी दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, गया, पूर्णिया और भागलपुर जिले में करीब २५ हजार वर्ग मीलों में है।

जाले—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बहेरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

लहेरियासराय—दे० "दरभंगा"।

मधुवनी सब-डिविजन

मधुवनी—दरभंगा से १६ मील उत्तर-पूरब सकरी-जयनगर लाइन के बीच यह इस नाम के सब-डिविजन का सदर आफिस है। लोगों का अनुमान है कि यहाँ पहले वन रहा होगा जहाँ

मधुमक्खियाँ बहुत रहती होंगी, शायद इसी कारण इस स्थान का नाम मधुवनी पड़ा। यहाँ वन पहले रहा हो, पर मधुमक्खियों के कारण मधुवन नाम पड़ने की कल्पना करना बिल्कुल ठीक नहीं हो सकता। एक सुन्दर वन को भी मधुवन कहा जा सकता है। व्रज का मधुवन प्रसिद्ध है। जो हो, अब जिले में दरभंगा के बाद मधुवनी ही सबसे बड़ा शहर रहा है। इसकी जन-संख्या १८,७८९ है जिसमें १३,३०० हिन्दू और ५,४८३ मुसलमान हैं। यहाँ म्युनिसिपैलिटी भी है। सब-डिविजन के आफिसों के अलावे यहाँ हाई स्कूल तथा अस्पताल वगैरह भी हैं। यहाँ दरभंगा राजवंश के कुछ लोग रहते हैं जिन्हें लोग मधुवनी के बाबू कहते हैं। ये लोग १८ वीं सदी के अन्त में हुए महाराज माधवसिंह के वंशज हैं। मधुवनी के आसपास मखाना बहुत होता है। यहाँ का दृश्य भी सुन्दर है।

कपिलेश्वर स्थान—मधुवनी के पास यह हिन्दुओं का एक तीर्थस्थान है। यहाँ शिवजी का एक बहुत पुराना मंदिर है, जहाँ दूर दूर के हिन्दू दर्शन करने और जल चढ़ाने आते हैं।

खजौली—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

गिरिजा स्थान—मधुवनी या कमतौल स्टेशन से सात आठ कोस की दूरी पर फुलहर नामक ग्राम में गिरिजा देवी का मंदिर है। कहते हैं कि यहीं राजा जनक का गिरिजा-मंदिर था जहाँ सीताजी पूजा के लिये आती थी।

जनकपुर—यह स्थान अब नेपाल राज्य की सीमा के अन्दर है। कहते हैं यहीं राजा जनक की राजधानी थी और रामचन्द्र जी का विवाह हुआ था। बुन्देल खंड प्रदेश के टिकमगढ़ की महारानी ने नौ लाख रुपये में यहाँ एक बहुत ही सुन्दर जनकभवन बनवाया है। यह हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। रामचन्द्र

जी के जन्म और विवाह की यादगारी के लिये चैत (राम-नवमी) और अगहन मास में यहाँ मेला लगता है। यहाँ से कई मील उत्तर धनुखा नामक एक स्थान है जहाँ सीता का स्वयंवर होना बताया जाता है। यहाँ पत्थर के धनुष के टुकड़े पड़े हुए मिलते हैं।

जयनगर—दरभंगा जिले के अन्दर नेपाल राज्य की सीमा के पास यह एक छोटा शहर है, जहाँ थाने का सदर आफिस है। सकरी से बी० एन० डब्ल्यू० की एक लाइन यहाँ तक आयी है। यह व्यापार का केन्द्र है। इस नगर की जन-संख्या ६,५९८ है।

झंझारपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

दुर्गास्थान—मधुबनी तथा कमतौल स्टेशन से कुछ दूरी पर उचैठ नामक एक गाँव है। कहते हैं कि यहाँ प्राचीनकाल में एक विद्यापीठ और पुस्तकालय था। यहाँ दुर्गा का मंदिर है। दन्तकथा है कि इसी दुर्गा देवी की कृपा से कालिदास ने कवित्व शक्ति प्राप्त की थी।

फुलपरास—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बेनीपट्टी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

मधवापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

मधेपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

राजनगर—महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह के वक्त में दरभंगा राज की राजधानी दरभंगा से हटकर राजनगर चली आयी थी। यहाँ एक विशाल राजप्रासाद और कई मंदिर बने हैं। इस राजप्रासाद के बनाने में करोड़ों का खर्च बताया जाता है। कहते हैं कि इसके मुकाबले का प्रान्त में कोई दूसरा भवन नहीं है।

राजा बलि का गढ़, बलिराजपुर (दरभंगा)

विस्फीग्राम में कविकोकिल विद्यापति का वासस्थान (दरभंगा)
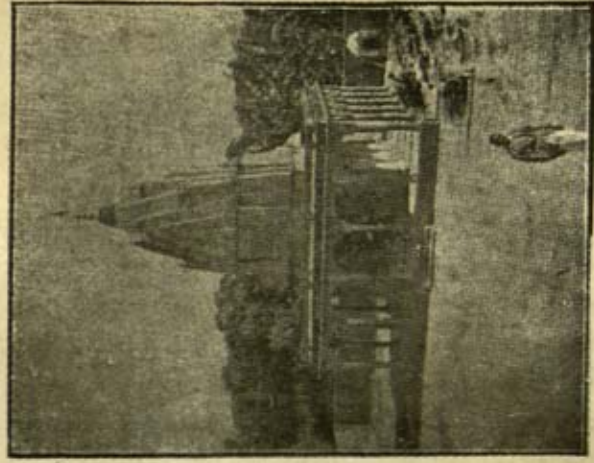
विद्यापति की समाधि पर शिवमंदिर, वाजिदपुर (दरभंगा)

—विद्यापति काव्यालोक से

राजप्रासाद के सामने एक सुन्दर फव्वारा, एक तालाब और काली देवी का मंदिर है। यह मंदिर संगमर्मर का बना हुआ है। आसिन में नवरात्र के समय यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। यहाँ महाराजा दरभंगा स्वयं बड़ी धूमधाम से पूजा करते हैं। राजप्रासाद के अन्दर हाल का बना चाँदी का एक बहुत सुन्दर तख्त है। इसके बीच में सिंहासन बना है। तख्त १६ पावों पर है। हर पावे पर सिंह की मूर्ति और उसके ऊपर हाथी पर खड़ी स्त्री-मूर्ति है। ये सब मूर्त्तियाँ ठोस चाँदी की बनी हुई हैं। तख्त के अगल-बगल बहुत सुन्दर चित्रकारी है। सिंहासन का कमरा भी बहुत सुन्दरता से सजा है।

राजेश्वरी स्थान—यह स्थान मधुबनी स्टेशन से दो-ढाई कोस उत्तर डोकहर ग्राम में है। यहाँ गौरीशङ्कर की युगल-मूर्त्ति है।

लदनियाँ—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

लौकाही—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

शिलानाथ—जयनगर स्टेशन से दक्षिण-पश्चिम कमला नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ एक स्थान ददरी-क्षेत्र नाम से प्रसिद्ध है। कार्तिक पूर्णिमा को यहाँ मेला लगा करता है। हिन्दू लोग दूर-दूर से इस क्षेत्र में पहुँचते हैं।

सौराठ—मधुबनी से चार या पाँच मील पश्चिम यह एक गाँव है। यहाँ विवाह-सम्बन्ध ठीक करने के लिये हर साल लग्न के अन्त में वर और कन्या-पक्ष के लोग एकत्र होते हैं जिसे सभा कहते हैं।

हरलाखी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

समस्तीपुर सब-डिविजन

समस्तीपुर—यह नगर गंडक नदी के किनारे समस्तीपुर सब-डिविजन का सदर आफिस है। यहाँ की जनसंख्या ६,८६१ है। यहाँ बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का एक मुख्य जंकशन स्टेशन है जहाँ से मुजफ्फरपुर, दरभंगा, बरौनी और खगड़िया की ओर लाइनें गयी हैं। कुछ वर्ष पहले यहाँ रेलवे कम्पनी का एक कारखाना था जो अब गोरखपुर चला गया है। यह नगर साफ-सुथरा और सुन्दर है। यहाँ म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है। यह जिले में व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यहाँ सरकारी कचहरियों के अलावे अस्पताल और हाई स्कूल हैं। यहाँ चीनी का एक बड़ा कारखाना है। यहाँ से दो मील उत्तर जूट की एक मिल है।

कुशेश्वर स्थान—यह स्थान हसनपुर-रोड स्टेशन से ८ मील पूरब जीवछ नदी के किनारे है। यहाँ कुशेश्वर महादेव का मंदिर है। दूर-दूर से हिन्दू लोग यहाँ दर्शन के लिये आते हैं। शिवरात्रि के अवसर पर यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है।

ताजपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

दलसिंगसराय—यह जिले में व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ तम्बाकू और मिरचाई का व्यापार विशेष रूप से होता है। ये चीजें यहाँ से बाहर भेजी जाती हैं। यहाँ दाल और तेल की मिलें हैं। एक अमेरिकन कम्पनी का यहाँ बीड़ी और सिगरेट का कारखाना है। यहाँ बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का स्टेशन है।

नरहन—यह एक गाँव है जहाँ एक प्रतिष्ठित घराने के जमींदार रहते हैं। दरभंगा जिले में दरभंगा राज के बाद नरहन राज का ही स्थान है। यह राज करीब साढ़े सत्तावन हजार

एकड़ के रकबे में है। इस राज का कुछ भाग मुजफ्फरपुर, मुंगेर और पटना जिले में भी पड़ता है। इसके मालिक भूमिहार ब्राह्मण हैं। इन लोगों ने करीब चार सौ वर्ष पहले यह जमींदारी कायम की थी। इस जमींदारी का मुख्य भाग सरैसा परगने में पड़ता है; इसलिये इसके मालिक सरैसा के राजा भी कहलाते हैं।

पूसा—दरभंगा जिले में यह एक सबसे प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ भारत सरकार के प्रबन्ध में कुछ वर्ष पहले कृषि-महाविद्यालय और प्रयोगशाला की स्थापना हुई थी। सन् १९०३ में अमेरिका के दानवीर श्रीयुत हेनरी फेल्पस ने भारत के किसी सार्वजनिक कार्य, विशेषकर वैज्ञानिक खोज-सम्बन्धी कार्य के लिये २० हजार पौण्ड दान दिया था। इसी रकम से पूसा में यह संस्था कायम की गयी थी। भारतवर्ष में यह कृषि-कालेज सबसे बड़ा समझा जाता था। कहते हैं कि इसके भवन बनाने में ९ लाख रुपये खर्च हुए थे। इस कालेज में सभी प्रान्तों के विद्यार्थी शामिल होते थे। यहाँ का कृषि-सम्बन्धी अनुसंधान-कार्य कई विभागों में बँटा था; जैसे—कृषि-विभाग, वनस्पति-विभाग, रसायन-विभाग, जीवाणु-विभाग आदि। यहाँ खेती के सब काम बड़े-बड़े कल-पुर्जों और इंजनों से होते थे। लेकिन, अभी कुछ वर्ष हुए कृषि-कालेज उठकर दिल्ली चला गया है। हाँ, बिहार-उड़ीसा के कृषि-सम्बन्धी कुछ कामों के लिये यहाँ दो अफसर रहते हैं।

बालेश्वरनाथ—बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे के कटिहार-कानपुर लाइन पर बाजिदपुर स्टेशन के पास बालेश्वरनाथ महादेव का मन्दिर है। कहते हैं कि सुप्रसिद्ध कवि विद्यापति

ने इसी स्थान पर गंगा के किनारे अपना अन्तिम समय बिताया था। इस घटना के बहुत दिन बाद यहाँ शिवलिंग की स्थापना हुई थी। यहाँ प्रति रविवार को मेला लगता है।

मोहिउद्दीन नगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

रोसड़ा—यह एक छोटा शहर है। यहाँ की जन-संख्या ८,८६६ है। यहाँ थाने का सदर आफिस और बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का स्टेशन है।

वारिस नगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

विधि स्थान—रोसड़ा से करीब ८ कोस पूरब विधान नामक एक स्थान है जो पहले विधि स्थान कहलाता था। यहाँ ब्रह्माजी की एक प्राचीन मूर्त्ति स्थापित है।

सिंगिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सारन जिला

छपरा सबडिविजन

छपरा—जिले का यह प्रधान शहर २५° ४७' उत्तरीय अक्षांश और ८४° ४४' पूर्वीय देशान्तर पर बसा है। यह जिले का सदर आफिस है। शहर से कुछ दूरी पर सरयू नदी बहती है। पहले गंगा और सरयू का संगम इसी स्थान पर था। उस समय यहाँ बाढ़ बराबर आया करती थी, जिससे लोग फूस से छाये छप्पर का घर बनाते थे। कहते हैं कि इसी छप्पर शब्द से छपरा शब्द की उत्पत्ति हुई। यह शहर पूरब-पच्छिम करीब पाँच-छः मील लम्बा और उत्तर-दक्षिण करीब एक मील चौड़ा है। पुराना शहर पच्छिम की ओर है। पूरब का भाग हाल का और सरकारी कचहरियों के कारण बसा हुआ है। सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या ४७,४४८ है, जिसमें ३५,८७३ हिन्दू, ११,५०५ मुसलमान, ६४ ईसाई और ६ जैन हैं।

इस शहर में रतनपुरा नाम का एक महल्ला है। कहते हैं, हिन्दू-काल के राजा रतनसेन की यहाँ राजधानी थी। उनका बनाया रत्नेश्वर नाथ का एक मन्दिर था जहाँ अब धर्मनाथजी का मन्दिर है। शहर के पच्छिमी छोर पर एक सुंदर और बड़ा सराय है जहाँ फुलवाड़ी और तालाब भी हैं। राजेन्द्र-कालेज इसी सराय में खुला है। कहते हैं कि पहले यहाँ अङ्गरेज, डच, फ्रांसीसी और पोर्तुगीजों की फैक्टरियाँ थीं। बनियापुर सड़क के किनारे करिंगा के पास डचों और अँगरेजों के पुराने कब्रगाह

हैं, जिनपर सबसे पुराने १७१२ ई० के स्मृति-लेख हैं। अँगरेजों का एक नया कब्रगाह अलग ,बना है। छपरे में घुड़सवार सैनिकों का मुख्य अड्डा है। यहाँ दो रेलवे स्टेशन हैं—एक छपरा और दूसरा छपरा-कचहरी।

अम्बिका स्थान—दे० आमी

आमी—छपरा से सात कोस पूरब यह एक गाँव है। इसे अम्बिका-स्थान भी कहते हैं। यहाँ अम्बिका भवानी का मंदिर है। पुराण-प्रसिद्ध कथा है कि जब दक्ष-कन्या सती ने अपने पति शिवजी के अपमान के कारण अपने पिता के यज्ञ में प्राण-त्याग किया था तो शिवजी उनके शव को लेकर क्रोधवश इधर-उधर घूमने लगे थे। जगत के नाश होने के भय से विष्णु ने अपने चक्र से शव को खंड-खंड कर दिया जो भिन्न-भिन्न स्थानों में जा गिरा। कहते हैं कि यहाँ भी एक खंड गिरा था जिसके कारण इस स्थान की प्रसिद्धि हुई। पास में ही यज्ञकुंड का स्थान भी बताया जाता है। चैत में यहाँ मेला लगता है। स्थानीय लोग बताते हैं कि यहाँ राजा सुरथ की राजधानी थी।

एकमा—यह एक गाँव है जो व्यापार का केन्द्र है। यहाँ रेलवे स्टेशन, थाना, रजिस्ट्री आफिस, डाकबँगला और हाई स्कूल हैं।

करिंगा—दे० छपरा

गरखा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

गोदना—दे० रिवीलगंज

चिराँद या चिराँद-छपरा—छपरा से तीन कोस पूरब सरयू के किनारे यह एक गाँव है। पहले गंगा इसके पास से ही बहती थी। प्राचीन काल में यह एक बड़ा शहर था। शहर के चिह्न इसके बड़े-बड़े टील्हों से अब भी प्रकट हैं। जिस ऊँचे टील्हे पर चार मंदिर बने हुए हैं वह एक पुराने किले का

भग्नावशेष है। पास में जीवचक्कुंड और ब्रह्मकुंड नाम के दो पुराने छोटे तालाब हैं। कहते हैं, यहाँ च्यवन ऋषि का आश्रम था। आश्रम के स्थान पर आजकल कार्तिक पूर्णिमा में मेला लगता है। महाभारत-काल के प्रसिद्ध राजा मयूरध्वज की यहाँ राजधानी बतायी जाती है। मयूरध्वज की मृत्यु महाभारत-युद्ध में हुई थी। चिरांद के मुख्य टीले पर एक पुरानी मस्जिद है जो प्राचीन काल के हिन्दू-मंदिरों के सामान से बनी हुई मालूम होती है। फाटक पर तीन लाइन में कुछ लिखा हुआ है। उसमें १४९३ से १५१९ ई० के बीच बंगाल पर शासन करनेवाले हुसेन शाह का भी नाम है। अनुमान किया जाता है कि उसी ने यहाँ के हिन्दू-मन्दिरों को तोड़वाकर मस्जिद बनवायी थी।

कहते हैं कि चिरांद या चेरांद को आदिम जाति चेरो लोगों ने बसाया था जिनका इस जिले के अन्दर किसी समय बोल-बाला था। यहाँ बहुत-सी बौद्धकालीन मूर्तियों के पाये जाने के कारण इस बात में सन्देह नहीं रहता कि यहाँ प्राचीन बौद्ध नगर था।

डुमरसन—छपरा-सत्तारघाट सड़क पर यह एक गाँव है। यहाँ रामनवमी में मेला लगता है जिसमें गाय, बैल, भैंस, घोड़े आदि मवेशी की खरीद-बिक्री होती है।

डोमैगढ़—सरयू के किनारे यह एक गाँव है जो शाल लकड़ी और नाव के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। फकीर डोम पीर के नाम पर इस बस्ती का नाम डोमैगढ़ पड़ा है।

दरियागंज या डोरीगंज—छपरा से सात मील पूरब यह एक गाँव है। पहले गंगा और सरयू का संगम इसी स्थान पर था और लोग यहाँ पर्व-तिथियों में स्नान के लिये आते थे। कहते हैं कि पहले चिरांद नगर का यह एक महल्ला था।

दिघवारा—इस नाम के रेलवे स्टेशन के पास यह एक गाँव है जो व्यापार का केन्द्र है। यहाँ थाना, हाईस्कूल, पोस्ट-आफिस और डाकबँगला हैं।

परसा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बनियापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

महरौरा—मिरजापुर थाने में यह एक गाँव है जहाँ चीनी की मिल है।

मशरक—यहाँ थाना और रेलवे स्टेशन हैं।

महेन्द्रनाथ—एकमा रेलवे स्टेशन के पास तोन कोस के घेरे में कमलदह नामक तालाब है जहाँ कमल बहुतायत से मिलता है। इस तालाब के किनारे महेन्द्रनाथ महादेव का मंदिर है।

माँझी—छपरा-बनारस रेलवे लाइन पर सरयू के किनारे इस गाँव में एक पुराने किले का भग्नावशेष है। कहते हैं कि इसे चेरो-वंश के माँझी मकरा ने बनवाया था। लेकिन, कुछ लोग यह भी बताते हैं कि यहाँ का राजा चेरो नहीं, बल्कि दुसाध या मल्लाह था। पीछे यह किला बलिया जिले के अन्दर हल्दी के हरिहोवंश राजपूतों के हाथ में आ गया। कहते हैं कि शाहजहाँ ने इन लोगों से यह किला छीनकर फैजाबाद के पास गढ़ फुलकंद के खेमरजीत राय को कुछ और जागीर के साथ दे दिया। खेमरजीत राय पीछे मुसलमान हो गया था। १८३५ ई० तक माँझी तथा दूसरे मौजे इस खान्दान के शहमतअली खाँ के हाथ में थे। इस गाँव में एक विशाल वटवृक्ष है। कहते हैं कि स्थानीय मुसलमान शासक के आक्रमण करने पर यहाँ गांगो पँडाइन नाम को एक युवती विधवा पृथ्वी में प्रवेश कर गयी थी और वहाँ एक विशाल वटवृक्ष उग आया था। स्त्रियाँ इस वृक्ष की पूजा करती हैं। माँझी में थाना और रेलवे स्टेशन हैं।

मिरजापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

मुहम्मदपुर—छपरा से २३ मील पच्छिम यह गाँव व्यापार का केन्द्र है। यहाँ ८ शिवालय हैं।

रिवीलगंज—छपरा-बनारस रेलवे लाइन पर सरयू के किनारे छपरा से छः मील पच्छिम २५° ४७' उत्तरीय अक्षांश और ८४° ३९' पूर्वीय देशान्तर पर यह एक छोटा शहर है जहाँ की जनसंख्या ८, ८१२ है। यहाँ का वर्तमान बाजार १७८८ ई० में ईस्ट-इण्डिया कम्पनी के चुंगी-कलक्टर मि० रिवील का बसाया हुआ है। इसका पुराना नाम गोदना है। मि० रिवील की कोठी और कब्र इस समय भी यहाँ देखने में आती हैं। यहाँ एक अँगरेज सेनाध्यक्ष की भी कब्र है जो १८४६ ई० में मरा था।

कहते हैं कि गोदना नाम गौतम शब्द से बना है। यहाँ प्राचीन काल में सरयू के किनारे न्याय-शास्त्र के रचयिता गौतम ऋषि के आश्रम का होना बताया जाता है। मिथिला जाते समय रामचन्द्रजी के गौतम की स्त्री अहल्या के उद्धार करने की कथा प्रसिद्ध है। गौतम की यादगारी के लिये १८८३ ई० में बंगाल के लेफ्टिनेन्ट-गवर्नर सर रिवर्स थॉम्पसन से यहाँ एक संस्कृत-पाठशाला की नींव दिलायी गयी थी। इस पाठशाला का नाम थाम्सन-गौतम पाठशाला है। गौतम ऋषि का आश्रम दरभंगा के अहियारी नामक स्थान में भी बताया जाता है। कुछ लोगों का अनुमान है कि कुसीनारा जाते समय गौतम बुद्ध यहाँ आये हों और शायद उन्हीं के नाम पर इसका नाम गोदना पड़ गया हो।

रिवीलगंज के पास किसी समय गंगा-सरयू का संगम था। तभी से यह एक व्यापारिक स्थान हो गया है। इस समय यहाँ रेलवे स्टेशन, म्युनिसिपैलिटी, थाना, पोस्ट-आफिस और अस्पताल हैं। यहाँ चैत और कार्तिक में मेला लगता है।

सारन खास—माँझी से ८ कोस उत्तर यह गाँव एक बहुत पुराना स्थान है। यहाँ बहुत दूर तक पुराने किले, मकान, मंदिर, मस्जिद, दरगाह आदि के भग्नावशेष फैले हुए हैं। मस्जिद, दरगाह आदि हिन्दू-मन्दिरों के सामान से बने मालूम पड़ते हैं। यहाँ ४१ फीट लम्बे एक काले पत्थर पर एक ओर नवग्रह की मूर्त्तियाँ हैं और दूसरी ओर एक लेख है। यहाँ से कई मील पच्छिम भीखावन और कपिया नाम के गाँव हैं जो बौद्ध काल के प्रसिद्ध स्थान मालूम पड़ते हैं।

सिमरिया—छपरा से ७ मील पच्छिम इस गाँव के पास पहले गंगा और सरयू का संगम था और लोग बहुत बड़ी संख्या में यहाँ स्नान करने आते थे। इस समय भी कार्तिक पूर्णिमा में यहाँ मेला लगता है। कहते हैं कि यहाँ ऋषि दत्तात्रेय का आश्रम था।

सिलहोरी—मिरजापुर थाने से २ मील उत्तर इस गाँव में शिलानाथ महादेव का मन्दिर है जहाँ साल में दो बार मेला लगता है।

सोनपुर—गंगा और गंडक के संगम पर सोनपुर एक प्रसिद्ध स्थान है। इसी के पास मही नदी भी गंडक में मिलती है। कार्तिक पूर्णिमा को यहाँ एक बहुत बड़ा मेला लगता है जो करीब एक महीने तक ठहरता है। बिहार का यह सबसे पुराना मेला है और इसकी गिनती दुनिया के बड़े-बड़े मेलों के अन्दर है। हिन्दू लोग इस स्थान को हरिहरक्षेत्र कहते हैं। पुराणों में यहाँ की गज और ग्राह की लड़ाई प्रसिद्ध है। श्रीमद्‌भागवत में लिखा है कि परम प्राचीन काल में त्रिकूट पर्वत के चारों ओर एक बहुत बड़ा जलाशय था। उस जलाशय में एक विशालकाय

मांझी के किले के भग्नावशेष का स्थान, (सारन)

हरिहरनाथ का मंदिर, हरिहरक्षेत्र—सोनपुर (सारन)
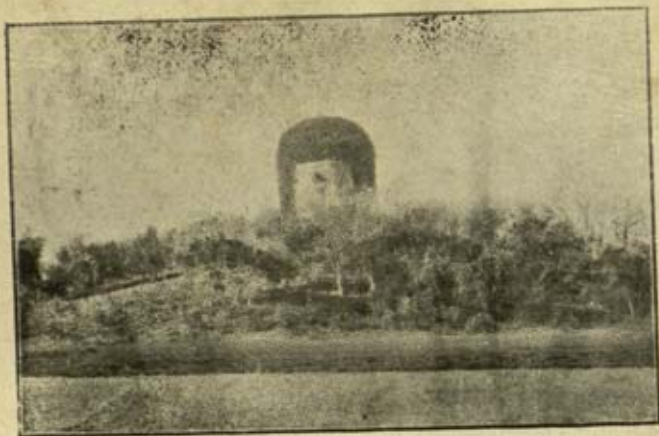
प्राचीन स्तूप, केसरिया (चम्पारण)
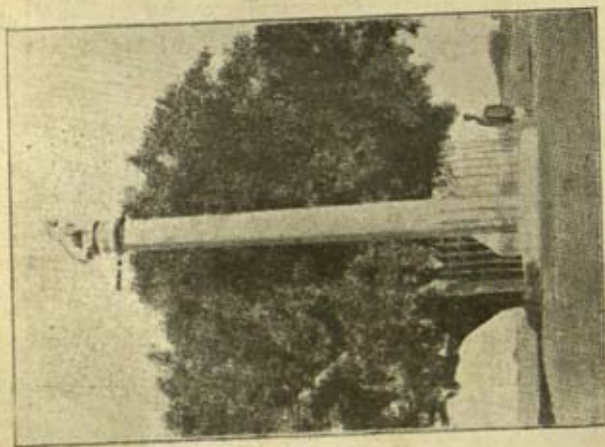
अशोक स्तम्भ, लौरियानन्दन गढ़ (चम्पारण)

ग्राह (बोच) रहता था। एक दिन एक गज (हाथी) अपने झुण्ड के साथ वहाँ पानी पीने आया। ग्राह ने उस गज को पकड़ लिया। दोनों में बड़ी लड़ाई हुई। जब गज हारने लगा तो उसने भगवान हरि (विष्णु) की प्रार्थना की। हरि ने हर (महादेव) आदि देवों के साथ वहाँ पहुँचकर अपने सुदर्शन चक्र से गज की रक्षा की। तब से यह स्थान हरिहरक्षेत्र नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसे चक्रतीर्थ भी कहते हैं। कुछ लोग गज और ग्राह की यह लड़ाई चम्पारण जिले के त्रिवेणी नामक स्थान में हुई बताते हैं। त्रिवेणी के पास जंगल और पहाड़ होने से यह वृत्तान्त वहीं के लिये अधिक लागू होता है। इस समय हरिहरक्षेत्र में जो मंदिर है उसमें हरि और हर की सम्मिलित मूर्त्ति है। पुराणों में लिखा है कि ग्राह पूर्व जन्म का हु हु नामक गंधर्व था जो अपनी स्त्रियों के साथ इस जलाशय में स्नान करने आया था। एक दिन उसने जलक्रीड़ा में देवल ऋषि का पाँव पकड़ लिया था जिसके शाप से वह ग्राह हो गया। गज भी पूर्व जन्म में पाण्डेय देश का इन्द्रद्युम्न नामक राजा था और अगस्त ऋषि के शाप से गज हो गया था। भगवान हरि के स्पर्श से गज और ग्राह दोनों का उद्धार हुआ।

सोनपुर बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का मुख्य जंकशन है। यहाँ रेलवे का एक कारखाना भी है। सोनपुर स्टेशन का प्लेटफार्म दुनिया का सबसे बड़ा प्लेटफार्म समझा जाता है। यहाँ गंडक पर २,१७६ फीट लम्बा एक पुल है। इसमें रेलवे लाइन के दोनों ओर पैदल चलने का भी रास्ता है। इस पुल का उद्घाटन १८८७ ई० में वायसराय लार्ड डफरिन ने किया था।

सोनपुर में थाना, रजिस्ट्री आफिस और अस्पताल हैं।

गोपालगंज सब-डिविजन

गोपालगंज—यह स्थान २०°२८' उत्तरीय अक्षांश और ८४°२७' पूर्वीय देशान्तर पर गंडक नदी के किनारे है। इस नाम के सब-डिविजन का यहाँ सदर दफ्तर है। यहाँ थाना, सब-रजिस्ट्री आफिस, हाई स्कूल और अस्पताल हैं।

कटेया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

कल्याणपुर—दे० हुसेपुर

कुचैकोट—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

जादोपुर—दे० हथुआ

थावे—यह बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का जंकशन है। यहाँ हथुआ महाराज की कोठी और एक पेड़ के नीचे दुर्गास्थान है जहाँ चैत में मेला लगता है।

दिघवा-दुबौली—गोपालगंज से २५ मील दक्षिण-पूरब इस गाँव में और इसके आस-पास बहुत-से टील्हे हैं जो यहाँ किसी जमाने में चेरो लोगों का आधिपत्य होना प्रकट करते हैं। यहाँ ७६१—६२ ई० का एक ताम्रपत्र पाया गया है जो श्रावस्ती (बनारस) के राजा महेन्द्रपाल द्वारा पनियाक नामक एक गाँव दान दिये जाने के सम्बन्ध में लिखा गया था। सारन उस समय श्रावस्ती राज्य का पूर्वी भाग था।

बरौली—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

भोरे—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

मीरगंज—यह स्थान व्यापार का केन्द्र है। यहाँ एक बड़ा बाजार, थाना, रजिस्ट्री आफिस और युनियन बोर्ड हैं। यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम हथुआ है। यह नाम पास के प्रसिद्ध स्थान हथुआ के नाम पर पड़ा है।

वैकुंठपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

हथुआ—हथुआ रेलवे स्टेशन से हथुआ गाँव करीब एक कोस है। यहाँ हथुआ राज की राजधानी, बाग, पुस्तकालय, हाईस्कूल और एक बड़ा अस्पताल हैं। राज का कुछ हिस्सा चम्पारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, शाहाबाद, पटना, दार्जिलिंग, कलकत्ता, गोरखपुर और बनारस जिले में भी है। राज का कुल क्षेत्रफल करीब ८०० वर्गमील है, जिसमें से ६०० वर्गमील जमीन सारन जिले में ही है। राज की आमदनी १४ लाख रुपया सालाना से कुछ अधिक है। हथुआ के महाराज भूमिहार ब्राह्मण हैं। यह राजवंश पहले हुसेपुर-राजवंश के नाम से विख्यात था। मुसलमानों के भारत में आने के पहले से ही इस राजवंश का होना बताया जाता है। इस वंश के लोग १०० से भी अधिक पुश्तों से सारन में हैं। इस वंश में १०३ राजे हुए। ये लोग पहले सेन कहलाते थे। १६ वें राजा से सिंह की पदवी चली और ८३ वें से मल की। अब ८७ वें राजा से साही की पदवी चल रही है। ८६ वें राजा कल्याणमल को दिल्ली के बादशाह ने 'महाराजा' की उपाधि दी थी और ८७ वें राजा खेमकरनसाही को 'महाराजा बहादुर' की। इधर अङ्गरेजी सल्तनत के शुरू में इस वंश के फतहसाही बहुत नामी आदमी हुए। इनके ठीक पहले जुबराजसाही और सरदारसाही ने भी अच्छा नाम हासिल किया था। जुबराजसाही ने बरहरिया के राजा काबुल मुहम्मद को परास्त कर सियाह परगना लिया था और सरदारसाही ने मझौली के राजा पर विजय प्राप्त की थी। फतहसाही ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी के अधिकारियों से सदा लड़ते रहे और उनका आधिपत्य स्वीकार नहीं किया। पीछे इनके वंशज छत्रधारीसाही ने हथुआ में अपनी

राजधानी बनायी। फतहसाही के वंशज ने गोरखपुर जिले के अन्दर तमकुही में अपना राज्य जमाया।

छत्रधारीसाही ने संथाल-विद्रोह और सिपाही-विद्रोह (स्वातन्त्र्य युद्ध) में अँगरेजी सरकार की सहायता की थी। छत्रधारीसाही के बाद उनका पोता राजेन्द्रप्रतापसाही और इनके बाद इनका लड़का कृष्णप्रतापसाही राजा हुए। इन्होंने राज-प्रासाद और दरबार हॉल बनाया। इस दरबार-हॉल की गिनती हिंदुस्तान के सबसे सुंदर दरबार-हॉलों में है। इस समय इनके लड़के गुरु महादेव आश्रमप्रसादसाही महाराजा बहादुर हैं। हथुआ राज का बटवारा नहीं होता। खान्दान के बड़े लड़के को गद्दी मिलती है और दूसरे लड़कों को भरण-पोषण के लिये थोड़ी-सी जायदाद दी जाती है।

हुसेपुर—गोपालगंज सबडिविजन के उत्तर-पच्छिम भाग में झरही नदी के किनारे यह एक गाँव है। हथुआ महाराज की पहले यहीं राजधानी थी। किले के भग्नावशेष अब टील्हों के रूप में मौजूद हैं। इस वंश के ८६ वें राजा कल्याणमल के नाम पर कल्याणपुर गाँव और कल्याणपुर कुआरी परगना का नाम पड़ा। कल्याणपुर में कल्याणमल के किले का चिह्न अब भी देखने में आता है।

सीवान सबडिविजन

सीवान—यह शहर दाहा नदी के किनारे २६°१३' उत्तरीय अक्षांश और ८४°२१' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ सबडिविजन का सदर दफ्तर है। यहाँ से दो रेलवे लाइन फूटकर गोरखपुर में जा मिली है। यह व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ १९०२ ई० से एक ईसाई मिशन कायम है। यहाँ की जनसंख्या १४,२१५

है। सीवान को लोग अलीगंज सीवान भी कहते हैं। सीवान में मिट्टी, पीतल, काँसा, फूल आदि के बर्तन बहुत सुन्दर बनते हैं। डा० होय ने सीवान को कुसीनारा समझा था जहाँ बुद्धदेव की मृत्यु हुई। वर्तमान पपौर को पावा समझकर उसने बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार ठीक मान लिया था कि इसी पपौर होकर बुद्ध-देव कुसीनारा को गये थे। लेकिन, अब लोग इसको कुसीनारा नहीं मानते। सीवान में कई टील्हे हैं। एक टील्हे को कुछ लोग बौद्ध काल के राजा जगन्न के किले का भग्नावशेष समझते हैं।

अमरपुर—दरौली से २ मील पच्छिम इस गाँव में एक पुरानी सुन्दर मस्जिद है। कहते हैं कि यह शाहजहाँ के वक्त में अमरसिंह की निगरानी में बनायी गयी थी।

अलीगंज—दे० सीवान

गुठनी—गंडकी नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ पहले गुड़ और चीनी बहुतायत से बनती थी और दूर-दूर स्थानों में भेजी जाती थी; लेकिन वर्तमान मिलों की प्रतिद्वन्द्विता में यहाँ का काम बहुत घट गया है। गुठनी में थाने का सदर आफिस है।

दरौली—छपरा-गुठनी सड़क पर सरयू नदी के किनारे इस गाँव में थाना, सब-रजिस्ट्री आफिस और अस्पताल हैं।

पपौर—डा० होय ने इस स्थान को बौद्ध साहित्य में वर्णित पावापुर माना है। लिखा है कि बुद्ध भगवान ने इसी ग्राम के कुंड नामक सोनार के यहाँ सूकर का मांस या सूकर नामक कंद खाया था जिससे उन्हें पेट में दर्द हुआ और वे कुसीनारा जाकर मरे।

बरहरिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बसनौली गांगर—दे० महाराजगंज

बसन्तपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

महाराजगंज—जिले के अन्दर व्यापार का यह एक प्रधान केन्द्र है। यहाँ का व्यापार बहुत दूर-दूर स्थानों से होता है। बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की मुख्य लाइन से एक शाखा लाइन इस स्थान को गयी है। यहाँ थाना, हाईस्कूल, डाक और तारघर, सब-रजिस्ट्री आफिस तथा अस्पताल हैं।

मैरवा—सीवान से १३ मील पच्छिम जिले की सीमा के पास इस गाँव में एक ब्रह्मस्थान और चननिया अहीरिन की डीह है जिन्हें लोग पूजते हैं। यहाँ थाना और अस्पताल भी हैं।

रघुनाथपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

लकड़ी दरगाह—सीवान से १५ मील उत्तर इस गाँव में पटना के पीर शाह अर्जन की दरगाह है। इस दरगाह में लकड़ी का काम सबसे मुख्य है। इस पीर ने बादशाह औरंगजेब की दी हुई जागीर से यहाँ खानका कायम किया जिसकी आमदनी से दरगाह का खर्च चलता है।

गंगापुर सिसवन—सीवान से २१ मील दच्छिण इस गाँव में एक बड़ा बाजार, थाना, डाकबँगला तथा डाक और तारघर हैं।

हसनपुरा—सीवान से १३ मील दच्छिण धनई नदी के किनारे यह एक गाँव है, जिसे अरब से यहाँ आये हुए एक पीर मकदुम सईद हसन चिश्ती ने बसाया था। दिल्ली के बादशाह की दी हुई जागीर से इन्होंने यहाँ खानका कायम किया। इस गाँव में एक बड़ी मस्जिद और पीर की दरगाह है। दरगाह के सामने विष्णु की एक मूर्त्ति है जिसे मुसलमान शैतान समझते हैं और कहते हैं कि पीर मकदुम ने इसे पत्थर बना दिया था। यह मूर्त्ति सातवीं सदी की मालूम पड़ती है।

चम्पारण जिला

मोतिहारी (सदर) सबडिविजन

मोतिहारी—चम्पारण जिले का प्रधान नगर मोतिहारी २६°४०' उत्तरीय अक्षांश और ८४°५५' पूर्वीय देशान्तर पर एक बड़े जलाशय के किनारे बसा हुआ है, जहाँ जिले का सदर आफिस है। इस जलाशय का पहले गंडक नदी से सम्बन्ध था। इसके पास ही एक और जलाशय है। गर्मी के दिनों में भी इन जलाशयों में काफी पानी रहता है। ये जलाशय शहर के लिये मोती के हार के समान हैं। कहते हैं कि इसी कारण इस शहर का नाम मोतिहारी पड़ा। पच्छिम ओर का जलाशय शहर को दो भागों में बाँटता है। पच्छिम की ओर यूरोपियन कार्टर और शहर हैं तथा पूरब की ओर सरकारी कचहरियाँ, अन्य सरकारी आफिस और रेलवे स्टेशन हैं। इसके बाद रेलवे लाइन पार करने पर पुराना घुड़दौड़ का मैदान और पोलो-ग्राउंड हैं। जेल भी इसके पास ही बना है। शहर के दोनों भागों को मिलाने के लिये जलाशय पर एक बड़ा पुल बना हुआ है। सन् १९३४ के भयंकर भूकम्प से इस शहर को बहुत क्षति पहुँची थी।

सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या १७,५४५ है, जिसमें १२,७०९ हिन्दू, ४,७२९ मुसलमान, १०४ ईसाई और ३ जैन हैं। मोतिहारी चम्पारण जिले का प्रधान शहर है; मगर क्षेत्रफल और जनसंख्या के हिसाब से बेतिया इससे बहुत बड़ा हुआ है।

अरेराज—दे० लौरिया अरेराज।

आदापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

ऊँचाडीह—दे० सिंघासिनी।

कस्तुरिया—मोतिहारी से १६ मील पूरब सरैया के पास १६० फीट लम्बा और १०० फीट चौड़ा एक टील्हा है जिसे लोग कस्तुरिया कहते हैं। कहा जाता है कि यह एक चेरो राजा के महल का भग्नावशेष है। इसके पच्छिम एक पाकर के पेड़ के नीचे अष्टभुजी दुर्गा की टूटी-फूटी मूर्त्ति है। लोग इसे दुर्गावती रानी कहते हैं और इसे एक चेरो रानी की मूर्त्ति बताते हैं।

केसरिया—जिले के बिलकुल दक्खिन में यह एक गाँव है, जहाँ थाने का सदर आफिस है। इसके २ मील दक्खिन एक ऊँचा टील्हा है जिसपर एक बौद्धकालीन स्तूप जान पड़ता है। इसकी कुल ऊँचाई ६२ फीट और नीचे का घेरा १४०० फीट है। जेनरल कनिंघम ने इसे २०० ई० से ७०० ई० के बीच का बताया है। कहते हैं कि ऊपर का स्तूप एक बहुत पुराने और बड़े स्तूप के भग्नावशेष पर बनाया गया है। चीनी यात्री य्वन् च्वाङ् (ह्वेनसन) ने अपने वृत्तान्त में लिखा है कि वैशाली से करीब ३० मील उत्तर-पच्छिम एक बहुत पुराना शहर था जो बहुत दिनों से उजाड़ पड़ा है। यहीं बुद्ध भगवान ने कहा था कि अपने एक पूर्व जन्म में मैंने एक चक्रवर्ती राजा होकर इस शहर में शासन किया था। यहाँ जो स्तूप है, उसे बौद्धों ने इसी बात की यादगारी के लिये बनवाया था। पर, लोग स्तूपवाले इस टील्हे को चक्रवर्ती राजा बेन का देवरा कहते हैं और पास के दूसरे टील्हे को रनिवास का भग्नावशेष बताते हैं। कहते हैं कि गंगेया ताल वही तालाब है जहाँ राजा बेन की रानी पद्मावती स्नान करती थी। तीन हजार फीट लम्बा एक दूसरा तालाब राजा बेन का तालाब

कहलाता है। रनिवास नामक टील्हे को ऐतिहासिक लोग एक बौद्ध मठ का भग्नावशेष बताते हैं। १८६२ ई० में यहाँ खोदाई हुई थी तो इसके अन्दर एक मंदिर मिला था जिसमें बुद्ध की एक मूर्त्ति थी।

गोविन्दगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

घोड़ासहन—यहाँ थाने का सदर आफिस है

चकिया—दे० बारा।

ढाका—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

नोनाचर—मोतिहारी से ५ मील उत्तर-पूरब सिकरान नदी के किनारे यह एक पुराना किला है। यहाँ एक पुराना तालाब है। कहते हैं, यहाँ नोनाचर नामक एक दुसाध राज करता था। दन्त-कथा है कि मुजफ्फरपुर जिले के सुभेगढ़ में राजा सुहेलदेव की लड़की ने प्रतिज्ञा की थी कि जो मेरे किले के ताड़ के पेड़ को गिन देगा उसी से मैं ब्याह करूँगी। बहुत लोग गिनने से थक गये। अन्त में नोनाचर दुसाध ही इस काम में सफल हुआ। पर एक दुसाध से ब्याह करने को मजबूर होने से लड़की को बहुत दुःख हुआ। उसने भगवान से प्रार्थना की, इस पर धरती फटी और वह उसी में समा गयी।

पिपरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बारा—जिले के अन्दर पहले पहल यहीं नील की फैक्टरी १८१३ ई० में कायम हुई थी। पीछे चीनी का कारबार शुरू हुआ। पहले यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम बारा ही था, अब चकिया हो गया है।

वेदीवन—पिपरा रेलवे स्टेशन से आधा मील उत्तर-पूरब यह एक गाँव है। यहाँ से एक मील उत्तर सीताकुंड है। वेदी-वन में एक पुराने किले का भग्नावशेष है जो ९२५ फीट लम्बा

और ६७० फीट चौड़ा है। किले के उत्तर भाग में २० फीट ऊँचा एक टील्हा है जिसपर एक मंदिर है। इस मंदिर में २ फीट का एक पत्थर है जो भगवान का चरण समझा जाता है। इसपर सात लाइन में अरबी लिपि में कुछ लिखा है,जो अब पढ़ा नहीं जाता। जेनरल कनिंघम ने इसका एक शब्द महमूद शाह पढ़कर अनुमान किया था कि शायद इसका सम्बन्ध जौनपुर के राजा महमूद शरकी (१४५० ई०)से हो। उसने मंदिर के भी मुसलमानी मंदिर होने का अनुमान किया था। मगर, ऐसी बात नहीं है; क्योंकि इस ढंग के हिन्दू मन्दिर और भी पाये जाते हैं।

मधुवन—चकिया रेलवे स्टेशन से यह स्थान ५ मील उत्तर-पूरब है। यहाँ एक प्रतिष्ठित और पुराने घराने के जमींदार रहते हैं। इस वंश के संस्थापक अवधूत सिंह थे जो बेतिया राज के संस्थापक राजा उग्रसेन सिंह के परपोते थे। मीर कासिम के वक्त में तप्पा दूहोसूहो तथा मधुवन और शामपुर गाँव इनके हाथ में बन्दोबस्त किये गये थे। ये लोग पहले मोतिहारी से ८ मील पूरब मधुवनी गाँव में रहते थे, पीछे यहाँ आये। दशहरे के वक्त में यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। मधुवनी में थाना भी है।

मेहसी—यह गाँव इस नाम के रेलवे स्टेशन के पास है। जब पहले पहल ईस्ट इंडिया कम्पनी का इस जिले पर दखल हुआ तो यहाँ का सदर आफिस मेहसी में ही बनाया गया और यहाँ एक मुन्सिफ का कोर्ट भी खुला। कोर्ट का मकान और एक यूरोपियन की कोठी अब भी देखने में आती है। मुसलमानी वक्त में यहाँ एक काजी रहते थे। कहते हैं, मेहसी नाम महेश कोयरी नामक एक साधु के नाम पर पड़ा है। हलीम शाह नामक
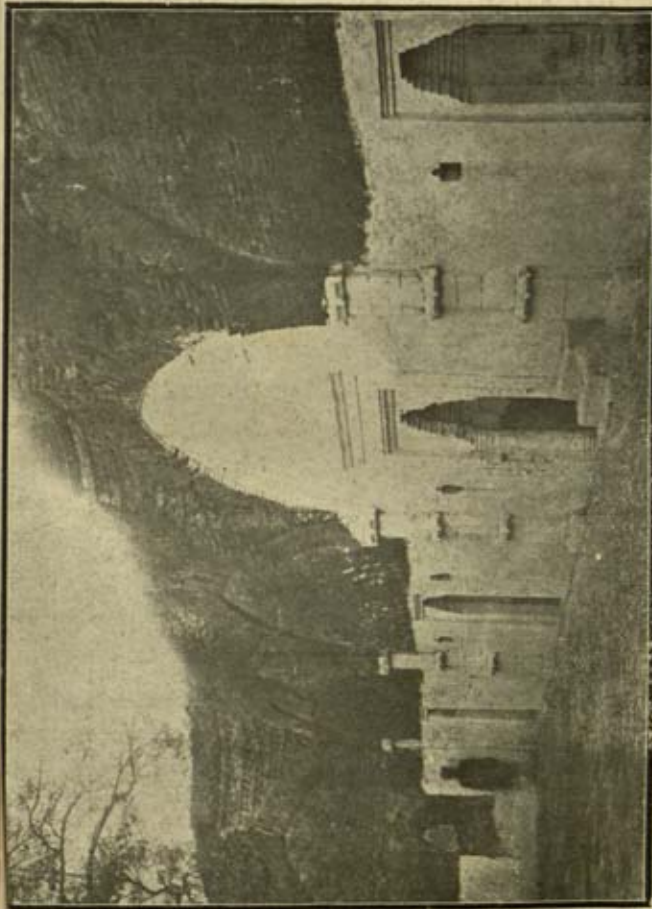
एक पुरानी मस्जिद, चिराँद छपरा (सारन)
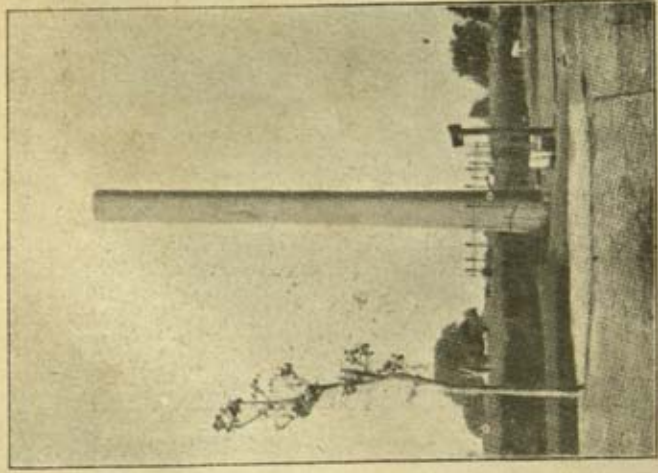
अशोक स्तम्भ, लौरिया अरेराज (चम्पारण)
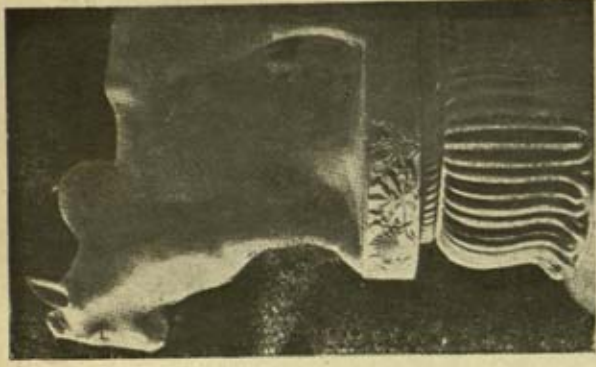
रामपुरवा (चम्पारण) के अशोक स्तम्भ का शिरोभाग
(इस समय इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता में)

एक फकीर इसके गुण पर चकित था। इस गाँव में पास ही पास एक मंदिर और एक दरगाह है जिनका सम्बन्ध इन्हीं दोनों से बताया जाता है। यहाँ एक हाई स्कूल भी है। यहाँ का तम्बाकू और दरी प्रसिद्ध है। कुछ वर्षों से यहाँ बटन की एक छोटी फैक्टरी खुली है।

रक्सौल—यह स्थान जिले की उत्तरी सीमा पर है जहाँ रेलवे लाइन का जंकशन स्टेशन है। यहाँ से नेपाल जाने का एक मुख्य मार्ग मिलता है। यह व्यापार का केन्द्र है और यहाँ एक हाई स्कूल, थाना और अस्पताल है।

लौरिया अरेराज—यह गाँव गोविन्दगंज थाने से ४ मील उत्तर है। यहाँ अशोक का एक स्तम्भ है जो ईसा से २४६ वर्ष पहले बनाया गया था। यह स्तम्भ ३६½ फीट ऊँचा है। इसके आधार पर का व्यास ४१·८ इंच का और चोटी पर का व्यास ३७·६ इंच का है। अनुमान किया जाता है कि इसके शिखर पर किसी जानवर की मूर्त्ति रही होगी। इसपर जो लेख है वह अब भी बहुत स्पष्ट है। उत्तर की ओर १८ लाइनें और दक्षिण की ओर २३ लाइनें हैं। यहाँ के लोग इस स्तम्भ को लौर कहते हैं; इसलिये इस गाँव का नाम लौरिया पड़ गया है। भोजपुरी बोली में लौर लाठी को कहा जाता है। स्तम्भ से एक मील दक्षिण-पश्चिम महादेव का एक मंदिर है जहाँ साल में एक बार मेला लगा करता है।

सगरडीह—पिपरा स्टेशन से ४ मील की दूरी पर केसरिया जानेवाली सड़क के पास सगर या सागर नामक एक गाँव है। यहाँ दो टील्हे हैं जिन्हें लोग सगरडीह कहते हैं। इनमें से एक बौद्धकालीन स्तूप जान पड़ता है। यह ३७ फीट ऊँचा है और इसके आधार पर का व्यास करीब २०० फीट है। जेनरल कनि-

कम ने यहाँ खोदाई का काम किया था। वह बताता है कि वर्तमान स्तूप, जो ६वीं या १०वीं सदी का है, किसी पुराने स्तूप के भग्नावशेष पर बनाया गया है। गया पोखर के पास एक दूसरा टील्हा है जिसको लोग भिस कहते हैं। इसका सम्बन्ध सूर्यवंश के प्रसिद्ध राजा सगर से बताया जाता है; इसलिये लोग इस टील्हे को सगरगढ़ कहते हैं। इसके दक्षिण-पूरब की ओर एक दूसरा तालाब है जो बौद्ध पोखर कहलाता है। इसके पास एक ग्राम-देवता का मंदिर है। टील्हे के पास गुलाम हुसेन शाह की करीब डेढ़ सौ वर्ष की पुरानी दरगाह है।

सारंगगढ़—नोनाचर से यह गाँव २ मील दूर है। कुछ लोग इसी का सम्बन्ध उपर्युक्त सगर से बताते हैं; पर यहाँ कोई पुराना खँडहर नहीं है।

सिघासिनी—यह गाँव सुगौली से ७ मील उत्तर है। गाँव से आधा मील पच्छिम एक ऊँचा टील्हा है जिसे गाँव के लोग ऊँचाडीह कहते हैं। यह एक पुराने किले का भग्नावशेष समझा जाता है। इसके चारों कोने पर ऊँचा स्थान है जो शायद किले के बुर्ज की जगह हो। यहाँ एक पुरानी सड़क है। अनुमान किया जाता है कि यहाँ कभी किसी राजा का सिंहासन रहा होगा जिससे इस स्थान का नाम सिंघासिनी पड़ा।

सिमराँव—जिले की उत्तरीय सीमा पर घोड़ासहन रेलवे स्टेशन से कुछ दूर पर यह एक गाँव है। गाँव के जिस भाग में मिथिला के सुप्रसिद्ध सिमराँव राजवंश के महल आदि का भग्नावशेष है, वह नेपाल राज्य की सीमा के अन्दर पड़ गया है। सिमराँव नगर समानान्तर चतुर्भुज के रूप में था और दोहरी दीवाल से घिरा हुआ था। बाहर की दीवाल का घेरा १४ मील और भीतर की दीवाल का घेरा १० मील था जिनके

चिह्न अब भी मौजूद हैं। पूरब और पच्छिम की ओर खाई के चिह्न भी नजर आते हैं। बीच में किला, महल और मंदिर आदि के भग्नावशेष हैं। नगर के उत्तर कोतवाली, चौतारा स्थान पर का टील्हा किला और उसके बीच का रनिवास नामक टील्हा महल समझा जाता है। नगर के भीतर मजबूत बनी हुई सड़कों के चिह्न भी मालूम पड़ते हैं। पास में ही इसरा नामक एक तालाब है। यहाँ दो मठ भी हैं; लेकिन ये हाल के बने मालूम पड़ते हैं।

सीताकुंड—पिपरा रेलवे स्टेशन से कुछ दूर पर यह एक गाँव है। यहाँ एक पुराने किले का भग्नावशेष है। यह किला करीब-करीब वर्गाकार में था और इसकी हर तरफ की लम्बाई ४५० फीट थी। इसके चारों कोने और हरेक फाटक पर गुम्बज थे। किले की दीवाल २१½ फीट मोटी थी। बाहर १० फीट की और भीतर ३ फीट की ईंट की दीवाल बनाकर तथा बीच में ८½ फीट मिट्टी डालकर दीवाल की मोटाई २१½ फीट बनायी गयी थी। पूरब, पच्छिम और दक्षिण की ओर एक फाटक और उत्तर की ओर दो फाटक थे। ईंट की दीवाल १०-१२ फीट और मिट्टी की दीवाल २० फीट से अधिक ऊँची रह गयी है। इससे अनुमान किया जाता है कि दुरुस्त हालत में दीवाल ३०-३५ फीट ऊँची रही होगी। जहाँ-तहाँ खाई के चिह्न भी नजर आते हैं। किले के बीच एक कुंड है जो सीताकुंड कहलाता है। कहते हैं, यहाँ सीताजी ने स्नान किया था। इस नाम के कुंड मुंगेर आदि कई जिलों में हैं। यहाँ रामनवमी में मेला लगता है।

सुगौली—यहाँ बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का जंक्शन है। सन् १८१५ में नेपाल के साथ अँगरेजों की संधि इसी स्थान पर हुई थी। अन्तिम नेपाल-युद्ध के समय जेनरल ऑक्टरलोनी ने अपना

सदर आफिस यहीं बनाया था। उसके बाद से यहाँ अंगरेज सेना की छावनी रहने लगी। १८५७ में सिपाही-विद्रोह में यहाँ के प्रायः सभी यूरोपियन मार डाले गये थे।

यहाँ करीब १५० वर्ष का पुराना एक मन्दिर है। सुगौली में थाने का सदर आफिस है।

बेतिया सबडिविजन

बेतिया—यह शहर २६° ४८' उत्तरीय अक्षांश और ८४°३०' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ सबडिविजन का सदर दफ्तर, दो हाई स्कूल, अस्पताल, म्युनिसिपैलिटी और रेलवे स्टेशन हैं। यह व्यापार का भी केन्द्र है। यह शहर क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों ही में मोतिहारी से बड़ा है। सन् १९३१ के गणनानुसार यहाँ २७,९४१ आदमी रहते हैं जिनमें १६,७२३ हिन्दू, ९,४९५ मुसलमान, १,७१३ ईसाई, ९ सिक्ख और १ अन्य धर्म के लोग हैं। राँची और जमशेदपुर को छोड़ शहर के अन्दर इतने अधिक ईसाई विहार के किसी भी शहर में नहीं हैं। सन् १७४५ से ही यहाँ ईसाई मिशन कायम है। पिछली दो शताब्दी से बेतियाराज-वंश की यहाँ राजधानी है। यहाँ मुसलमानों के कितने ही हमले हुए हैं। १८ वीं सदी के अन्त में भी बेतिया एक प्रधान स्थान था और यहाँ बेतिया राज का किला था। कहते हैं कि इस स्थान पर पहले बेंत अधिक होने के कारण यहाँ पर बसे शहर का नाम बेतिया पड़ा।

बेतिया राज १,८२४ वर्गमील में मुख्यतर बेतिया सब-डिविजन के अन्दर फैला हुआ है। यह राजवंश करीब ३०० वर्षों से कायम है और इस वंश के लोग भूमिहार ब्राह्मण हैं। इस राजवंश के संस्थापक उज्जैन सिंह बताये जाते हैं। इनके

लड़के गजसिंह को बादशाह शाहजहाँ से राजा की उपाधि मिली थी। मुगल साम्राज्य के पतन के समय १८ वीं सदी में इस राजवंश का नाम प्रसिद्ध हुआ। यहाँ के राजे स्वतन्त्र बन बैठे थे। १७२९ ई० में अलीवर्दीखाँ ने यहाँ चढ़ाई की और राजा से अधीनता स्वीकार करायी। इसके बाद १७४८ ई० में राजा दरभंगा के विद्रोही अफगानों से मिल गया और अलीवर्दीखाँ के चढ़ाई करने पर अफगान-सरदार के स्त्री-बच्चों को अपने यहाँ शरण दी। १७५९ ई० में केलोड ने बेतिया पर चढ़ाई कर राजा को दबाया। सन् १७६२ में मीरकासिम ने आक्रमण कर इसके किले को ले लिया। १७६६ ई० में फिर सर राबर्ट बारकर ने राज पर हमला कर यहाँ अँगरेजी आधिपत्य जमाया। इस समय जुगलकेश्वर सिंह यहाँ के राजा थे। लगान बाकी पड़ जाने पर अँगरेजों के साथ इनका झगड़ा हो गया और ये राज से हटा दिये गये; लेकिन जब राज का काम चलना बन्द हो गया, तो ये फिर बुलाये गये और इनको परगना मझवा और सिमराँव दिया गया। बाकी हिस्सा इनके चचेरे भाई श्रीकृष्ण सिंह और अवधूत सिंह को मिला जिससे मुजफ्फरपुर जिलान्तर्गत शिवहर राज कायम हुआ। युगलकेश्वर सिंह के बाद वीरकेश्वर सिंह और उनके बाद आनंदकेश्वर सिंह राजा हुए। आनंदकेश्वर सिंह को लार्ड विलियम बेंटिंक ने महाराजा बहादुर की उपाधि दी। इनके बाद नवलकेश्वर सिंह हुए। इनके मरने पर राजेन्द्रकेश्वर सिंह राजा हुए। १८५७ के विद्रोह में अंगरेजी सरकार को मदद करने के कारण इनको और इनके लड़के हरेंद्रकेश्वर सिंह को महाराजा बहादुर की उपाधि मिली। इनके निःसन्तान मर जाने पर राज कोर्ट-आफ-वार्ड् स के प्रबन्ध में चला गया और इसकी अधिकारिणी एक विधवा रानी रहीं।

मुजफ्फरपुर, पटना, सारन, मिरजापुर, इलाहाबाद, बस्ती, गोरखपुर, फैजाबाद और बनारस में भी इस राज की जमीन है। राज की तहसील करीब १८ लाख की है।

चखनी—दे० बगहा।

चानकीगढ़—रामनगर रेलवे स्टेशन से ६ मील पूरब चानकी नामक एक गाँव है। यहाँ एक टील्हा है जिसे लोग चानकीगढ़ या जानकीगढ़ कहते हैं। यह टील्हा २५० फीट लम्बा और ६० फीट ऊँचा है। कहते हैं कि यह राजा जनक का किला था। कुछ लोग यह भी बताते हैं कि यहाँ लौरिया नन्दन गढ़ के एक बौद्ध राजा का तान्त्रिक नामक पुरोहित रहता था जिसके लिये राजा ने एक किला बनवा दिया था। कहते हैं कि राजा और पुरोहित अपने अपने यहाँ एक ऊँचे स्तम्भ पर एक दीप जलाये रहते थे जिससे एक दूसरे का कुशल क्षेम मालूम होता रहे। आज से करीब ५० वर्ष पहले बेतिया के राजा ने यहाँ खुदाई की थी तो कुछ ताम्बे के सिक्के आदि मिले थे।

चुहरी—यह गाँव बेतिया से ६ मील उत्तर है। तिब्बत और नेपाल से भगाये हुए ईसाई मिशन के लोग सन १७६९ में यहाँ आकर ठहरे थे। बेतिया के राजा ने उन्हें आश्रय दिया। यहाँ उनके अनाथालय और लड़के-लड़कियों के लिये स्कूल चल रहे हैं।

जानकीगढ़—दे० चानकीगढ़।

जोगापट्टी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

त्रिवेणी घाट—जिले के बिल्कुल उत्तर-पच्छिम कोने पर, जहाँ गंडक नदी जिले को छूती है, इस नदी पर यह एक घाट है। नदी की दूसरी ओर नेपाल राज्य में त्रिवेणी नामक गाँव है। गंडक, पंचनद और सोनाह, ये तीन नदियाँ यहाँ मिली हैं, इस कारण इस स्थान का नाम त्रिवेणी पड़ा। हिन्दू इसे

पवित्र स्थान समझते हैं। कहते हैं कि गज और ग्राह की लड़ाई यहीं हुई थी। कुछ लोग हरिहरक्षेत्र (सोनपुर) में इस लड़ाई का होना बताते हैं; लेकिन श्री मद्भागवत के अनुसार त्रिवेणी में ही इस स्थान का होना अधिक सम्भव मालूम पड़ता है। यहाँ माघ की संक्रान्ति में मेला लगता है। यहाँ सीताजी का एक मंदिर है। कहते हैं कि सीताजी ने यहीं से अपने पुत्र लव-कुश को राम से लड़ते हुए देखा था।

पास के भैंसालोटन गाँव में त्रिवेणी नहर का सदर दफ्तर है। कहते हैं पहले इस गाँव में भैंसे बहुत पाये जाते थे।

दरबाबारी—दे० बावनगढ़ी।

देवर—बेतिया सबडिविजन के उत्तर-पूरब कोने पर यह एक गाँव है। यहाँ एक मंदिर है जहाँ कार्तिक पूर्णिमा और राम-नवमी में मेला लगता है।

धनहा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

पतजिरवा—बेतिया से ८ मील पच्छिम यह एक गाँव है। यहाँ एक मंदिर है जो दुर्विजय सिंह नामक एक सरदार द्वारा बनवाया बताया जाता है। कहते हैं, उसके लड़ाई में मरने पर उसकी स्त्री सती हो गयी थी। उसी की यादगारी में पतजिरवा टप्पा के लोग न खाट पर सोते थे और न पक्का घर बनवाते थे।

पिपरिया—दे० रामपुरवा।

बगहा—यह स्थान जिले की उत्तर-पच्छिम सीमा के पास गण्डक के किनारे है। यहाँ हाई स्कूल, अस्पताल, थाना और रेलवे स्टेशन हैं। यहाँ से दो मील पर चखनी गाँव में ईसाइयों का अड्डा है।

बावनगढ़ी—जिले के उत्तर-पच्छिम कोने की ओर त्रिवेणी से ५ मील की दूरी पर दरबाबारी नामक एक गाँव है। दरबाबारी

का अर्थ महल का द्वार है। इस गाँव के उत्तर ५२ गढ़ और ५३ बाजार के भग्नावशेष हैं। इसी को बावनगढ़ी और तिरपन बाजार कहते हैं। विन्सेन्ट स्मिथ ने इसे रामग्राम अनुमान किया था जिसे चीनी यात्री फाहियान और ग्वन्च्वाङ् (ह्वेनसन) ने देखा था। कुछ लोग इसका सम्बन्ध पाण्डव के बनवास से बताते हैं। कुछ इसे सिमराँव राजवंश के समकालीन एक सरदार बाओरा का निवास-स्थान समझते हैं। यह भी बताया जाता है कि दक्षिण विहार के भीम सिंह आदि कुछ सरदारों ने यहाँ अपना राज्य कायम किया था। नट लोगों के एक गीत से मालूम पड़ता है कि बावनगढ़ी के राजा दो भाई थे—जासोर और टोरर। जासोर को अल्ला और रूदल तथा टोरर को झगरू और जामन ये दो लड़के थे। एक झगड़े में जासोर ने टोरर को मार दिया। इसपर झगरू ने जासोर को मारकर अपने पिता का बदला लिया। जासोर की स्त्री अपने दोनों बच्चों को लेकर भाग गयी। सयाने होने पर अल्ला ने महुआगढ़ में निवास-स्थान बनाया और झगरू से लड़कर उसे मार डाला।

भसालोटन—दे० त्रिवेणी घाट।

मझौलिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

मदनपुर—मदनपुर बगहा से १० मील उत्तर है। यहाँ कुछ खंडहर पाये जाते हैं। कहते हैं यहाँ पहले किसी राजा का महल था।

मैनाटाँड़—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

रामनगर—यहाँ थाने का सदर आफिस और रेलवे स्टेशन है। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार रहते हैं। ये अपने को चित्तौर के रतन सिंह के वंशज बताते हैं। रतन सिंह ने नेपाल आकर यहाँ छोटी-सी जमींदारी हासिल की थी। इनकी छठी पीढ़ी

के राजा मुकुन्द सिंह ने अपनी जमींदारी अपने चार भाइयों में बाँट दी। पृथ्वीपाल सिंह बटवाल के, लंगी सिंह मकवानपुर के, राजसिंह राजपुर के और बुरंगी सिंह तेलाहु के राजा हुए। बुरंगी सिंह से ही रामनगर-राजवंश कायम हुआ। इस वंश के लोग भागकर रामनगर चले आये, तब से बराबर यहीं हैं। बादशाह आलमगीर ने सन् १६७६ में यहाँ के सरदार को राजा की उपाधि दी थी। अँगरेजी सरकार ने सन् १८६० में इस उपाधि को स्वीकार किया।

रामपुरवा—जिले के बिलकुल उत्तर भाग में गौनहा स्टेशन से कुछ दूर पर पिपरिया गाँव के पास यह एक गाँव है। यहाँ अशोक का एक स्तम्भ है। इस स्तम्भ की चोटी पर का व्यास २६½ इंच है। ठीक यही व्यास लौरिया नन्दनगढ़ के स्तम्भकी चोटी का भी है। इसकी कलगी पर दाना चुगते हुए हंसों की पंक्ति चित्रित है। इसके ऊपर सिंह की मूर्ति थी। अब केवल उसके पैर रह गये हैं। इस पर लेख अक्षरशः वे ही हैं जो लौरिया अरेराज या लौरिया नन्दनगढ़ के स्तम्भ पर हैं। स्तम्भ पर से कलगी १८८१ ई० में फोटो लेने के लिये अलग की गयी थी। पत्थर के ये दोनो खंड ताँबे से जोड़े गये थे। स्तम्भ गिड़ी हुई हालत में है, इससे जान पड़ता है कि इसे यहाँ से हटा ले जाने का प्रयत्न किया गया था। स्तम्भ के आस-पास बौद्धकालीन टील्हे हैं।

लौरिया नन्दनगढ़—बेतिया से १४ मील उत्तर-पच्छिम यह एक गाँव है जहाँ थाने का सदर आफिस भी है। यहाँ अशोक का एक सुरक्षित स्तम्भ, एक बड़े स्तूप का भग्नावशेष और कुछ पुरानी समाधि के टील्हे हैं। स्तम्भ-दण्ड ३२ फीट और ९½ इंच लम्बा है। इसके आधार पर का व्यास ३५.५ इंच और चोटी पर का व्यास २६.२ इंच है। इसका कलश ६ फीट और १० इंच

लम्बा है। कलगी पर दाना चुगते हुए राजहंस की पंक्ति चित्रित है। ऊपर सिंह की मूर्ति खड़ी है। सिंह का मुँह कुछ टूटा हुआ है और स्तम्भ-दण्ड पर ऊपर में तोप के गोले की निशानी है। इसपर १६६०-६१ ई० का लिखा औरंगजेब का नाम है। फारसी अक्षरों में साफ लिखा है—महीउद्दीन महम्मद औरंगजेब पादशाह आलमगीर गाजी सन् १०७१। बखरा और अरेराज के स्तम्भ से यह स्तम्भ बहुत पतला और हल्का है। इसपर अशोक के लेख अक्षरशः वैसे ही हैं जैसे अरेराज के स्तम्भ पर हैं। नागरी अक्षर में भी सम्वत् १५६६ में इसपर कुछ लिखा गया था। एक जगह लिखा है—नृप नारायण सुत नृप अमर सिंह। इसकी तारीख नहीं दी हुई है। अँगरेजी में भी १७९२ ई० का लिखा एक अँगरेज का नाम है।

स्तम्भ को कुछ लोग शिवलिंग समझ कर पूजते हैं; कोई इसे भीम की लाठी भी कहते हैं।

स्तम्भ से पौन मील दूर नन्दनगढ़ नामक टील्हे पर जो ८० फीट ऊँचा है एक छोटे-से मंदिर का चिह्न है। विन्सेन्ट स्मिथ ने इस टील्हे को बुद्ध की चिता के भस्म पर बना हुआ स्तूप बताया है। लेकिन, डा० ब्लाच ने इसे पुराने किले का भग्नावशेष कहा है। हाल में यहाँ खुदाई हुई है।

गाँव के उत्तर में तीन पंक्ति में १५ टील्हे हैं जो बहुत पुराने मालूम पड़ते हैं। एक टील्हे में एक चाँदी का सिक्का मिला था जो ईसा से भी हजार वर्ष पहले का था। जेनरल कनिंघम ने इन टील्हों को ईसा के ६०० से १००० वर्ष पहले तक के राजाओं की समाधि समझा था, जिसे उसने बुद्ध के उल्लेख से भी साबित करने की चेष्टा की है। डा० ब्लाच आदि की खुदाई से भी यही बात प्रमाणित होती है। लौरिया नन्दनगढ़ से पच्छिम

कई मील तक सैकड़ों छोटे-छोटे टील्हे हैं जो समाधिस्थान जान पड़ते हैं।

शिकारपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सिकटा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सुमेश्वर—जिले के उत्तर में सुमेश्वर पहाड़ी के ऊपर समुद्र तले से २८८४ फीट की ऊँचाई पर एक किला है। १८१४ ई० के नेपाल युद्ध के समय यहाँ अँगरेजी सेना रहती थी। यहाँ से धौलागिरि, गौरीशंकर आदि की चोटियाँ साफ नजर आती हैं। किले के २०० फीट नीचे पहाड़ पर एक सुन्दर बंगला है जहाँ पहले सैनिटोरियम बनाने का विचार था।

भागलपुर जिला

भागलपुर (सदर) सबडिविजन

भागलपुर—जिले का प्रधान शहर भागलपुर गंगा के दाहिने किनारे २५° १५' उत्तरीय अक्षांश और ८७° पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ इस नाम की कमिश्नरी और जिले का सदर आफिस है। यह एक मुख्य व्यापारिक स्थान है जहाँ ई० आई० आर० और बी० एन० डब्ल्यू० आर० के स्टेशन हैं। ई० आई० आर० की लाइन द्वारा कलकत्ते से इसकी दूरी २६५ मील और गंगा नदी द्वारा ३२६ मील है। सन् १९३१ की मनुष्यगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या ८३,८४७ है जिसमें ५८,२४८ हिन्दू, २४,५५५ मुसलमान, ७६९ ईसाई, १०६ आदिम जाति के लोग और ६९ जैन हैं। यह स्थान प्राचीन अङ्ग राज्य की राजधानी था और इसका नाम था चम्पा। भागलपुर नाम कब और क्यों पड़ा, यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह नाम मुसलमानी वक्त में पड़ा होगा। सम्भवतः भाग्यपुर से भागलपुर या 'भागे हुए लोगों का पुर' अर्थ में भागलपुर हुआ हो। कुछ लोग भगलू नामक एक व्यक्ति के नाम पर इसका नामकरण बताते हैं। महाभारत काल के राजा भगदत्त के नाम पर भी इस नाम का पड़ना बताया जाता है, मगर भगदत्त प्राग्ज्योतिषपुर (वर्तमान आसाम) का राजा था और भागलपुर के साथ इसका कोई खास सम्बन्ध नहीं था। इस कारण यह मत ठीक नहीं जान पड़ता। महाभारत के प्रसिद्ध राजा कर्ण यहीं हुए थे। शहर का कर्णगढ़ नाम का टील्हा राजा

कर्ण के गढ़ और राजमहल का भग्नावशेष समझा जाता है। इसका वर्णन अलग भी मिलेगा। १५७३ और १५७५ ई० में बंगाल पर चढ़ाई करते समय अकबर की सेना इसी शहर से होकर गयी थी। बंगाल के साथ अकबर का जो दूसरा युद्ध हुआ उसमें उसके सेनापति मानसिंह ने अपना अड्डा भागलपुर में ही बनाया। यहीं से १५९२ ई० में बंगाल के विद्रोहियों को दबाने के लिये छोटानागपुर होकर सेना बर्दवान भेजी गयी थी, पीछे उड़ीसा का युद्ध हुआ था। इसके बाद से ही भागलपुर में एक शाही फौजदार रहने लगा था।

१७७७ और १७७८ ई० में दक्षिण की पहाड़ी जातियों को दबानेवाले भागलपुर के कलक्टर क्लीवलैंड क दो स्मारक इस शहर में हैं। उन में एक तो ईंट का है जिसे स्थानीय जमींदारों ने बनवाया था और दूसरा पत्थर का है जिसे ईस्ट इण्डिया कंपनी के डाइरेक्टरों ने इङ्गलैण्ड से भेजा था। भागलपुर शहर और इसके पास चम्पानगर में मुसलमानों की कई पुरानी मस्जिदें हैं। मोलनाचक की मस्जिद बादशाह फर्रुखसियर के वक्त की है। जैनियों के भी यहाँ दो सुन्दर मन्दिर हैं, जिनमें एक गत शताब्दी के प्रसिद्ध जगतसेठ का बनवाया हुआ है। भागलपुर के तसर का कारबार खास तौर से मशहूर है। सरकारी कचहरियों के अलावे शहर की उल्लेख योग्य चीजों में यहाँ का सेन्ट्रल जेल, दो अस्पताल, एक कमर्शियल स्कूल, चार लड़कों के हाई स्कूल, दो लड़कियों के हाई स्कूल, एक गर्ल्स ट्रेनिंग स्कूल और एक कालेज है।

अमरपुर—भागलपुर परगने में यह एक गाँव है जो जिले के दक्षिण भाग में चावल और मकई के व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ एक दिग्घी अर्थात् तालाब है जो १३०० फीट

लंबा और ७०० फीट चौड़ा है। इसके किनारे एक मस्जिद है जो शाहशुजा की बनवायी बतायी जाती है। कहते हैं कि यह मस्जिद ताड़ के पेड़ के बराबर ऊंची थी और उसमें बहुत-सा धन छिपा हुआ था जिसके लिये वहाँ के एक जमींदार ने उसे तोड़वा दिया। वह सात दिन तक सोना-चाँदी ढोता रहा; लेकिन उस धन के मालिक ने, जो प्रेत होकर उस धन के पास रहता था, बड़ा उपद्रव मचाया। वह जमींदार पागल हो गया, उसका धन देखते ही देखते गायब हो गया और वह निर्धन होकर मरा।

कर्णगढ़—भागलपुर शहर में यह एक पहाड़ी टील्हा है। कहते हैं कि यहाँ महाभारत के प्रसिद्ध राजा कर्ण का गढ़ था। टील्हे के पच्छिम कई जगह किले की खाई और बुर्ज के कुछ चिह्न अब भी देखने में आते हैं। करीब सौ-सवा सौ वर्ष पहले डा० बुकानन हैमिल्टन ने लिखा था कि यह किला ठीक वैसा ही मालूम पड़ता है जैसा कि पूर्णिया का कर्ण के समकालीन कीचक का महल। किला वर्गाकार जान पड़ता है और इसकी दीवाल सादी है अर्थात उसपर कोई काम किया हुआ नहीं है। किले के चारों ओर खाई है। किले के हाते में कोई खोह नहीं दिखायी पड़ती। समूचा अहाता भग्नावशेष से भरा है। वर्तमान युग में सन् १७८० ई० में जिले के कलक्टर क्लीवलैंड ने दक्षिण की जंगली जातियों को दबाने के लिये कुछ पहाड़ी लोगों की सेना की यहाँ छावनी कायम की थी। देशी सैनिकों का संगठन हो जाने पर पहाड़ी सेना हटा दी गयी। अब यहाँ शिवजी के कुछ मन्दिर रह गये हैं जिनमें से एक कई सौ वर्ष का पुराना है। क्लीवलैंड के दोनों स्मारक और विद्यासागर-संस्कृत पाठशाला इसी अहाते में है।

कहलगाँव—गंगा के दाहिने किनारे २५°१६' उत्तरीय अक्षांश और ८७°१४' पूर्वीय देशान्तर पर यह एक शहर है। यहाँ ई० आई० आर० का एक स्टेशन, थाना, अस्पताल और हाई स्कूल है। १९३१ ई० की गणना के अनुसार कहलगाँव शहर की जनसंख्या ५,२३३ है। कहलगाँव व्यापार का एक केन्द्र है। १८६९ ई० में यहाँ एक म्युनिसिपैलिटी स्थापित हुई थी जो अब भी कायम है। कहलगाँव शब्द की उत्पत्ति कुलगंग (गंगावट) शब्द से हुई है। बंगाल का अंतिम स्वतंत्र राजा महमूदशाह १५३९ ई० में यहीं मरा। यहाँ गंगा के बीच पहाड़ी टील्हे पर पत्थर का एक मंदिर है। यहाँ पहले कितनी ही सुन्दर मूर्त्तियाँ थीं। चीनी यात्री ह्वेनच्वाङ् (ह्वेनसन) यहाँ आया था। यहाँ उसने एक बहुत बड़ा मंदिर भी देखा था जिसे पीछे सम्भवतः मुसलमान आक्रमणकारियों ने तोड़ डाला। यहाँ गंगा कुछ दूर तक उत्तर की ओर बहती है; इसलिये हिन्दू लोग इस स्थान को पवित्र समझते हैं।

गोपालपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

जहँगीरा—सुलतानगंज के पास गंगा के किनारे जहँगीरा एक गाँव है। कहते हैं कि जह्नु ऋषि के नाम पर बनते-बिगड़ते इस गाँव का नाम जहँगीरा हो गया। कहा जाता है कि नदी के अन्दर जो एक छोटा पहाड़ है उसी पर जह्नु ऋषि का आश्रम था। इसके सम्बन्ध में विशेष विवरण सुलतानगंज के वर्णन में मिलेगा।

पत्थरघाटा पहाड़ी—कहलगाँव से ८ मील उत्तर-पूरब यह पहाड़ी गंगा के किनारे है। पहाड़ी के उत्तरी भाग में ८४ सिद्धों की मूर्त्तियाँ खोदी हुई हैं जो लगभग ७ वीं या ८ वीं सदी की होंगी। पहाड़ी में ५ गुफाएँ भी हैं जिनमें मुख्य बटेश्वर गुफा

है। यहाँ पीतल और चाँदी की मूर्त्तियाँ मिली हैं। राजा बल्लाल-सेन के समय यह शासन का एक केन्द्र-स्थान था। कहते हैं, यहाँ के बटेश्वर शिवलिंग की स्थापना इसके सम्बन्धी और राजप्रतिनिधि बटमित्र ने अपने नाम पर की थी। यहाँ पर ८०० वर्षों का पुराना मंदिर अब भी किसी रूप में कायम है। हिन्दू इसे तीर्थ-स्थान मानते हैं।

पीरपैंती—यहाँ ई० आइ० आर० का स्टेशन और थाना है। यह व्यापार का एक केन्द्र है। यहाँ से बहुत-सा माल बाहर भेजा जाता है। यहाँ के पास की पहाड़ी से पत्थर काटा जाता है।

बटेश्वर स्थान—दे० पत्थरघाटा पहाड़ी।

बरारी—यह गंगा के दाहिने किनारे पर है। यहाँ बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का स्टेशन है। यहाँ की गुफायें बहुत प्रसिद्ध हैं। इनसे कुछ सिक्के निकले हैं जो ईसा से कई सौ वर्ष पहले उत्तरी भारत में प्रचलित थे। चीनी यात्री ह्वेनसन यहाँ आया था। उसने बुद्ध के जन्म के पहले की यहाँ की एक कहानी लिखी है। वह कहता है कि चम्पा के पास एक घोरई या चरवाहा रहता था। उसका एक बैल भटककर यहाँ चला आया और जब लौटा तब अत्यन्त सुन्दर हो गया, उसकी आवाज भी बदल गयी। यह हालत देख-कर वह चरवाहा एक दिन बैल का पीछा करता हुआ गुफा के अंदर चार हजार फीट तक चला गया। वहाँ एक सुन्दर वन देखा जहाँ ऐसे सुन्दर फल-फूल लगे हुए थे जो मनुष्यों के कभी देखने में नहीं आते। वह चरवाहा फल लेकर बाहर आ रहा था कि फाटक पर एक दैत्य ने फल छीन लिया। दूसरे दिन वह उसी तरह वन में जाकर फल को छिपाकर ला रहा था कि दैत्य वहाँ पहुँच गया। इसपर चरवाहा मजबूर होकर फल को

खा गया, नतीजा यह हुआ कि उसका पेट इतना फूल गया कि वह फाटक से निकलने लायक नहीं रहा। जब वहाँ के राजा को यह बात मालूम हुई तो उसने आकर उसकी हालत देखी; लेकिन वह कुछ नहीं कर सका। कुछ दिन के बाद वह चरवाहा पत्थर हो गया। हेनसन ने उसके बचे अंश को देखा था।

बिहपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

शाहकुंड—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सुलतानगंज—गंगा के किनारे यह एक छोटा-मोटा शहर है। यहाँ ई० आइ० आर० का स्टेशन, थाना, अस्पताल, हाई-स्कूल और शराब की एक फैक्टरी है। यहाँ गंगा नदी के बीच एक छोटा पहाड़ है जिसपर कई मंदिर और पेड़ हैं। एक मंदिर में शिवलिंग है जिसे लोग गैबीनाथ महादेव कहते हैं। यहाँ का दृश्य बहुत सुन्दर है। कहते हैं कि जह्नु ऋषि का आश्रम यहीं था। यों तो लोग यहाँ बराबर आया करते हैं, पर माघी पूर्णिमा में यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। पहाड़ पर कुछ हिन्दू और कुछ बौद्ध मूर्त्तियाँ खोदी हुई हैं। इससे मालूम पड़ता है कि यह किसी समय बौद्धों के भी अधिकार में था। गंगा के किनारे एक दूसरा छोटा पहाड़ है, उसपर भी बहुत-सी हिन्दू और बौद्ध मूर्त्तियाँ खोदी हुई हैं। यहाँ गुप्त साम्राज्य-काल का शिलालेख भी है। यह लेख लगभग तीसरी शताब्दी का समझा जाता है। इस चट्टान पर अब एक मस्जिद है। रेलवे स्टेशन के पास बौद्ध विहार के भग्नावशेष बहुत दूर तक फैले हुए हैं। यहाँ बहुत-सी मूर्त्तियाँ मिली थीं, जिनमें एक मनुष्याकार ताँबे की बौद्ध मूर्त्ति भी थी। द्वितीय चन्द्रगुप्त के समय के दो सिक्के भी यहाँ मिले थे। पास ही में एक पुराना सुन्दर स्तूप टूटे-फूटे रूप में मौजूद है। रेलवे स्टेशन से पच्छिम कर्णगढ़ नामक एक पुराना

टील्हा है। मालूम नहीं, इसका सम्बन्ध किस वर्ण से था। इस समय इसपर बनेली के कुमार कृष्णानन्द सिंह की इमारत बनी है। कुमार साहब के प्रबंध से यहाँ से 'गंगा' नाम की एक हिंदी मासिक पत्रिका और 'हलधर' नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकलता था। सुलतानगंज के पास गंगा उत्तर की ओर बहती है; इसलिये हिन्दू लोग इस स्थान को बहुत पवित्र समझते हैं। पालवंश के समय के प्रसिद्ध विक्रमशिला बौद्ध विश्व-विद्यालय का स्थान कहलगाँव, पत्थरघाटा या सुलतानगंज समझा जाता है।

बाँका सबडिविजन

बाँका—चन्दन नदी के किनारे २४°५२' उत्तरीय अक्षांश और ८६°५६' पूर्वीय देशान्तर पर यह एक छोटा शहर जैसा है। यहाँ सबडिविजन का सदर दफ्तर, कचहरियाँ, जेल, अस्पताल, थाना और हाईस्कूल हैं।

अमरपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

कटोरिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

डुमराँव—यहाँ देवी राजा के किले का भग्नावशेष है। इसका घेरा एक मील या इससे भी कुछ ज्यादा था। किले की दीवाल बिलकुल मिट्टी की थी और उसके चारों ओर खाई थी। किले के भीतर जाने के सात दरवाजे थे जिनमें कुछ अब भी देखने में आते हैं। इसी किले के भीतर यहाँ का अन्तिम राजा खेतौरी मुसलमानों से लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुआ था।

धुरैया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बेलहर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बौंसी—मंदार पहाड़ी के पास यह एक गाँव है। इस पहाड़ी के चारों ओर एक-दो मील तक पुराने मकानों के खँडहर, तालाब, बड़े-बड़े कुएँ और पत्थर की मूर्त्तियाँ हैं। इससे पता चलता है कि यहाँ पहले एक बहुत बड़ा नगर रहा होगा। आस-पास के लोग कहते हैं कि इस नगर में ५२ बाजार, ५३ सड़कें और ८८ तालाब थे। कहा जाता है कि इस नगर के एक विशाल मंदिर में दीपावली के दिन एक लाख दीपक जलते थे और हर घर से केवल एक दीपक आता था। दीपक रखने के लिये दीवाल में छोटे-छोटे छेद थे। उस मन्दिर की टूटी-फूटी दीवाल में अब भी छेद नजर आते हैं। इस मंदिर से सौ गज की दूरी पर एक पुराना टूटा-फुटा बड़ा महल है जो काँचपुरी के राजा चोल का बनवाया बताया जाता है। इसको हुए करीब २२०० वर्ष हुए। महल की दीवाल पत्थर की है। महल के बीच एक हाल, सामने बरण्डा और बगल में ६ कमरे हैं। कहते हैं कि राजा चोल यहाँ एक कुंड में स्नान कर कुष्ट रोग से मुक्त हुआ था; इसलिये यहाँ उसने एक महल बनवाया, नगर बसाया और उसे भली भाँति सजाया। एक विजयसूचक पत्थर के मेहराब पर खुदे संस्कृत के एक लेख से पता चलता है कि १५६७ ई० के करीब यह नगर वर्तमान था। कुछ लोग कहते हैं कि कालापहाड़ नामक प्रसिद्ध मुसलमान आक्रमणकारी ने इस नगर का ध्वंस किया। मंदार पहाड़ पर के मधुसूदन मंदिर के नष्ट होने पर वहाँ की मूर्त्ति बौंसी लायी गयी थी जो अब भी यहाँ मौजूद है। पौष संक्रान्ति के दिन मूर्त्ति पहाड़ के पास ऊपर कहे मेहराब पर लटकायी जाती है। उस समय यहाँ एक बड़ा मेला लगता है जो १५ दिनों तक रहता है और जिसमें करीब ५० हजार आदमी आते हैं। सबडिविजन का सदर दफ्तर पहले बौंसी ही में था।

मन्दार गिरि—यह पहाड़ी भागलपुर शहर से ३० मील दक्षिण है। यहाँ भागलपुर से ई० आइ० आर० की एक लाइन आयी है। इस पहाड़ी की ऊँचाई करीब ७०० फीट और घेरा तीन-चार मील है। इसके ऊपर कुछ जंगल-झाड़ भी है। हिन्दू इसे पवित्र स्थान समझते हैं। स्कन्द-पुराण, वाराह-पुराण, मार्कण्डेय-पुराण, ब्रह्मवैवर्त-पुराण, गणेश-पुराण आदि में इसका माहात्म्य लिखा है। पहाड़ी की चोटी पर टूटे-फूटे दो सबसे पुराने मंदिर और कई गुफाएँ हैं। यहाँ तक पहुँचने की सीढ़ियाँ बनी हैं। सीढ़ी पर के एक लेख से जान पड़ता है कि सीढ़ी को उग्रभैरव नामक एक बौद्ध राजा ने बनवाया था। ये मन्दिर मुसलमानी काल के पूर्व चोल राजा छत्रसेन के बनवाये बताये जाते हैं। चट्टान पर कुछ मूर्त्तियाँ भद्दे रूप में खुदी हैं और दो शिलालेख भी हैं। पहाड़ी के ऊपर और नीचे बहुत-से तालाब हैं। सबसे बड़े तालाब को सीताकुंड कहते हैं। यह कुण्ड ५०० फीट ऊँचे टील्हे पर बने सबसे पुराने मंदिर के खँडहर के सामने है। पहाड़ी पर शिवकुण्ड, शंखकुण्ड और आकाश कुण्ड भी हैं। जहाँ-तहाँ बहुत-सी टूटी-फूटी मूर्त्तियाँ पायी जाती हैं।

पुराणों में लिखा है कि एक बार विष्णु क्षीरसागर में सोये थे कि उनके कान के मल से मधुकैटभ नाम का एक राक्षस उत्पन्न हुआ। जब वह ब्रह्मा, विष्णु और महेश तथा अन्य देवताओं को सताने लगा तो विष्णु को उसके साथ युद्ध करना पड़ा। दस हजार वर्ष तक युद्ध करते रहने के बाद विष्णु उसके शिर को धड़ से अलग कर सके। लेकिन. बिना शिर का धड़ भी उत्पात करता ही रहा। इसपर विष्णु ने उसपर मन्दार-गिरि को रख दिया और उसे अपने पाँव से दबाये रहे। इस तरह

मंदार पर्वत (भागलपुर)

गंगा के बीच पहाड़ी पर गैबीनाथ का मंदिर , सुलतानगंज (भागलपुर)

प्रस्तर-मूर्त्तियाँ, पत्थरघाट (भागलपुर)
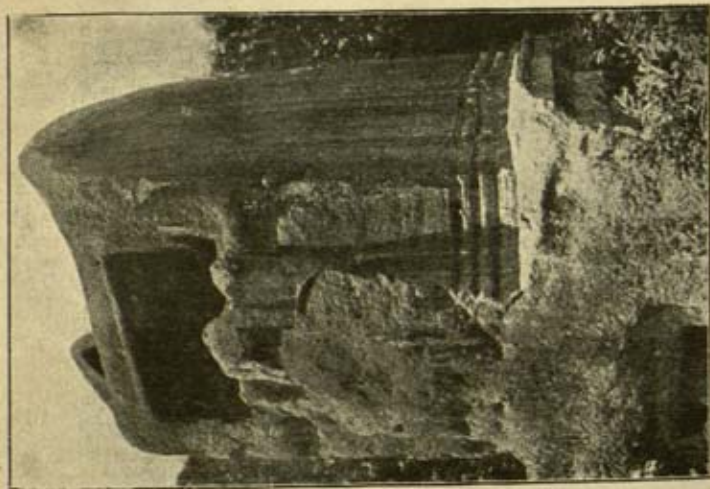
चट्टान से बना मंदिर, कहलगाँव (भागलपुर)

मधुसूदन के रूप में विष्णु सदा इस गिरि पर मौजूद समझे जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि मन्दारगिरि वही पर्वत है जिसको लेकर लक्ष्मी और अमृत को निकालने के लिये देवताओं ने समुद्र-मंथन किया था। इस मंथन में शेषनाग ने रस्सी का काम किया था। पर्वत के घेरावे में खोदकर एक विशाल सर्प का चिह्न बना दिया गया है। कहते हैं कि चोल राजा ने ही इसे बनवाया था। लेकिन, बहुत-से धार्मिक हिन्दू इस पर्वत को वह मन्दार गिरि नहीं समझते हैं। वे कहते हैं कि सुमेर पर्वत से समुद्र मथा गया था।

पुरातत्व-प्रेमियों के लिये भी यह स्थान देखने योग्य है; क्योंकि पहाड़ के चारों ओर एक-दो मील तक बहुत-से पुराने मकानों, तथा हिन्दू और बौद्ध मूर्त्तियों के भग्नावशेष मिलते हैं। इससे मालूम होता है कि यहाँ पहले एक बहुत बड़ा नगर रहा होगा। इस स्थान पर बौंसी एक मुख्य गाँव है। यहाँ की विशेष बातें इस गाँव के वर्णन में दी गयी हैं।

रजौन—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

मधेपुरा सबडिविजन

मधेपुरा—परवान नदी के दाहिने किनारे २५°५६' उत्तरीय अक्षांश और ८६°४८' पूर्वीय देशान्तर पर यह एक छोटे शहर-सा है। सहर्षा से बी० एन० डब्ल्यू० आर० की एक ब्रांच लाइन यहाँ तक आयी है। यहाँ इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर, सरकारी कचहरियाँ, जेल और एक हाईस्कूल है।

आलमनगर—किसुनगंज से ७ मील दक्षिण-पश्चिम छाल परगने में यह एक गाँव है। यहाँ चन्देल सरदारों का निवास-स्थान था जिनके अधिकार में ५२ महाल थे और उनसे काफी

आमदनी होती थी। जिले में इन राजाओं की बड़ी कद्र थी। अब इनके वंशजों के हाथ में सिर्फ दो गाँव रह गये हैं। उस समय की राजकचहरी, किले की दीवाल और कितने ही सुन्दर तालाब अब भी देखने में आते हैं।

कड़ामा—मधेपुरा से पूरब-दक्षिण इस गाँव में दसवीं सदी में सुप्रसिद्ध विद्वान उदयनाचार्य्य हुए थे। आप बौद्ध और जैन धर्म के प्रबल विरोधी थे। आपके वंशज अभी भी इस गाँव में हैं। कुछ लोग उदयनाचार्य के घर और पाठशाले की डीह दरभंगा जिले के करियन गाँव में बताते हैं जो रोसड़ा रेलवे स्टेशन से ७-८ मील की दूरी पर है। वहाँ की वर्तमान पाठशाला के विद्यार्थी पहले पहल उसी डीह की मिट्टी लेकर अक्षर लिखना आरम्भ करते हैं।

कपगढ़—दे० श्रीनगर।

किसुनगंज—इस नाम के थाने का सदर दफ्तर पहले इसी गाँव में था। कोशी नदी के उत्पात से अब दफ्तर छः मील दक्षिण पुरैनी गाँव में लाया गया है। यह लक्ष्मीपुर से मधेपुरा जानेवाली सड़क पर है। यहाँ एक छोटा बाजार, अस्पताल, डाकबँगला और पोस्टआफिस है। पहले यहाँ मुन्सिफ की कचहरी भी थी जो अब मधेपुरा चली गयी है।

गाजीपिटा—मधेपुरा से १६ मील दक्षिण किसुनगंज थाने में यह एक गाँव है। यहाँ एक चण्डी-स्थान है जो बराँटपुर मंदिर कहलाता है। मंदिर से एक मील उत्तर अलीखाँ नाम का एक मुसलमान राजा रहता था जिसके किले का भग्नावशेष अलीगढ़ कहलाता है।

चैनपुर—यह एक पुरानी बस्ती है और यहाँ बहुत-से ब्राह्मण पंडित रहा करते हैं।

तलवोरी—यहाँ पर एक पुराने किले का चिह्न मिलता है।

धबोली—धबोली, मदनपुर और पत्थरघाट के किले को भार जाति के सरदार तीन भाइयों ने एक दूसरे से अपनी रक्षा के लिये बनवाया था। लेकिन, अब पत्थरघाट के किले के चिह्न ही देखने में आते हैं।

पचगछिया—मनसी-भपटियाही रेलवे लाइन पर इस नाम के स्टेशन से २ मील पच्छिम यह एक गाँव है। यहाँ हाईस्कूल, अस्पताल, डाकघर और धर्मशाला है। यहाँ पुराने खानदान के एक पमार राजपूत जमींदार रहते हैं जिनके स्टेट का नाम पचगछिया स्टेट है। इस वंश के लोग अपना सम्बन्ध उज्जैन के राजा विक्रमादित्य से बताते हैं। विक्रमादित्य के एक वंशज पृथ्वीराज सिंह मालवा से आकर तिरहुत के गंधवर गढ़ में बसे। वहीं से इनकी संतान फिर भिन्न-भिन्न जगहों में गयी। अब भी ये लोग गंधवरिया कहलाते हैं।

पत्थरघाट—दे० धबोली।

बनगाँव—मैथिल ब्राह्मणों की यह एक पुरानी बस्ती है। यहाँ बहुत-से ब्राह्मण पंडित रहते हैं। यहाँ थाने का सदर आफिस भी है।

बराँटपुर—किसुनगंज थाने में यह एक गाँव है जो बनगाँव से शहमोरा जानेवाली सड़क के किनारे बसा है। यहाँ एक पुराने किले का चिह्न है जो महाभारत के प्रसिद्ध राजा विराट का समझा जाता है। महाभारत में लिखा है कि अज्ञातवास के समय पाण्डवों ने वेष बदलकर राजा विराट के यहाँ नौकरी कर ली थी। विराट के बहनोई कीचक ने द्रौपदी को ले लेना चाहा, जिसपर भीम ने उसे मार डाला। दुर्योधन के दल ने विराट की एक लाख गौओं को जब हरण किया तो अर्जुन ने उससे लड़-

कर गौएँ लौटा लीं। कहते हैं कि प्राचीन पुस्तकों में वर्णित उत्तर गो-गृह बरांटपुर के आसपास ही था। कुछ लोग पूर्णिया जिले के अन्दर ठाकुरगंज को विराट का स्थान बताते हैं। चम्पारण के वैराठी और दरभंगा जिले के विराटपुर में भी विराट नगर का होना अनुमान किया जाता है। बहुत लोग जयपुर और मथुरा में भी इस नगर का स्थान समझते हैं। बरांटपुर और उसके पास रोहता नामक स्थान में पालवंश के समय करीब ११०० ई० में बौद्धों के बनवाये मंदिर के भग्नावशेष हैं। बरांट-पुर के पुराने मंदिर के भग्नावशेष पर नया मंदिर बना है।

विजयगढ़—दे० श्रीनगर।

मदनपुर—दे० धबोली।

मधुकरचक—यहाँ एक मुसलमान राजा के किले का चिह्न है। इसके सम्बन्ध में विशेष बातें मालूम नहीं।

मधेली—मधेपुरा थाने के अन्दर मधेपुरा से १० मील उत्तर-पूरब यह एक गाँव है जो व्यापार का केन्द्र है। पास में बहनेवाली दरोसबरी नदी और बी० एन० डब्ल्यू० आर० के राघोपुर स्टेशन से माल बाहर जाता और भीतर आता है। मधेली से दक्षिण-पूरब बसन्तपुर नामक गाँव में एक किले का भग्नावशेष है जो राजा सोत और बसन्त का समझा जाता है।

महेसी—बनगाँव थाने में यह एक गाँव है जिसका प्राचीन नाम माहिष्मती नगरी था। इसके पूरब धेमरा नदी बहती है। यह वशिष्ठ मुनि की तपस्या का स्थान समझा जाता है। यहाँ उग्रतारा देवी का मन्दिर है। यह स्थान उपपीठ कहलाता है। कथा है कि सती के मृत शरीर को लेकर जब शिवजी घूम रहे थे तो विष्णु के चक्र से ५२ स्थानों पर सती के मुख्य-मुख्य अंग कट-कटकर गिरे जो पीठ-स्थान कहलाये और २४ स्थानों पर छोटे-

छोटे अंग गिरे जो उपपीठ कहलाये। इन्हीं उपपीठों में महेसी भी एक उपपीठ है। कहते हैं, सुप्रसिद्ध पं० मंडन मिश्र और उनकी स्त्री सरस्वती देवी यहीं हुई थीं। प्राचीन काल में शिक्षा का यह केन्द्र-स्थान था। इसी के पास गोरहो घाट के पूरब दुर्वासा ऋषि का आश्रम बताया जाता है।

मुरलीगंज—यह गाँव दाउस नदी के किनारे बसा है। पहले यह व्यापार का मुख्य केन्द्र था।

मीरगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

राजघाट—यहाँ हाल के किसी राजा के किले का भग्नावशेष है।

रोहता—दे० बराँटपुर।

लोहुर—दे० शाहपुर चौमुख।

शाहपुर चौमुख—यह एक बड़ा गाँव है। इसके सटे हुए लोहंड या लोहुर नामक स्थान में लक्ष्मीनारायण का मंदिर है जो बहुत प्रसिद्ध है।

श्रीनगर—इस गाँव में दो टूटे-फूटे किलों का अवशेष और एक देवालय है। कहते हैं कि तीन-चार सौ वर्ष पूर्व राजा श्रीदेव यहाँ रहते थे। इनके दो भाई थे, बीजलदेव और कूपदेव। बीजलदेव का किला बीजलगढ़ या बीजलपुर में तथा कूपदेव का किला कूपगढ़ में था। ये दोनों बनगाँव थाने में हैं। श्रीनगर किले के पास हरिसार और गुप नाम के दो तालाब हैं। देवालय में शिवलिंग है, जिसपर एक लेख है जो पढ़ा नहीं जाता।

सरसेन्दी—इस गाँव से एक मील दक्षिण-पूरब एक मस्जिद है जो ५०० वर्ष से भी पहले की बतायी जाती है। मस्जिद से आधा मील उत्तर एक टील्हा है जिसका रकबा १२० वर्गफीट है। यह राजा बैरीसाल का गढ़ बताया जाता है। पास ही में एक और टील्हा है जो राजा का जेल समझा जाता है। इस गाँव

के नजदीक ही शेरुलमुल्क और सादुलमुल्क नाम के दो भाई फकीर थे। कहते हैं कि इनसे परास्त होकर राजा ने अपनी बहन दाय ठकुरानी का विवाह सादुलमुल्क से कर दिया। पीछे ये दोनों भाई मारे गये। दाय ठकुरानी, दोनों भाई तथा उनके परिवार के और कई लोगों की कब्र वहाँ मौजूद हैं।

सिंघेश्वर थान—मधेपुरा से ४ मील उत्तर इस गाँव में शिवजी का मंदिर है। शिवरात्रि के समय यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है जिसमें दूर-दूर के लोग भी आते हैं। इसमें हाथी, घोड़े, गाय, बैल वगैरह जानवर काफी तायदाद में खरीदे-बेचे जाते हैं। यह भूभाग और मंदिर किसी समय भार लोगों के हाथ में था। अब यहाँ के पण्डे ही इसके मालिक हैं। वाराह-पुराण में लिखा है कि सृष्टि के आदि काल में एक बार शिवजी ने वाराह (सूअर) का रूप धारण किया। देवता लोग उन्हें पकड़ने के लिये दौड़े। इन्द्र ने उनके शृंग का अग्र भाग, ब्रह्मा ने मध्य भाग और विष्णु ने मूल भाग पकड़ा। शृंग के तीनों भाग तीनों के हाथ में रह गये और शिवजी लुप्त हो गये। आकाश-वाणी हुई कि अब आपलोग शृंग से ही संतोष करें, मुझे आप लोग नहीं पा सकते। विष्णु ने अपने हाथ के शृंग के मूल भाग को वहीं स्थापित किया और उसका नाम शृंगेश्वर पड़ा। शृंगेश्वर से ही अब सिंघेश्वर शब्द बना है।

सोनबरसा—तलवा नदी के पास बी० एन० डब्ल्यू० आर० की मनसी-भपटियाही लाइन पर यह एक गाँव है। यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम है सोनबरसा कचहरी। यहाँ एक पुराने राजपूत घराने के जमींदार रहते हैं जो अपना सम्बन्ध उज्जैन के प्रसिद्ध राजा विक्रमादित्य से बतलाते हैं। इनकी तहसील करीब दो-तीन लाख रुपये की है। पहले इनके पूर्वज मालवा

से मिथिला आकर बसे। महाराज नीलदेव ने मिथिला में राज्य कायम किया। १६५४ ई० में औरंगजेब ने इस वंश के प्रमुख व्यक्ति केसरी सिंह को राजा की उपाधि दी। राजा अमर सिंह ने सिहोल में किला बनवाया जिसका चिह्न अब भी देखने में आता है। यहाँ के राजा फतह सिंह ने मीरकासिम के विरुद्ध उदयनाला की लड़ाई में अँगरेजों की सहायता की थी। पिछले नामी राजा महाराज बहादुर सर हरवल्लभ नारायण सिंह सन् १६०७ में मरे। सोनबरसा में थाने का सदर आफिस है।

सुपौल सबडिविजन

सुपौल—यह मनसी-भपटियाही लाइन के किनारे २६°६' उत्तरीय अक्षांश और ८६°३६' पूर्वीय देशान्तर पर एक छोटे शहर-सा है। यह इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। यहाँ सरकारी कचहरियाँ, जेल, अस्पताल, रेलवे-स्टेशन और हाईस्कूल हैं।

खन्दौली—नेपाल की सीमा से थोड़ी ही दूर पर नारेदिगर परगने के अन्दर यह एक गाँव है। यह व्यापार का केन्द्र है। नेपाल के साथ इसका व्यापार खूब चलता है।

डगमरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

डपरखा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

प्रतापगंज—यह हरावत परगने में है। यहाँ एक अच्छा बाजार और थाने का सदर आफिस है।

बलुआ—धाफर परगने में यह एक गाँव है जो सबडिविजन के अन्दर व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ बहुत-से बंगाली व्यापारी हैं।

बीरपुर—यह धाफर परगने के अन्दर नेपाल की सीमा पर है। पहले यह व्यापार का एक बहुत बड़ा अड्डा था; लेकिन अब यहाँ का व्यापार कोशी नदी के उत्पात से बहुत घट गया है।

भीमनगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

मुँगेर जिला

मुँगेर (सदर) सबडिविजन

मुँगेर—जिले का प्रधान शहर मुँगेर २५°२३′ उत्तरीय अक्षांश और ८६°२८′ पूर्वीय देशान्तर पर गंगा के किनारे बसा है। यहाँ जिले का सदर आफिस है। सन् १९३१ की मनुष्य-गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या ५२,८६३ है, जिसमें ४०,९२६ हिन्दू, ११,८१२ मुसलमान, १२४ ईसाई और १ जैन हैं। मुँगेर का पहला नाम मोद्गिरि या मुद्गलपुरी भी है। महाभारत के सभा-पर्व में लिखा है कि अंग देश के राजा कर्ण को जीतने के बाद भीम ने मोद्गिरि के राजा के साथ लड़ाई कर उसे मार डाला। मौर्य्य सम्राट चन्द्रगुप्त से भी मुँगेर का सम्बन्ध बतलाया जाता है। कहते हैं कि इसी कारण इसका गुप्तगढ़ भी नाम पड़ा था। कष्टहरणी घाट के पत्थर पर भी यह नाम खुदा हुआ है। यहाँ का किला भी किसी हिन्दू-काल का मालूम पड़ता है जो समय-समय पर मरम्मत होता चला आया है। मुँगेर की पीर पहाड़ी पहले मुद्गल गिरि कहलाती थी; क्योंकि यहाँ मुद्गल नाम के एक ऋषि रहते थे। चीनी यात्री य्वनच्वाङ् (ह्वेनसन) भी इस नाम से परिचित था। पालवंशी राजाओं के संस्कृत-लेखों में भी यह नाम आया है। कहते हैं, मुँगेर मुद्गलपुरी का ही अपभ्रंश है। मुँगेर में दसवीं सदी में पालवंशी राजाओं का शाही कैम्प था।

मुंगेर शहर में किला एक रमणीक स्थान है। यह चार हजार फीट लम्बा और साढ़े तीन हजार फीट चौड़ा है। इसके एक ओर गंगा नदी और तीन ओर खाइयाँ हैं जिनमें अब भी बरसात में गंगा का पानी भरा रहता है। किले के अन्दर सरकारी आफिस और कचहरियाँ तथा यूरोपियन और कुछ हिन्दुस्तानियों की कोठियाँ हैं। किले के पच्छिम जहाँ-तहाँ पहाड़ी टील्हे हैं जो कुछ दूर गंगा में भी चले गये हैं। किले के अन्दर एक टील्हा है जो कर्णचौरा कहलाता है। कहा जाता है कि राजा कर्ण चण्डी-स्थान से प्रति दिन सवा मन सोना लाकर इसी स्थान में दान करते थे। पास में एक और बनावटी टील्हा है जिसपर अभी हाल तक दमदम कोठी थी। इसी टील्हे पर आजकल कलक्टर की कोठी है। दमदम कोठी के तोड़ने पर उसके नीचे जमीन के अन्दर दो रास्ते मालूम पड़े थे। जेल के अन्दर के कई पुराने मकान मीरकासिम के बनवाये हुए महल और शस्त्रागार बताये जाते हैं। यहीं पर एक पुरानी मस्जिद के नीचे चार सुरंगें भिन्न-भिन्न स्थानों को गयी हैं—एक नदी के किनारे, दूसरी कम्पनी बाग की ओर, तीसरी पास के एक मकान की ओर और चौथी पीर पहाड़ी की ओर। ये सुरंगें अब बन्द कर दी गयी हैं। किले के उत्तर-पच्छिम कोने पर गंगा का एक पुराना घाट है जो कष्टहरणी घाट कहलाता है। कहते हैं कि लंका से लौटते समय रामचन्द्र सीता-सहित यहाँ उतरे थे और उस कुंड में स्नान किया था जो आज सीताकुंड कहलाता है। कष्टहरणी घाट पर दसवीं सदी का एक शिला-लेख है। घाट के पास मीरकासिम की बनायी एक सुरंग है जो गंगा के भीतर गयी हुई मालूम पड़ती है। किले के अन्दर एक और घाट है जो बबुआ घाट कहलाता है। किले के दक्खिनी

फाटक के पास १४९७ ई० की बनी शाह नफा की दरगाह है जिसकी दीवाल पर उस समय का शिलालेख है। इस दरगाह के हाते में ही मीरकासिम के लड़के-लड़कियों की भी कब्रें हैं। किले की पच्छिमी सीमा पर नदी के किनारे औरंगजेब की बेटी जेबुन्निसा का शिक्षक मुल्ला महम्मद सैयद नामक एक प्रसिद्ध कवि की कब्र है।

कहते हैं, मुँगेर शहर बहुत बड़ा था और इसके चारों ओर मिट्टी की दीवारें थीं। इसका चिह्न अब भी किले से तीन मील दक्षिण दिखाई पड़ता है। वर्तमान शहर से कुछ दूर पर पुराने मकानों के खँडहर मालूम पड़ते हैं। कासिम बाजार में बन्दूक के कई छोटे-छोटे कारखाने हैं। किले से थोड़ी दूर पर गंगा में एक चट्टान है जो मान पत्थर कहलाता है। इसमें चार पैर के चिह्न हैं जो श्रीराम और सीता के पद-चिह्न समझे जाते हैं।

शहर से तीन मील उत्तर-पूरब पीर पहाड़ी है जो मुद्गल मुनि का स्थान मुद्गल गिरि बतायी जाती है। यही चीनी यात्री ह्वेनृत्वाङ् द्वारा वर्णित हिरण्यपर्वत है। मीरकासिम के सेनापति गुरगीन खाँ ने अपने रहने के लिये यहाँ एक मकान बनवाया था जो अब भी कायम है। पहले मुँगेर के कलक्टर यहीं रहते थे। किसी पीर की दरगाह के कारण इसका नाम अब पीर पहाड़ी हो गया है।

शहर से उत्तर-पूरब की ओर गंगा के किनारे एक पुराना मंदिर है जो चण्डी-स्थान कहलाता है। कहते हैं कि यहाँ राजा कर्ण चण्डी देवी को प्रसन्न करने के लिये अपने को जलते हुए घी के कड़ाह में डाल देता था। चण्डी देवी प्रसन्न हो राजा को

जिलाकर उसे सवा मन सोना देती थी। इसी सोने को लेकर राजा कर्ण कर्णचौरे में ब्राह्मणों को दान करते थे। मंदिर के पीछे एक गोलाकार गुम्बज को लोग उलटा हुआ कड़ाह बतलाते हैं।

मुँगेर से तीन मील दक्षिण एक धारा है जिसे डकरा नाला कहते हैं। कहा जाता है कि १७६३ ई० में अँगरेजों की चढ़ाई से भागते समय उनको पीछा करने से रोकने के लिये मीरकासिम ने डकरा नाला के पुल को तुड़वा दिया था। पुल का बचा हिस्सा अब भी मौजूद है।

दिलावरपुर में एक पुराना मुसलमानी घराना है जो शाह घराना के नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं कि अकबर के दरबार के प्रसिद्ध विद्वान फारस-निवासी हजरत मौलाना शाह मुस्तफा शफी इस घराने को कायम करनेवाले थे। अकबर के साथ बंगाल आने पर मुँगेर में एक नामी पीर का नाम सुनकर वे उसी के पास रह गये।

१९३४ के भयंकर भूकम्प ने मुँगेर को बिलकुल तहस-नहस कर डाला है। यहाँ के हजारों आदमी मरे और लगभग सारे मकान पस्त हो गये। अब शहर नये सिरे से नये ढंग पर बन गया है जो देखने में पहले से बहुत सुन्दर मालूम पड़ता है।

उरैन—यह गाँव कजरा स्टेशन से तीन मील दक्षिण रेलवे लाइन के पास है। यहाँ एक छोटी-सी पहाड़ी पर बहुत-सी बौद्ध-कालीन वस्तुएँ पायी जाती हैं। कहते हैं कि बुद्धदेव वर्षाकाल में यहाँ तीन महीना ठहरे थे और यक्ष वकुल को हराया था। चीनी यात्री ह्वेनच्वाङ् (हुेनसन) यहाँ आया था और उसने यहाँ पर बने हुए स्तूपों और शिलालेखों को देखा था। उनके भग्नावशेष
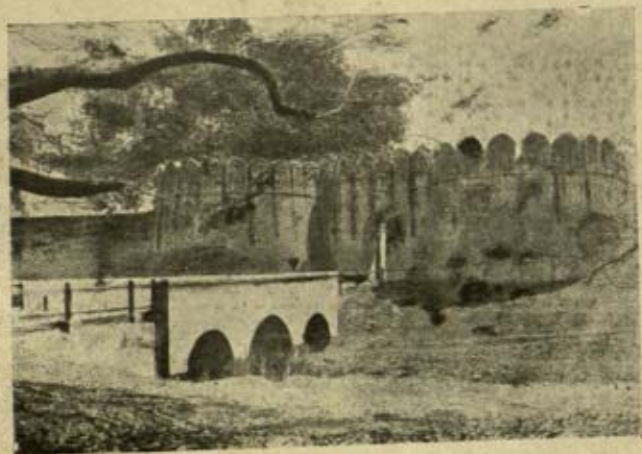
मुंगेर का प्राचीन किला

मुंगेर के कष्टहरणी घाट पर १०वीं सदी का शिलालेख
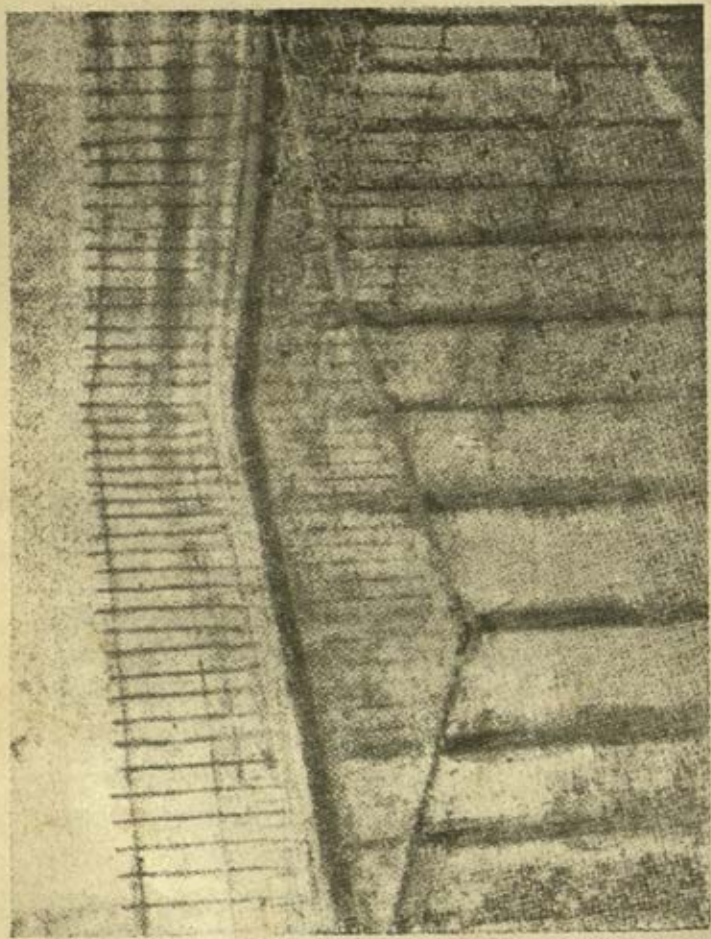
सीता कुंड, मुंगेर

अब भी वहाँ मौजूद हैं। कुछ मूर्त्तियाँ इस समय भी वहाँ पायी जाती हैं। उरेन से आठ मील पूरब जलालाबाद में बान बकुरनाथ का मन्दिर है जहाँ उनकी काले पत्थर की एक बड़ी मूर्त्ति है। उरेन गाँव के पास एक खँडहर को लोग पालवंशी अंतिम राजा इन्द्रद्युम्न का पुराना किला बतलाते हैं।

ऋषिकुंड—सीताकुंड से छः मील दक्षिण यह गर्म जल का झरना है। हिन्दू लोग इसे तीर्थ-स्थान मानते हैं।

क्यूल—यहाँ ई० आई० आर० की कार्ड लाइन और लूप लाइन तथा विहार साउथ ब्रांच लाइन का जंकसन है। यहीं क्यूल नदी पर एक बड़ा पुल है।

नदी के किनारे वृन्दावन नाम का एक गाँव है। यहाँ ३० फीट ऊँचा टील्हा है जो पुराने स्तूप का भग्नावशेष है। खुदाई करने पर यहाँ ६ वीं या १० वीं सदी का बना एक छोटा-सा मकान निकला था। जिसके अन्दर बुद्ध की एक मूर्त्ति तथा स्तूप के आकार की एक और चीज थी जिसमें एक मरे आदमी की यादगारी के लिये सोने के बक्स में एक हड्डी का टुकड़ा और चाँदी के बक्स में हरी काँच की माला थी। एक दूसरे मकान में बुद्ध आदि की मूर्त्तियाँ और एक बर्तन में २,७०० लाह की मुहरें पायी गयीं। पास का एक टील्हा पुराना बौद्ध विहार मालूम पड़ता है।

खगड़िया—गंडक के किनारे यह एक छोटा शहर है जहाँ बी० एन० डब्ल्यू० आर० का जंकशन है। यहाँ थाना, अस्पताल, रजिस्ट्री आफिस, डाकबँगला, हाईस्कूल, राष्ट्रीय-विद्यालय तथा आनरेरी मजिस्ट्रेट की कचहरी है। यह व्यापार का एक केन्द्र है।

खड़गपुर—कहते हैं कि यहाँ खेतौरियों के ५२ सरदारों का शासन था। पीछे दण्डु राय, बासुदेव राय और महेन्द्र राय नाम के तीन राजपूत भाइयों ने इन्हें हराकर अपना राज्य कायम किया। जहाँगीर के समय यहाँ का राजा संग्राम सिंह था। उसके मारे जाने पर उसकी स्त्री चन्द्रज्योति ने मुगल सेना का सामना किया। संधि होने पर अपने पुत्र टोरलमल सहित वह दिल्ली पहुँची। टोरलमल मुसलमान होने पर पिता की गद्दी का हकदार माना गया। उसका नाम रोजफजून रखा गया और उसे एक सरदार की बेटी मिली, पीछे बादशाह ने भी अपनी एक बहन दी। मीरकासिम के वक्त में मुजफ्फरअली यहाँ का राजा हुआ। अँगरेजों के वक्त में जमींदारी की तरह यह राज्य कायम रहा। १८४० ई० में इसके कुछ हिस्से पूर्णिया के विद्यानन्द सिंह और बालानाथ साहु ने तथा १८४५ में बाकी हिस्से को दरभंगा राज ने खरीद लिया।

पहले खड़गपुर एक बड़ा राज्य था। मुँगेर और भागलपुर का दक्षिण भाग तथा संथाल परगना इस राज्य के अन्दर थे। रोजफजून के लड़के बिहरुज शाह का बनाया महल और मस्जिद अब भी टूटे-फूटे रूप में खड़गपुर में मौजूद हैं। मस्जिद पर उस समय की कुछ लिखावट भी कायम है।

इस समय खड़गपुर अपने सुन्दर झील के लिये प्रसिद्ध है। झील से कुछ दूर पर एक जल-प्रपात है जो पंचकुमारी नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ की पहाड़ी भी पंचकुमारी पहाड़ी कही जाती है। कहते हैं कि जब खड़गपुर का राजा पकड़कर दिल्ली भेज दिया गया तो उसकी पाँच लड़कियों ने मुसलमानों के डर से यहीं आत्महत्या कर ली। इस समय खड़गपुर एक बाजार है।

यहाँ थाना, अस्पताल, डाकबँगला, हाईस्कूल और राष्ट्रीय विद्यालय हैं।

खड़गपुर पहाड़ी—यह विन्ध्याचल श्रेणी की पहाड़ी है। यह ३० मील लम्बी और औसतन २४ मील चौड़ी है। इसकी सबसे ऊँची चोटी मारुक है जो १,६२८ फीट ऊँची है। यहाँ कई झरने हैं।

गोगरी—यह गंगा के किनारे है जहाँ थाना, अस्पताल, डाकबँगला, रजिस्ट्री आफिस, डाक और तारघर, हाईस्कूल और राष्ट्रीय विद्यालय हैं। यह फरकिया परगने के अन्दर है। पन्द्रहवीं सदी में दिल्ली के बादशाह ने यहाँ शासन करने के लिये विश्वनाथ राय नाम के एक राजपूत को भेजा था। इस वंश में नारायण दत्त, हरदत्त सिंह, बुनियाद सिंह वगैरह प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। इनके वंशज इस समय भी जमालपुर में रहते हैं।

इस थाने के महेशखुँट, श्यामनगर और रामचन्द्रपुर में कई प्राचीन मूर्त्तियाँ मिली हैं, जिनमें एक पर ब्राह्मी लिपि में कुछ लिखा भी है।

चंडी स्थान—दे० मुँगेर।

चौथम—यह तिलयुगा और बागमती नदी के संगम पर है। हाल में यहाँ थाना और अस्पताल कायम हुआ है। यहाँ सोलहवीं सदी से एक राजपूत घराने के जमींदार रहते हैं जिन्हें अकबर से जागीर मिली थी।

जमालपुर—मुँगेर के पास ही यह एक शहर है जहाँ की जन-संख्या ३०,३४६ है। यहाँ थाना, ई० आई० रेलवे का स्टेशन और एक बहुत बड़ा कारखाना है जिसमें हजारों आदमी रोज काम करते हैं। यहाँ एक औद्योगिक स्कूल और दो हाई-स्कूल हैं। शहर में म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है।

जयनगर—लक्खीसराय स्टेशन के पास यह एक गाँव है। कहते हैं, यहाँ पालवंशी राजा इन्द्रद्युम्न का किला था।

डकराना—दे० मुँगेर।

तारापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

दिलावरपुर—दे० मुँगेर।

देवघरा—खड्गपुर से १० मील दक्षिण यह एक छोटी पहाड़ी है जहाँ शिवजी का एक मंदिर है। यहाँ शिवरात्रि में मेला लगता है।

पीरपहाड़ी—दे० मुँगेर।

फरकिया परगना—दे० गोगरी।

बख्तियारपुर—बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की मनसी-भपटियाही लाइन पर इस नाम के स्टेशन के पास यह एक गाँव है जहाँ थाना और डाकबँगला भी है। यहाँ एक पुराना मुसलमान घराना है जो चौधरी घराने के नाम से मशहूर है। इस समय भीइस घराने के पास एक बड़ी जमींदारी है।

बरबीघा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बृन्दावन—दे० क्यूल।

भदुरिया भूर—ऋषिकुंड से दो मील दक्षिण-पूरब यह एक गरम जल का झरना है।

भीमबाँध—खड्गपुर से १२ मील दक्षिण-पच्छिम यह एक गाँव है जहाँ गरम जल के कुछ झरने हैं। ये झरने महादेव और दमदम नाम की पहाड़ियों से निकलते हैं। इनका पानी मणि नदी में जाता है।

मलनी पहाड़—यह भीमबाँध से सात मील उत्तर-पूरब है जहाँ बहुत-से झरने हैं। ये झरने जन्मकुंड के नाम से प्रसिद्ध हैं।

मारक—दे० खड़गपुर पहाड़ी।

मौला नगर—यह सूर्यगढ़ा से आधे मील पर है। अठारहवीं सदी में शाह नजीम उद्दीन अली नाम का एक पीर यहाँ आया था। वह मौला शाह नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसे अलीवर्दी खाँ से धार्मिक कामों में खर्च करने के लिये जागीर मिली थी। उसके वंशज के हाथ में अब भी करीब चालीस हजार की जागीर है।

रजौना—लक्खीसराय से दो मील उत्तर-पच्छिम यह गाँव क्यूल और हलहर नदियों के संगम पर है। यहाँ अशोक ने बौद्ध-विहार और स्तूप बनवाये थे जो खँडहर के रूप में अब भी मालूम पड़ते हैं। यहाँ पुराने मंदिरों के चिह्न हैं। यहाँ बहुत-सी मूर्त्तियाँ भी मिली हैं। चीनी यात्री य्वनच्वाङ् (ह्वेनसन) ने इस स्थान को देखा था।

रामेश्वर कुंड—यह खड़्गपुर के पंचकुमारी जलप्रपात से थोड़ी ही दूर पर है। इसे हिन्दू लोग तीर्थ-स्थान मानते थे।

लक्खीसराय—क्यूल नदी के किनारे यह एक गाँव है जहाँ मकदुमशाह की दरगाह है। यहाँ के एक पत्थर पर बंगाल के सुलतान रुकनुद्दीन का लिखवाया १२९७ ई० का एक लेख है। यहाँ एक छोटा-सा बाजार, थाना, हाई स्कूल और चित्तरंजन-आश्रम नाम की एक राष्ट्रीय संस्था है।

शेखपुरा—जिले के दक्षिण-पच्छिम यह एक छोटा शहर है जहाँ साउथ बिहार रेलवे का स्टेशन, थाना, अस्पताल और डाकबँगला है। यहाँ बुद्धदेव एक रात के लिये ठहरे थे; इसलिये यहाँ एक स्तूप बनवाया गया था जिसे चीनी यात्री य्वन्च्वाङ् ने भी देखा था। यहाँ पुराने समय का एक अठोखर ताल है। पास के पचना पहाड़ी पर एक ग्वालिन के

उपकार के बदले शेरशाह का बनवाया रास्ता है जो ग्वालिन-खंड कहलाता है।

शृंगिरिख—खड़गपुर पहाड़ी की यह एक चोटी है जो ऋष्यशृंग का स्थान समझा जाता है। यहाँ गरम जल का झरना और शिवालय है जहाँ शिवरात्रि में मेला लगता है। पास के काले पत्थर पर तीन स्त्रियों की बौद्धकालीन मूर्त्तियाँ खुदी हैं, जिन्हें हिन्दू लोग पूजते हैं।

सीताकुंड—मुँगेर से चार मील की दूरी पर यह एक गरमजल का प्रसिद्ध झरना है। कहते हैं, लंका से लौटने पर श्री रामचन्द्र और सीताजी यहाँ आयी थीं। यहाँ चार ठंढे जल के कुंड हैं जो राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न-कुंड कहलाते हैं। यात्री लोग यहाँ बराबर आते हैं। माघी पूर्णिमा में मेला लगता है। सीताकुंड के पास ही एक दूसरा गरम झरना है। फिर, पास के भैंसा पहाड़ी पर भी एक झरना है।

सूर्यगढ़ा—गंगा के दक्षिणी किनारे पर यह एक गाँव है। कहते हैं, यहाँ राजा सूर्यमल का गढ़ था। अब भी गढ़ के घेरे का एक छोटा हिस्सा रह गया है। कहते हैं, कुछ वर्ष पहले गंगा के कटाव से जमीन के नीचे एक मकान निकला था। नाव घाट पर बहुत तरह की मूर्त्तियाँ मिलती हैं। यहाँ ४ मील पच्छिम फतहपुर गाँव में १५५७ ई० में एक बड़ी लड़ाई हुई थी।

हसनपुर—लक्खीसराय के पास यह एक गाँव है जहाँ एक पहाड़ी है। जयनगर भी इसके पास ही है। यहाँ पुराने खँड़हर पाये जाते हैं।

हुसैनाबाद—शेखपुरा से तीन मील दक्षिण यह एक गाँव है जहाँ मुसलमानों का एक घराना है जो अपना सम्बन्ध पैगम्बर महम्मद साहब की खानदान से बतलाता है। इस खानदान के

नवाब शाव खाँ और नवाब फिदा खाँ दिल्ली के बादशाह के वजीर थे। औरंगजेब ने इस वंश के लोगों को जागीर दी थी। शाह-आलम ने इस वंश के अली इब्राहिम खाँ को दसहजारी का पद दिया था। यह मीरकासिम के भी दरबार में था। जब बक्सर की लड़ाई में हारकर मीरकासिम भाग गया तो यह अँगरेजों के साथ हो गया। वारन हेस्टिंग्स ने इसे बनारस का काजी बनाया। इसका भतीजा महम्मद यहिया पटने से हुसैनाबाद आकर बसा था।

बेगूसराय सबडिविजन

बेगूसराय—यह २५°२६' उत्तरीय अक्षांश और ८६°१' पूर्वीय देशान्तर पर सबडिविजन का प्रधान शहर है, जहाँ बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे का स्टेशन, सबडिविजनल आफिस, हाई स्कूल, अस्पताल, डाकबँगला, लोकलबोर्ड आफिस, रजिस्ट्री आफिस और छोटा बाजार है। बेगूसराय शहर की जनसंख्या ७,७३१ है।

काबरताल—बेगूसराय सबडिविजन के उत्तर भाग में काबरताल नाम की एक झील है जो आठ मील लम्बी और २ मील चौड़ी है। इसका कुछ भाग गर्मी में सूख जाया करता है। इसके बीच एक टापू है, जहाँ पहले बन्दर बहुत रहते थे। यहाँ जयमंगला देवी का मंदिर है। दुर्गापूजा के अवसर पर यहाँ मेला लगता है। यहाँ पुराने किले के कुछ चिह्न मालूम पड़ते हैं और लोग इस स्थान को जयमंगला गढ़ कहते हैं।

जयमंगला गढ़—दे० काबरताल।

तेघरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बरियारपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बलिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बहादुरपुर—बेगूसराय सबडिविज़न में यह एक गाँव है, जहाँ राजपूतों का एक पुराना घराना है। इस घरानेवालों के हाथ में इस समय डेढ़ लाख की जमींदारी है।

सिमरिया घाट—गंगा के दक्षिणी किनारे पर यह एक प्रसिद्ध स्थान है जहाँ दूर-दूर से लोग गंगा में स्नान करने आते हैं। बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे और ई० आई० रेलवे को मिलाने के लिये यहाँ गंगा के आर-पार जहाज चलता है।

जमुई सबडिविजन

जमुई—इस नाम के सबडिविजन का यह प्रधान स्थान है, जो ई० आई० रेलवे के जमुई स्टेशन से चार मील दक्षिण-पच्छिम है। यहाँ सबडिविजनल आफिस, स्कूल, अस्पताल, डाकबँगला, लोकल बोर्ड आफिस, रजिस्ट्री आफिस और छोटा-सा बाजार है।

इन्दै—जमुई से चार मील दक्षिण इस गाँव में एक बहुत बड़े किले का भग्नावशेष है जो पालवंश के अंतिम राजा इन्द्रद्युम्न का बनाया हुआ बताया जाता है। यह १,६५० फीट के वर्गाकार में है जिसकी खाई १५ फीट चौड़ी है। यहाँ एक पुराना स्तूप है जिसका व्यास १२५ फीट है।

खैरा—यह जमुई से पाँच मील दक्षिण-पूरब है। यहाँ गिद्धौर के पुराने राजा पूरनमल के बड़े लड़के हरि सिंह ने अपना अलग राज्य कायम किया था। इन लोगों का पुराना स्थान खैरा पहाड़ी के पास था जहाँ जंगलों के बीच पत्थर के किले और महलों के चिह्न पाये जाते हैं। १९१६ में यह राज्य रायबहादुर बैजनाथ गोयनका के हाथ बिक गया।

गिद्धौर—यह एक गाँव है जहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन भी है। यहाँ एक बहुत पुराने घराने के राजपूत जमींदार रहते हैं। इनके पूर्वज पहले बुंदेलखंड के महोबा राज्य के स्वामी थे। इनको दिल्ली के अंतिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज ने हराया था। मुसलमानों से खदेड़े जाने पर ये लोग मिर्जापुर आये। यहीं से वीर विक्रमशाह ने आकर मुँगेर जिले में अपना राज्य कायम किया। शुरू में इन लोगों ने खैरा पहाड़ी के पास अपना किला बनवाया जहाँ अब भी उसके चिह्न मौजूद हैं। इस वंश के चौदहवें राजा दुलन सिंह की राजा की उपाधि शाहजहाँ ने फरमान द्वारा स्वीकार की थी। यह फरमान तथा दाराशिकोह और राजकुमार शुजा के लिखे पत्र गिद्धौर राजा के पास अब भी मौजूद हैं। इस समय इस राज्य की आमदनी करीब ढाई लाख सालाना है। यहाँ एक साधारण बाजार, अस्पताल और स्कूल है।

चकाई—यहाँ थाना, डाकबँगला और अस्पताल है। यहाँ अँगरेजों का बनाया एक किला है जो सरकारी किला या फतहगढ़ कहलाता है।

झाझा—यहाँ ई० आई० रेलवे का स्टेशन, थाना और डाकबँगला है। रेलवे के अँगरेज कर्मचारियों की यहाँ बहुत-सी कोठियाँ हैं। इसका पुराना नाम नवडीह है।

नोनगढ़—लक्खीसराय से ११ मील दक्षिण-पूरब क्यूल नदी के किनारे यह एक गाँव है जहाँ इसी नाम का एक ४० फीट ऊँचा टील्हा है। खुदाई होने पर ईसा के जन्मकाल के लगभग की मूर्त्ति, मंदिर और स्तूप आदि का पता लगा है।

नौलखगढ़—खैरा पहाड़ी की तराई में एक वर्गाकार किला है जिसकी दीवारें पत्थर की बनी हैं। यह किला गिद्धौर के किसी पुराने राजा, अकबर या शेरशाह का बनवाया हुआ समझा

जाता है। इसके बनाने में नौ लाख रुपया खर्च होने से इसका ऐसा नाम पड़ना बताया जाता है।

बामदह—चकाई से चार मील उत्तर इस गाँव में १८८४ ई० से ईसाई मिशन का अड्डा है। मिशनवालों ने यहाँ एक अस्पताल कायम किया है। मिशन से सम्बन्ध रखनेवाले आस-पास में कई दर्जन स्कूल हैं।

लछुआर—सिकन्दरा से चार मील दक्षिण इस गाँव में एक बहुत बड़ा जैन मंदिर, धर्मशाला तथा कई हिन्दू मंदिर हैं। इससे तीन मील पर मठ बुद्ध-रूप और मठ पारसनाथ नाम के दो और जैन मंदिर हैं। एक की महावीर मूर्त्ति १५०५ ई० की और दूसरी की उससे भी पुरानी है।

सिकन्दरा—यहाँ थाना और डाकबँगला है। पहले सब-डिविजनल आफिस यहीं था। यहाँ शाह मुजफ्फर नामक पीर की दरगाह है। वह पहले तुर्किस्तान में बल्ख का बादशाह था।

सिमरिया—जमुई से ७ मील पच्छिम इस गाँव में छः मंदिर हैं जो तीन ओर एक बड़े तालाब के पानी से घिरे हैं। प्रधान मंदिर में गिद्धौर के पुराने राजा पूरनमल का स्थापित शिवलिंग है। शेष मंदिर में बौद्ध और ब्राह्मण-कालीन मूर्त्तियाँ हैं। सभी हिन्दू-मूर्त्तियाँ समझी जाकर पूजी जाती हैं।

सिमलतला—यह स्वास्थ्यप्रद स्थान होने से बड़ा प्रसिद्ध है। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही सुन्दर है। यहाँ ई० आई० आर० का स्टेशन और एक अस्पताल है। बंगालियों की यहाँ बहुत-सी कोठियाँ हैं।

पूर्णिया जिला

पूर्णिया (सदर) सबडिविजन

पूर्णिया—जिले का मुख्य शहर पूर्णिया सौरा नदी के किनारे २६°४६' उत्तरीय अक्षांश और ८७°२८' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ जिले का सदर आफिस है। मुसलमानी काल में इस इलाके के फौजदार ने यहाँ अपना सदर दफ्तर बनाया था। उस समय सौरा नदी एक बड़ी नदी थी और वह कोशी की एक मुख्य धारा थी। इसी कारण यह एक केन्द्र स्थान बनाया गया। पुराने घरों और मस्जिदों के भग्नावशेष के सिवा मुसलमानी सल्तनत का अब कोई चिह्न नहीं रह गया है। हाँ, महल्लों के मुसलमानी नाम अब भी उनकी याद दिलाते हैं, जैसे—मीयाँ बाजार, खलीफा चौक, अब्दुला नगर, बेगम ड्योढ़ी, लाल बाग, खुश्की-बाग वगैरह। सन् १७७१ ई० में अँगरेजों ने इस शहर को जिले का सदर दफ्तर बनाया। इस समय पूर्णिया शहर का म्युनिसिपल रकबा १२॥ वर्गमील है। १९३१ ई० की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या १५,४७४ है, जिसमें ११,३१२ हिन्दू, ४,०२० मुसलमान, ९९ ईसाई, ३८ जैन, ४ सिक्ख हैं। यह शहर लम्बा और छिटफुट बसा हुआ है। इसके पाँच हिस्से हैं—मुख्य शहर, सरकारी दफ्तर, खजांची हाट, भट्टा और मधुबनी। पुराना शहर सौरा नदी के बायें किनारे पर बसा है। सौरा नदी पर का पुल इसे सरकारी कचहरियों के साथ मिलाता है। यहाँ से दो मील दक्षिण खजांचीहाट है जहाँ मुसलमान लोग अधिक हैं। इसीसे

सटा हुआ भट्टा महल्ला है जहाँ बंगाली वकील, मुहर्रिर और सम्पन्न बिहारी रहते हैं। इसके पच्छिम मधुबनी है जहाँ बाजार और म्युनिसिपल मार्केट है। पूर्णिया से हिमालय का सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है।

अमौर– यहाँ थाने का सदर आफिस है।

आजमनगर—यहाँ थाने का सदर आफिसहै।

कटिहार—यह एक बहुत बड़ा रेलवे जंक्शन है। बी० एन० डब्ल्यू० आर० और ई० बी० आर० की लाइनें यहाँ मिलती हैं। यहाँ से पाँच भिन्न-भिन्न दिशाओं की ओर रेलवे लाइनें गयी हैं। बिहार और संयुक्तप्रान्त के कुली आसाम और बंगाल की ओर काम करने के लिये इसी होकर जाते-आते हैं। इसलिये, यहाँ अक्सर इनकी भीड़ लगी रहती है। कटिहार अब पूर्णिया के मुकाबले का शहर हो गया है, बल्कि जनसंख्या तो पूर्णिया से भी बढ़ी हुई है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या १५,८६४ है। यहाँ भेड़ बहुतायत से पाले जाते और उनके ऊन से मामूली कम्बल तैयार किये जाते हैं। यहाँ से चावल और तेलहन बाहर भेजा जाता है। यहाँ मुन्सिफ की कचहरी, थाना, दो अस्पताल और एक हाई स्कूल है।

इस स्थान का पुराना नाम सैफगंज था। इसे पूर्णिया के सैफ खाँ ने करीब दो सौ वर्ष पहले बसाया था। जब यहाँ रेलवे स्टेशन बना तब साहबगंज से मिलता-जुलता होने के कारण यहाँ के स्टेशन का नाम सैफगंज न रखकर पास के एक दूसरे गाँव कटिहार के नाम पर रखा गया। यहाँ का परगना भी कटिहार नाम से ही प्रसिद्ध है।

कदवा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

करनदिग्घी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

कसबा—यह स्थान पूर्णिया से ८ मील उत्तर ईस्ट बंगाल रेलवे पर है जहां थाने का सदर आफिस है। यह चावल और जूट के व्यापार का केन्द्र है। रैली ब्रदर्स ने यहां अपनी एजेन्सी कायम की है और एक जूट मिल भी बनाया है। यहां बहुत-से मारवाड़ियों के भी गोदाम है। यहां जूट, अनाज और चमड़े का कारबार होता है।

काढ़ागोला—यह गाँव जिले के बिलकुल दक्षिण काढ़ागोला रोड नामक रेलवे स्टेशन से ६ मील की दूरी पर गंगा के किनारे बसा है। यह पहले व्यापार का मुख्य केन्द्र था। गंगा-दार्जिलिंग रोड यहीं समाप्त होता है। यहां से पहले रेलवे स्टीमर साहबगंज को जाया करता था। कार कम्पनी का जहाज अब भी यहां लगता है। यहां थाना, डाकघर और डाकबंगले हैं। यहां माघी पूर्णिमा में एक बहुत बड़ा मेला लगता है।

कोरहा—यह थाने का सदर आफिस है।

खजांची हाट—दे० पूर्णिया।

छोटा पहाड़—जिले के दक्षिण में मनिहारी के पास यह एक पहाड़ी है, जिसकी ऊँचाई २५० फीट है। इसका कंकड़ सड़क के काम में लाया जाता है। यहां सम्भवत: पहले एक मंदिर था। इस समय एक कब्र है।

जलालगढ़—पूर्णिया से १३ मील उत्तर जलालगढ़ रेलवे स्टेशन के पास इस नाम का एक टूटा-फूटा किला है। यह एक चतुर्भुजाकार किला है। इसकी दीवारें ऊँची थीं। यह मोरंग राज्य की सीमा के पास बनाया गया था जिससे उत्तर की पहाड़ी जातियों की चढ़ाइयाँ रोकी जा सकें। खगड़ा राजपरिवार के इतिहास से पता चलता है कि इसे खगड़ा का पहला राजा सैयद मुहम्मद जलालुद्दीन ने बनवाया था जिसे बादशाह जहाँगीर ने राजा की

पदवी दी थी। दूसरे लोगों का कहना है कि इसे पूर्णिया के नवाब सैफ खाँ ने १७२२ ई० में बनवाया था। लेकिन मालूम पड़ता है कि यह १७२२ ई० के पहले भी वर्तमान था। 'रियाजुस सलातीन' में लिखा है कि वीरनगर के राजा के पास १५००० घुड़सवार और पैदल सैनिक थे। उस तरफ से चकवार आदि जाति के लोग बहुत उपद्रव मचाया करते थे, इसलिये मोरंग राज्य की सीमा पर जलालगढ़ का किला बनवाया गया और वहाँ एक गढ़-रक्षक बहाल हुआ। उसमें आगे लिखा है कि—जब सैफ खाँ पूर्णिया का फौजदार बनाया गया तब उसे जलालगढ़ की सरदारी और उसके साथ जागीर भी मिली। उसके बाद गढ़ खगड़ा के सातवें राजा सैयद मुहम्मद जलील के हाथ में आया। उसके कर देने से इन्कार करने पर पूर्णिया के नवाब सौलातजंग (सैयद अहमद खाँ) ने उस पर चढ़ाई कर गढ़ को छीन लिया और उसे कैद कर लिया। मुसलमानी सल्तनत के बाद किला टूट-फूट गया। १९वीं सदी के आरम्भ में पूर्णिया के कलक्टर ने पूर्णिया की आबहवा खराब जानकर जिले का हेड आफिस जलालगढ़ ही ले जाने का विचार किया था, पर वह विचार कार्य में नहीं लाया जा सका। कहते हैं कि सिपाही विद्रोह के समय में एक मुसल-मान ने यहाँ अपनी सल्तनत जमाना चाहा, लेकिन पीछे वह लोगों से रुपया-पैसा लेकर चुपचाप भाग गया।

धमदाहा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

धरहरा—यह गाँव जिले के बिलकुल पच्छिम भाग में रानी-गंज से १२ मील दक्षिण है जहाँ थाने का सदर आफिस है। यहाँ सतलीगढ़ नामक किले का भग्नावशेष है। किले के उत्तर-पच्छिम कोने पर एक स्तम्भ है जिसे लोग माणिक थम्भ कहते हैं। यह स्तम्भ १९ फीट ११ इञ्च लम्बा है, जिसमें ७½ फीट
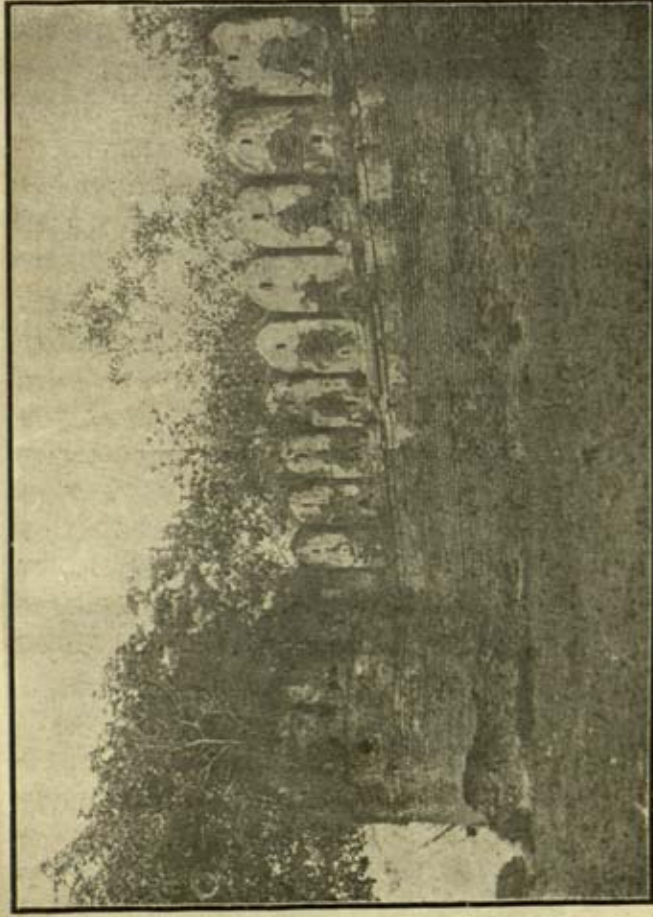
जलाल गढ़ का किला (पूर्णिया)

माणिक स्तम्भ, धरहरा (पूर्णिया)

कन्हैयाजी का स्थान, बन्दरझूला (पूर्णिया)

जमीन के ऊपर है और बाकी जमीन के नीचे। स्तम्भ के ऊपर १२ इञ्च का एक छेद है। कहते हैं कि इसके ऊपर एक सिंह की मूर्त्ति थी। यह स्तम्भ गाजीपुर के शिलालेखवाले स्तम्भ से मिलता-जुलता है जो अब बनारस कालेज के मैदान में है। माणिक स्तम्भ ६५° के कोण पर झुका हुआ है। कहते हैं कि पूर्णिया के कलक्टर ने जमीन खोदकर देखना चाहा था कि यह कितना नीचे गड़ा है। यह दिखाने के लिये कि उसने जड़ का पता लगा लिया है इस स्तम्भ को उसने कुछ झुका दिया। पीछे कर्नल वैडेल ने इसपर शिलालेख ढूँढ़ने के लिये जमीन में इसके गड़े हिस्से को खोदकर देखा पर कोई शिलालेख नहीं मिला। उसने स्तम्भ के नीचे एक सोने का पुराना इन्डो-सीथियन सिक्का पाया था। यहाँ के लोगों का कहना है कि पुराण प्रसिद्ध हिरण्यकश्यप यहीं हुआ था। इसी स्तम्भ में उसने भगवान के भक्त अपने पुत्र प्रह्लाद को बाँध रखा था और इसी को फाड़कर नरसिंह भगवान प्रकट हुए थे और हिरण्यकश्यप का नाश किया था। लोग सतलीगढ़ किले को हिरण्यकश्यपु का ही किला बतलाते हैं। इसके पास में जो एक नदी बहती है उसको लोग हिरण्य नदी कहते हैं।

नवाबगंज—जिले के दक्षिण में साहबगंज के सामने गंगा से १२ मील उत्तर यह एक गाँव है। कहते हैं कि एक बार मुसलमानी वक्त में पूर्णिया से खजाना राजमहल भेजा जा रहा था तो इसी स्थान पर, जहाँ पहले जंगल था, लुटेरों ने उसे लूट लिया। इसी पर नवाब ने यहाँ एक बस्ती बसायी जो नवाबगंज नाम से प्रसिद्ध हुई। यहाँ एक पुराने किले का भग्नावशेष है जिसका क्षेत्रफल ८० एकड़ है। बाघमारा गाँव भी इसी मौजे में है। यहाँ से बलदियाबारी डेढ़ मील है जिसका जिक्र अलग दिया गया है।

बनैली—ह्वेली परगने में यह एक गाँव है जहाँ प्रसिद्ध बनैली राजघराने के लोग रहते थे। राजा लीलानन्द सिंह यहाँ से हटकर कई मील की दूरी पर रामनगर में जा बसे। फिर, चम्पानगर में ड्योढ़ी बनी। इन लोगों की जमींदारी पूर्णिया, मुँगेर, भागलपुर, संथाल परगना और मालदह जिलों में है। इस घराने के संस्थापक हजारी चौधरी ने १७८०ई० में इस जिले में परगना तिरखरदा खरीदा था। उनके लड़के राजा दुलार सिंह बहादुर ने १८०० ई० के करीब भागलपुर, मुँगेर और मालदह में जमींदारी हासिल की। इनके दो लड़के हुए—विद्यानन्द सिंह और कुमार रुद्रानन्द सिंह। सम्पत्ति के लिये इन दोनों भाइयों में लड़ाई चली। आखिर जमींदारी आधी-आधी बाँट ली गयी। कुमार रुद्रानन्द ने श्रीनगर राजवंश की स्थापना की। बनैली के राजा विद्यानन्द ने मुँगेर जिले में खड़गपुर का महाल खरीदा। १८५० ई० में उनके मरने पर लीलानन्द सिंह राजा हुए। इन्होंने १८६० ई० में चाँदपुर हुसैन और तालुक खजुरिया खरीदा। वे १८८३ ई० में मर गये। उनके तीन लड़के थे पद्मानन्द सिंह, कालानन्द सिंह और कीर्त्यानन्द सिंह। जिस समय पद्मानन्द सिंह राजा हुए उस समय शेष दोनों भाई नाबालिग थे। पद्मानन्द सिंह के बाद क्रम से ये लोग भी राजगद्दी पर बैठे। राजा कीर्त्यानन्द सिंह की मृत्यु अभी हाल ही में हुई है। इस समय उनके लड़के गद्दी के अधिकारी हैं। इस राज की सालाना आमदनी कई लाख रुपये की है।

बरसोई—यह गाँव महानन्दा नदी पर है। यहाँ थाना और ई० बी० रेलवे का जंक्शन है जहाँ से किशुनगंज की ओर रेलवे लाइन गयी है।

बथरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बलदियारी—जिले के दक्षिण नवाबगंज से १३ मील पर यह एक गाँव है जहाँ सौकतजंग और सिराजुद्दौला से लड़ाई हुई थी।

बैसी—यहाँ थाने का सदर अफिस है।

मनिहारी—गंगा के किनारे इस स्थान में थाने का सदर आफिस है। कटिहार से यहाँ ई० बी० आर० की एक लाइन आयी है। यहाँ से एक रेलवे स्टीमर गंगा के दूसरे किनारे सकरी-गली घाट को जाती है। यहाँ साहबगंज से ई० आई० आर० की एक लाइन आयी है। कार्तिक पूर्णिमा और शिवरात्रि आदि के समय यहाँ गंगा के किनारे मेला लगा करता है।

रुपौली—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सतबीगढ़—दे० धरहरा।

सैफगंज—दे० कटिहार।

अररिया सबडिविजन

अररिया—पूर्णिया से ३० मील उत्तर पनार नदी के बायें किनारे पर यह एक गाँव है। पहले इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर यहीं था। लेकिन, बहुत वर्ष हुए कि सदर दफ्तर वहाँ से हटकर पनार नदी के दाहिने किनारे पर अररिया से ४ मील पच्छिम बसन्तपुर को चला गया है; लेकिन इसका नाम अब तक अररिया ही बना है। अररिया गाँव को लोग करेया भी कहते हैं।

फारबिसगंज—यह स्थान यहाँ के एक अँगरेज जमींदार के नाम पर बसा है। यहाँ थाने का सदर आफिस है। यह अररिया से १८ मील उत्तर-पच्छिम है। यहाँ से सात मील पर ही नेपाल राज्य की सीमा है। यहाँ ई० बी० आर० की लाइन गयी है। यहाँ

थाना, अस्पताल, म्युनिसिपैलिटी, हाई स्कूल और डाकबँगला हैं। यह व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। नेपाल के साथ अररिया सबडिविजन के अधिकांश भाग का व्यापार यहाँ से ही होता है। यहाँ मारवाड़ियों के बड़े-बड़े कारबार हैं। जूट यहाँ का मुख्य व्यवसाय है। यहाँ दो जूट मिलें भी हैं। फारबिसगंज की जनसंख्या ५,९३९ है।

पलासी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बसन्तपुर—अररिया रेलवे स्टेशन से ३३ मील दक्षिण-पूरब पनार नदी के दाहिने किनारे यह एक गाँव है। अररिया सबडिविजन का सदर दफ्तर यहीं है। सरकारी आफिसों के अलावे यहाँ अस्पताल, डाकबँगला और हाईस्कूल भी हैं।

रानीगंज—बसन्तपुर से १६ मील पच्छिम यह एक गाँव है जहाँ थाने का सदर आफिस है।

सिकटी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

किशुनगंज सबडिविजन

किशुनगंज—महानन्दा नदी से पूरब कुछ दूर पर गङ्गा-दार्जिलिंग रोड पर यह इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। बरसोय जंक्शन से ई० बी० रेलवे की एक लाइन किशुनगंज होकर जलपाइगुरी जिले को गयी है। किशुनगंज शहर की जनसंख्या ८,९४६ है। यहाँ म्युनिसिपैलिटी भी है। पहले सबडिविजन का सदर दफ्तर शहर से ४ मील उत्तर-पच्छिम झरियादांगी नामक स्थान में था। पीछे रेलवे स्टेशन के पास देवमरिया नामक महल्ले में चला आया। किशुनगंज में खगड़ा स्टेट की कचहरी भी है।

असुरगढ़—किशुनगंज से १२ मील दक्षिण महानंदा नदी के पूर्वी किनारे के पास यह एक टूटा-फूटा किला है। किले का घेरा १,२०० गज है। यह १०-१२ फीट ऊँचे टील्हे पर बना हुआ मालूम पड़ता है। यह मिट्टी की दीवालों से घिरा है और भीतर बहुत-से पुराने मकानों के भग्नावशेष हैं। जमीन के नीचे मकानों की निचली कोठरियाँ मिली हैं। किला कैसे बना इसके सम्बन्ध में लोग एक कहानी कहते हैं। कहते हैं कि बेगु, बरिजान, असुर, नन्हा और कन्हा नाम के पाँच भाई थे। इन सबों ने अपने-अपने नाम पर एक-एक किला बनवाया। लेकिन अब केवल बेगुगढ़, बरिजानगढ़ और असुरगढ़ का ही पता चलता है। कहा जाता है कि ये पाँचों भाई विक्रमादित्य के समय में हुए थे। यहाँ के लोग बताते हैं कि यह स्थान कई सौ वर्ष पहले जंगलों से भरा था, कोई हिन्दू इसमें रहने का साहस नहीं करता था क्योंकि उसे डर था कि असुरदेव कहीं नाराज न हो जायँ। अन्त में एक मुसलमान फकीर आया और उसने एक गाय को मारकर इस स्थान को कब्जे में किया। उसके वंशज जंगल को साफ कर वहाँ खेती करने लगे। हिन्दू लोग यहाँ असुरदेव को पूजने के लिये आया करते हैं। मुसलमान लोग भी गढ़ में प्रवेश करनेवाले फकीर को पूजते हैं। खगड़ा घराने के इतिहास से पता चलता है कि अपने पूर्वज मुहम्मद जलील के हाथ से सौलातजंग द्वारा जलालगढ़ के छिन जाने पर खगड़ा के नवाँ राजा फखरुद्दीन हुसैन ने यहाँ एक किला बनवाया। सम्भवतः यह किला पुराने हिन्दू-किला के स्थान पर बना था।

इस्लामपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

कलियागंज—किशुनगंज सबडिविजन के उत्तर-पूरब कोने पर महानन्दा नदी के किनारे यह एक गाँव है। पहले यह जूट के

व्यापार का केंद्र था और यहाँ ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एक एजेंट बोरा खरीदने के लिये रहा करता था। एक जूट मिल अब भी यहाँ कायम है।

खगड़ा—किशुनगंज म्युनिसिपैलिटी के अन्दर यह एक गाँव है जहाँ एक पुराने मुसलमान जमींदार घराने के लोग रहते हैं। इन लोगों का मौजुदा घर १८ वीं सदी में सैयद फकुउद्दीन हुसैन द्वारा बनवाया गया था। इसने दो स्थान भी कायम किये थे एक तो मुहम्मद पैगम्बर साहब का और दूसरा उनके राजदण्ड का। पहला स्थान खगड़ा से उत्तर और दूसरा उससे दक्षिण है। दूसरे स्थान के पास इस राज-परिवार का कब्रस्तान बना है। यहाँ से दो मील पूरब उसने एक बाजार कायम किया जिसका नाम कुतुबगंज पड़ा। हुसैनबाग नाम से उसने एक कर्बला भी बनवाया। खगड़ा की अधिक प्रसिद्धि यहाँ के मेले के कारण है, जो खगड़ा स्टेट के प्रबन्ध में होता है। यह मेला १८८३ ई० में नवाब अता हुसैन खाँ ने लगाना शुरू किया था। इस मेले में हाथी, घोड़े, ऊँट वगैरह भी बिकते हैं और पचास हजार से लेकर एक लाख तक आदमी जमा होते हैं।

खगड़ा स्टेट के इतिहास से मालूम होता है कि इस स्टेट का संस्थापक सैयद खाँ दस्तूर था, जिसने शेरशाह के विरुद्ध लड़ाई में बादशाह हुमायूँ की सहायता की थी। इसी सहायता के पुरस्कार स्वरूप हुमायूँ ने इसे १५४५ ई० में सूर्यपुर की जमींदारी देने की सनद प्रदान की थी और कानूनगो की उपाधि भी दी थी। यह भूभाग पहले एक हिन्दू राजा शुकदेव के हाथ में था। यहाँ भोटिया लोग भरे थे। सैयद खाँ दस्तूर बड़ी कठि-नाई के बाद सूर्यपुर का एक हिस्सा दखल कर सका था। इसने पीछे फारस के सैयद राय खाँ और उसके भाइयों को बुलाकर

इस परगने में बसाया। इन लोगों पर भोटिया लोगों ने बार-बार हमला किया, लेकिन अन्त में इन लोगों ने भोटिया लोगों को भगा दिया और उनको हल्दीबारी (अब जलपाईगुड़ी जिले में) तक पीछा किया। वहाँ राय खाँ ने एक किला भी बनवाया। राय खाँ ने सैयद खाँ दस्तूर की इकलौती बेटी से विवाह कर उसकी सारी सम्पत्ति प्राप्त की, इसका लड़का सैयद मोहम्मद जलालुद्दीन खाँ ने भी अपना अधिकांश जीवन भोटिया तथा दूसरी पहाड़ी जातियों से लड़ने में बिताया। कहते हैं उन्हीं से रक्षा पाने के लिये इसने जलालगढ़ का किला बनवाया। बादशाह जहाँगीर ने इसे राजा की पदवी दी थी। इसके बाद इसका लड़का सैयद रजा राज्य का उत्तराधिकारी हुआ। इसे भी भोटियों से लड़ना पड़ा। १६२२ ई० में इसे कहलगाँव परगने का तप्पा बरबन मिला। इसने वहाँ के लुटेरों को दबाया जिससे इसे राजा की उपाधि मिली। इसके बाद कई राजे हुऐ जिनके समय में कोई उल्लेख योग्य घटना नहीं हुई। पीछे इस स्टेट के मालिक सैयद मुहम्मद जलील ने पूर्णिया के नवाब सौतालजंग को कर देने से इन्कार किया तो सौतालजंग ने लड़कर उसका स्टेट और किला जलालगढ़ ले लिया। स्टेट पीछे उसके लड़के को लौटा दिया गया। अँगरेजी राज्य के आरम्भ में बड़ा लड़का सैयद फकुद्दीन इस राज्य का मालिक था। इसने खगड़ा में एक महल और असुरगढ़ में एक छोटा-सा किला बनवाया। इसके दो लड़के थे— अकबर हुसैन और दीदार हुसैन। अकबर हुसैन का परिवार किशुनगंज चला आया और दीदार हुसैन का खगड़ा में ही रहा। सैयद दीदार हुसैन के लड़के सैयद इनायत हुसैन ने अँगरेजों को १८५७ ई० के सिपाही-विद्रोह में और १८६४ के भूटान-युद्ध में बड़ी मदद की थी। उसका उत्तराधिकारी सैयद अता हुसैन हुआ जिसने

मुर्शिदाबाद के नवाब की लड़की से शादी की। १८८७ ई० में इसे नवाब की पदवी मिली। १८९२ में वह दो नाबालिग लड़कों को छोड़ कर मर गया। इसी के वंशज इस समय स्टेट के मालिक हैं।

गोआल पोखर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

चपरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

ठाकुरगंज—जिले के बिलकुल उत्तर बूढ़ी गंगा के किनारे यह एक गाँव है, जहाँ थाने का सदर आफिस है। कहते हैं कि महाभारत के प्रसिद्ध राजा विराट की यही राजधानी थी। वनवास के समय पांडवों ने यहीं आश्रय पाया था। कोशी नदी के पूरब रंगपुर और दिनाजपुर तक विराट का राज्य बताया जाता है। यहाँ कुछ लिखा हुआ पत्थर जमीन के नीचे मिला था, जिसे लोग विराट के महल का भाग्नावशेष बताते थे। कुछ लोग भागलपुर जिले के बरांटपुर को भी विराट का स्थान बताते हैं। चम्पारण में भी पाण्डवों के अज्ञातवास का स्थान बताया जाता है। कुछ इतिहासकार मथुरा या जयपुर के पास विराट राजा की राजधानी बताते हैं।

तेरहागाछ—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

दिघालबंक—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

धरमपुर स्टेट—यह स्टेट बाबू पृथ्वीचन्द लाल चौधरी का है। इनके दादा नकछेद लाल चौधरी ने इसे हासिल किया था। बाबू नकछेद लाल के लड़के बाबू धरमचन्द लाल चौधरी ने इसे बढ़ाया। यह स्टेट इन्हीं के नाम पर मशहूर हुआ।

बरिजानगढ़—बहादुरगंज से ५ मील दक्खिन यह एक टूटा-फूटा पुराना किला है। इसके भीतर एक पुराना पोखर है, जो डाक पोखर कहलाता है। यह किला असुर के भाई बरिजान का

बनवाया हुआ बताया जाता है। असुरगढ़ के वर्णन में असुर का जिक्र हो चुका है।

बहादुरगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बेणुगढ़—बहादुरगंज से ८ मील पच्छिम यह एक टूटा-फूटा पुराना किला है। किले की दीवाल करीब एक एकड़ जमीन को घेरती है। यह असुर के भाई राजा बेणु का बनवाया बताया जाता है। असुर का जिक्र असुरगढ़ के वर्णन में आया है।

मामूभगिना ऐल—सूर्यपुर परगने के दक्षिण यह एक पुराना बाँध है, जो दिनाजपुर जिले के नेकमर्द स्थान से आया है। कहते हैं कि अंगोरबासा ग्राम की रहनेवाली एक युवती से विवाह करने के लिये दो प्रतिद्वन्द्वी मामू-भगिना ने इसे बनवाया था। महानंदा नदी के बायें किनारे पर तिलैया और सोनापुर के बीच जहाँ-तहाँ टूटा-फूटा बाँध मिलता है। उसे भी लोग मामू भगिना ऐल नाम से ही पुकारते हैं और उसके संबंध में भी ऐसी ही कुछ कहानी है।

संथाल परगना जिला

दुमका (नया दुमका) या सदर सबडिविजन

दुमका (नया दुमका)—दुमका शहर २४°१६' उत्तरीय अक्षांश और ८७°१५' पुर्वीय देशान्तर पर है। संथाली विद्रोह के समय सैनिकों ने दुमका नामक पुराने गाँव से कुछ दूर इस स्थान पर अपना डेरा डाला था। इस कारण इसका नाम नया दुमका पड़ गया। १८५५ में यह संथाल परगने का सदर दफ्तर बनाया गया। पर कुछ दिनों के लिये यहाँ से सदर दफ्तर उठ गया और यह केवल एक सब डिस्ट्रिक्ट रह गया। लेकिन ठीक १८७२ में फिर यहीं सदर दफ्तर आया। १९०३ में यहाँ म्युनिसिपैलिटी कायम की गयी। यहाँ एक टील्हे पर तालाब के अन्दर एक पत्थर का स्तम्भ है जो तालाब खुदवानेवाले डा० केली का स्मारक है। इस शहर से रेलवे लाइन बहुत दूर है। यहाँ से रामपुर हाट करीब ३९ मील और देवघर ४१½ मील है। दुमका शहर की जनसंख्या ९,४७१ है, जिसमें ७,६८८ हिन्दू, १,२०६ मुसलमान, ३९० आदिम जाति के लोग और १८७ ईसाई हैं।

नया दुमका—दे० दुमका।

महुआगढ़ी—राजमहल पहाड़ी में यह एक पहाड़ी है जो १,५०० फीट ऊँची है। इसकी चोटी पर पोखरिया नाम का एक पहाड़ी गाँव है जिसका नाम वहाँ के एक पत्थर से बँधे

पोखर के कारण पड़ा। यहाँ एक पत्थर के किले का भी भग्नावशेष है जो एक राजपूत राजा खुशियाल सिंह का बनाया जाता है।

सँकरा—यह एक स्टेट है जो १८ वीं सदी में वीरभूम जिले के नागर के राजा जयसिंह के अधिकार में था। सँकरा एक गाँव है जहाँ पहले इस वंश के लोग रहते थे।

हंडवे—यह एक परगना है जो पहले मुँगेर जिले के खड़गपुर राज्य के अधीन था। १७६२ ई० में खेतौरी वंश के सुभान सिंह ।यहाँ के इस्तमरारी मुकर्रीदार थे। इस समय हंडवे परगने के २२ तालुकों में १ तालुके का अधिकारी हंडवे राज्य है जो सुभान सिंह के वंशजों के हाथ में है।

गोड्डा सबडिविजन

गोड्डा—यह इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। इसका सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन भागलपुर-मन्दार हिल लाइन पर पँजवारा रोड है जो यहाँ से १४ मील है।

पातसुंडा—दे० बरकूप।

बरकूप—यह गाँव एक पुराना स्थान है जहाँ १२ पुराने कुएँ हैं। बारह कूप से बरकूप शब्द बना। कहते हैं, यहाँ पहले नट राजा लोग रहते थे। बादशाह अकबर के वक्त में यहाँ खेतौरी लोगों का अधिकार हुआ। राजपूतों के आक्रमण से खड़गपुर (मुँगेर) का एक खेतौरी सरदार देव वर्म भागकर पातसुंडा पहुँचा और बिहार के मुगल राजप्रतिनिधि से पातसुंडा और बरकूप तप्पे की जागीर ली। १६८७ ई० में जागीर मणि वर्म और चन्द्र वर्म नाम के दो भाइयों में बँट गयी। पहले को बरकूप तप्पा

और दूसरे को पातसुंडा तप्पा मिला। बरकूप तप्पे के वस्तारा, कुरमा, बोदरा, शालपुर और कपोता गाँव में पुराने मकान हैं।

मनिहारी—यहाँ पहले खेतौरी घराने के लोग राज करते थे। बुकानन हैमिल्टन ने लिखा है कि मँझवे घाटी में दरियार सिंह नाम का एक नट राजा लकरागढ़ नामक एक किला बनवाकर रहता था। रूपकरण नामक एक खेतौरी सरदार ने अकबर के सेनापति राजा मानसिंह की सहायता पाकर उसे हटा दिया। इसके वंशज १८३८ ई० तक मानसिंह की दी हुई जागीर भोगते रहे। मनिहारी का नया नाम कसबा है, यहाँ कई सूखे तालाब हैं जिनसे पुराने मकानों की चीजें और पत्थर पर खोदी मूर्त्तियाँ मिली हैं। कहते हैं, मनिहारी तप्पे के मानगढ़ नामक गाँव में राजा मानसिंह का बनवाया एक किला था। विक्रमकिता में बिमलीगढ़ नामक एक किले का भग्नावशेष है जो वहाँ के वीरेन्द्र सिंह नामक एक सरदार की स्त्री के नाम पर बना था। यहाँ पत्थर पर खोदी दो मूर्त्तियाँ हैं जो भगवान बुद्ध की मूर्त्तियाँ मानी जाती हैं। यहाँ पहड़िया नामक चट्टान पर एक पत्थर के किले का भग्नावशेष है।

जामतारा सबडिविजन

जामतारा—यह स्थान ई० आई० आर० की कार्ड लाइन पर है। यहाँ सबडिविजन का सदर दफ्तर है।

देवघर सबडिविजन

देवघर—यह इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। इसका दूसरा नाम वैद्यनाथ धाम भी है। जसीडीह जंकशन से ४ मील लम्बी एक छोटी लाइन यहाँ आयी है। इस शहर के उत्तर में दाता नामक जंगल, उत्तर-पूरब में नन्दाहा पहाड़, ७ मील पूरब की ओर तियूर या त्रिकूट पर्वत, तथा दक्षिण-पूरब, दक्षिण और दक्षिण-पच्छिम की ओर १२ मील के अन्दर पहाड़ ही पहाड़ हैं। पच्छिम की ओर यमुना-जोर नामक एक छोटी नदी बह रही है। वहाँ से आधा मील और पच्छिम धरुआ नदी है जो बहकर शहर के दक्षिण भी आयी है। शहर का दृश्य बहुत सुन्दर है। यह स्थान स्वास्थ्य-कर समझा जाता है। बहुत-से लोग यहाँ स्वास्थ्य-सुधार के लिये आते हैं। यहाँ एक कुष्टाश्रम है। इस शहर की जन-संख्या १४,२१७ है, जिसमें १३,३८० हिन्दू, ५७४ मुसलमान, १५२ ईसाई, ६० आदिम जातिवाले और २१ जैन हैं।

वैद्यनाथ महादेव को लेकर इस स्थान की प्रसिद्धि सारे भारतवर्ष में है। भारत के भिन्न-भिन्न भागों के लोग महादेव के दर्शन के लिये यहाँ आया करते हैं। शिवपुराण, पद्मपुराण आदि में इस स्थान की महत्ता बतायी गयी है। पुराणों में लिखा है कि त्रेतायुग में लंका का राजा रावण कैलाश पर्वत से शिवजी को लंका ले जाना चाहता था। शिवजी इस शर्त पर जाने को तैयार हुए कि रास्ते में कहीं जमीन पर उन्हें रखा नहीं जाय। रावण जब ज्योतिर्लिंग को कैलाश से ले चला तो देवता लोग घबड़ाये। अन्त में जलदेवता वरुण रावण के उदर में प्रवेश कर गये जिससे उसे पेशाब करने की इच्छा जोरों से मालूम

पड़ने लगी। रावण आकाश-मार्ग से नीचे उतरा और एक बटोही ब्राह्मण को ज्योतिर्लिंग देकर पेशाब करने लगा। उसे पेशाब करने में बड़ी देर लगी। ब्राह्मण ने कुछ देर के बाद ज्योतिर्लिंग को पृथ्वी पर स्थापित कर अपना रास्ता लिया। पीछे रावण ने उस लिंग को उखाड़कर ले जाना चाहा; पर वह इसमें बिलकुल असमर्थ रहा। वही ज्योतिर्लिंग आज वैजनाथ या वैद्यनाथ महादेव के नाम से प्रसिद्ध है। यह ज्योतिर्लिंग बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक समझा जाता है। कहते हैं कि बैजू नामक एक भक्त के नाम पर यहाँ के महादेव का नाम वैजनाथ या वैद्यनाथ पड़ा। यहाँ बैजू की एक समाधि भी बतायी जाती है जो केवल २०० वर्ष की पुरानी मालूम पड़ती है। कुछ लोग सत्ययुग से ही वैद्यनाथ महादेव का वहाँ रहना बताते हैं। कहते हैं कि दक्षयज्ञ में मरी हुई सती की देह को जब शिवजी कंधे पर लिये फिरते थे तो विष्णु ने चक्र से उस देह को खंड-खंड कर दिया था जो ५२ स्थानों में जा गिरे थे। कलेजे का भाग यहीं गिरा हुआ बताया जाता है। लेकिन, इसके स्मारक-स्वरूप यहाँ कोई मंदिर नहीं है। वैद्यनाथजी के मंदिर के एक शिला-लेख से मालूम पड़ता है कि इस मंदिर को सन् १५९६ में गिद्धौर महाराज के पूर्वज पूरनमल ने बनवाया था। लेकिन, कहते हैं कि पूरनमल ने मंदिर बनवाया नहीं, केवल उसकी मरम्मत करायी। उस समय के पुजारी रघुनाथ का भी एक लेख मंदिर में है। मंदिर के फाटक पर बँगला लिपि में एक लेख है। मंदिर के मुख्य फाटक के सामने चन्द्रकूप नाम का कुआँ है जिसमें पृथ्वी पर के सभी तीर्थों का जल होना माना जाता है। कहते हैं, इन मंदिरों के अन्दर तीन बौद्ध मूर्त्तियाँ हैं जिन्हें लोग हिन्दू मूर्त्तियाँ मानकर पूजते हैं। शिवगंगा नामक जलाशय और कर्मनाशा
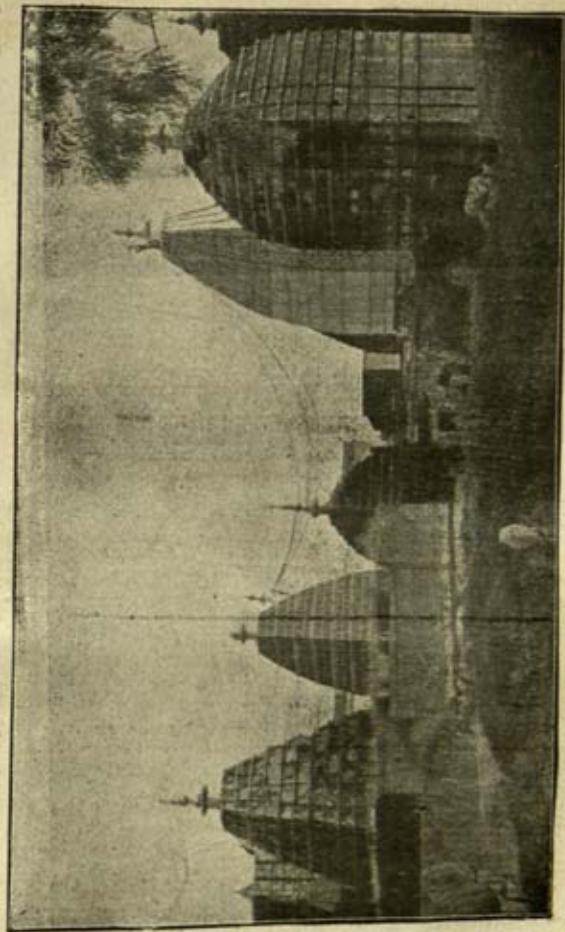
वैद्यनाथ का मंदिर, देवघर

राजमहल के पास हदफ की जामा मस्जिद

राजमहल पहाड़ी का एक मनोहर दृश्य

नामक धारा यहाँ की दर्शनीय वस्तुओं में है। कहते हैं, कर्मनाशा की उत्पत्ति रावण के पेशाब से हुई थी। देवताओं के घर के अर्थ में इस स्थान का नाम अब देवघर पड़ा है। पहले इस स्थान को हार्दपीठ, रावणवन, केतकीवन, हरीतकीवन और वैद्यनाथधाम कहते थे।

मधुपुर—संथाल परगने का यह एक शहर है जहाँ की जन-संख्या ८,६६५ है। यहाँ ई० आई० आर० की कॉर्ड लाइन का जंकशन है। यहाँ से एक लाइन गिरिडीह को ओर गयी है। यह स्थान बहुत स्वास्थ्यकर समझा जाता है।

वैद्यनाथ धाम—दे० देवघर।

पाकुर सबडिविजन

पाकुर—यहाँ पाकुर सबडिविजन का सदर दफ्तर है। यहाँ एक मारटेलो टावर है, जिसकी ऊँचाई ३० फीट और घेराव २० फीट है। यह सन १८५६ में विद्रोहियों के बलवे से सरकारी और रेलवे अफसरों को बचाने के लिये बनाया गया था। संथाल-विद्रोह के समय यहाँ बहुत मार-काट और लूट-पाट मची थी।

अम्बर—पाकुर सबडिविजन के उत्तर-पूरब भाग में यह एक स्टेट है। इसका अधिपति बहुत दिनों से एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण-परिवार है। जब मानसिंह सुन्दरवन के राजा प्रतापादित्य का विद्रोह दबाने आये, तो अम्बर स्टेट के वर्तमान मालिक के पूर्वज ने उनकी बड़ी मदद की थी। राजा मानसिंह के निवास-स्थान अम्बर (राजपूताना) के नाम पर इस स्थान का नाम पड़ा। १८०१ ई० में इस स्टेट के स्वामी पृथ्वीचन्द साही थे, जो संस्कृत के एक विद्वान, कवि और लेखक बताये जाते हैं।

सुलतानाबाद—इस स्थान को सुलतान शाह नामक एक मुसलमान सरदार ने बसाया था। कहते हैं कि गोरखपुर के आबू सिंह और बाकू सिंह नामक दो भाइयों ने सुलतानाबाद को जीतकर यहाँ अपना राज्य कायम किया। बड़े भाई बाकू सिंह महेशपुर में अपनी राजधानी बनाकर महेशपुर-राजवंश के संस्थापक हुए। सन् १७५४-५८ में गरजन सिंह इस वंश के नामी आदमी हुए। इनके समय में मराठे सैनिकों के दल के दल सुलतानाबाद होकर गुजरते थे। कुछ सैनिकों को इन्होंने परास्त भी किया था। इनके वंशज अब भी इस स्टेट के मालिक हैं। सुलतानाबाद परगने में हरिपुर, शिवपुर, गड़बारी, देवी नगर, कोताल पोखर और अकदासाल प्रसिद्ध गाँव हैं।

राजमहल सबडिविजन

राजमहल—यह शहर इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है जो जिले के उत्तर-पूरब भाग में गंगा के किनारे है। सन् १६३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या ३,६८५ है, जिसमें २,४६२ हिन्दू, १,०५६ मुसलमान, ११४ आदिम जाति के लोग और २३ ईसाई हैं। यह शहर मुसलमानी वक्त में बहुत दिनों तक बँगाल-बिहार की राजधानी था। उस समय का शहर वर्त्तमान शहर से ४ मील पच्छिम था। यहाँ की बहुत-सी पुरानी इमारतें अब खँडहर के रूप में हैं। बहुतों का तो अब कुछ पता भी नहीं है। यदि हम पूरब की ओर से देखना शुरू करें, तो पहले हमें सबरजिस्ट्री आफिसके पास एक पुराना शिवालय और रेलवे कम्पनी के कब्जे में एक पुराना और बड़ा कुआँ मिलेगा। कहते हैं कि शाहशुजा के परास्त होने पर उसके घर की औरतों ने इसी कुएँ में अपने कीमती जवाहरात को डाल

रखा था । इसके पच्छिम रेलवे कम्पनी का एक मकान है, जिसका निचला भाग बहुत पुराने समय का है। इसके बाद एक पुराने हम्माम या स्नानागार का भग्नावशेष है । कचहरी के मकान के नीचे का भाग पुराने वक्त का है। यहाँ जमीन के अन्दर कोठरियाँ भी मिली थीं । आगे चलकर एक पुरानी कब्रगाह है, जिसके पच्छिम एक संगदालान है जो मान सिंह का बनवाया बताया जाता है। कहते हैं, इसमें भी जमीन के नीचे कमरे थे। इस समय रेलवे कम्पनी इसे गुदाम के काम में ला रही है। इससे ५० गज की दूरी पर एक पुरानी मस्जिद है जो रेलवे कम्पनी के अधिकार में है और जिसे इसने अस्पताल के काम के लिये दे दी है। कहते हैं कि यह मस्जिद बादशाह अकबर के लिये बनी थी। यहाँ मैना बीबी की एक कब्र और एक मैना तालाब है जो मुर्शिदाबाद के नवाब के अधिकार में है। इसके ३०० गज दक्षिण एक कब्रगाह है जिसके पूरब एक तालाब और पच्छिम अनन्त सरोवर या अला सरोवर नाम की एक झील है। इस झील के अन्दर शाहशुजा के वक्त की इमारत का भग्नावशेष है। इस झील के दक्षिण शाहशुजा के एक बाग और जनानखाने की इमारत का खंडहर है। यहाँ पर भी जमीन के अन्दर कोठरियाँ बतायी जाती हैं। इस झील पर ६ फीट ऊँचे एक पुराने पुल का टुकड़ा है। बाग के सामने एक ईदगाह है। यह झील उधुआ नाला तक चली गयी है । अस्पताल के पास एक अँगरेज की कोठी है जिसकी दीवाल पुरानी है। यहाँ से एक दीवाल दो मील पच्छिम जगत सेठ के बँगले तक गयी थी। अँगरेज की कोठी के अहाते में बारहदरी नाम की एक इमारत है जो फतह जंग खाँ नामक एक पुराने जमींदार की बतायी जाती है। कहते हैं कि जब मानसिंह ने यहाँ जामा

मस्जिद की नींव दी तो फतह जंग खाँ ने बादशाह अकबर को झूठ ही लिख भेजा कि मानसिंह अपना महल बनवा रहे हैं। इसपर मानसिंह ने क्रोध में आकर उसके घर को तोप से उड़ा दिया। राजमहल बाजार से आधा मील पच्छिम नवाब मीरजाफर खाँ के लड़के मीरन की कब्र है। इसके ४०० गज पच्छिम पत्थरगढ़ नामक महल का भग्नावशेष है। कुछ लोग कहते हैं कि मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध धनी जगतसेठ के लिये यहीं रुपया ढाला जाता था। इसके पच्छिम एक पुराना शिवालय है, जिसके पास नवाब ड्योढ़ी में जगतसेठ का एक मकान था। यहाँ से कुछ दूर पच्छिम मुर्शिदाबाद के नवाब घराने के लोगों का मकान और एक इमामबाड़ा था। इसके पास दो मस्जिदें हैं जिनमें एक रौशन मस्जिद अब भी अच्छी हालत में कायम है। नवाब ड्योढ़ी से दो मील पच्छिम मानसिंह का बनवाया जामा मस्जिद है। कहते हैं कि मस्जिद से लेकर संगदालान तक जमीन के अन्दर से जाने का रास्ता था। मस्जिद के पास एक शिवालय है, वह भी मानसिंह का ही बनवाया बताया जाता है। यहाँ भी बारहदरी नामक एक मकान का भग्नावशेष है। जामा मस्जिद से एक मील दक्षिण-पूरब और अन्ना सरोवर से पच्छिम ३० फीट के घेरे का एक कुआँ है जो मानसिंह का बनवाया बताया जाता है। जामा मस्जिद से ८०० गज उत्तर-पच्छिम मुसलमानी वक्त का एक पुराना पुल है। यहाँ से आधा मील उत्तर पहाड़ पर एक पीर की कब्र है जिससे वह पीर-पहाड़ कहाता है। इसके पच्छिम एक पहाड़ी टील्हे पर कन्हाई थान है जिसे लोग श्रीकृष्ण के सम्बन्ध से पवित्र स्थान मानते हैं।

उधुआ नाला—राजमहल से ६ मील दक्षिण गंगा के किनारे यह एक गाँव है। इसी के पास सन् १७६३ के ५ सितम्बर को

मीरकासिम और अँगरेजों के बीच एक बहुत बड़ी लड़ाई हुई थी, जिसमें मीरकासिम की हार हुई थी। यहाँ नाला पर एक पुराने पुल का चिह्न अब भी मौजूद है।

कांकजोल—राजमहल से ८ कोस दक्षिण यह एक गाँव है। पहले यह एक शहर था जो उस समय के सुविस्तृत राजमहल जिले की राजधानी था। गंगा के पूरब का बहुत बड़ा हिस्सा पहले इसी जिले में था, क्योंकि यह भाग पहले गंगा के पच्छिम था। गंगा उस समय बहुत दूर पूरब गौड़ के पास से बहती थी जहाँ इस समय भागीरथी की धारा है। इस प्रकार पुराने कांकजोल इलाके का कुछ भाग पूर्णिया जिले में और कुछ मालदह जिले में पड़ता है। कांकजोल शहर के नाम पर एक परगने का भी नाम पड़ गया है। पूर्णिया जिले में भी कांकजोल नाम का एक परगना है जो सम्भवतः इसी परगने का एक भाग हो।

तेलियागढ़ी—साहेबगंज से ७ मील पूरब रेलवे लाईन के किनारे एक अधित्यका पर तेलियागढ़ी नामक एक टूटा-फूटा किला है। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण इस स्थान की पहले बड़ी महत्ता थी और यह बंगाल की कुंजी या बंगाल का द्वार कहलाता था। पहले किले के किनारे ही गंगा नदी बहती थी। कहते हैं कि किले की दीवाल पर बैठकर सैनिक लोग गंगा में मछली मारा करते थे। अब गंगा नदी यहाँ से बहुत दूर हट गयी है। किले के उत्तर, पूरब और पच्छिम की दीवाल अब भी देखने में आती है जो करीब २५० फीट लम्बी है। दक्षिण की ओर पहाड़ी ही इसकी रक्षा करती थी। पूरब और पच्छिम की ओर फाटक हैं। किले के भीतर बहुत-से पुराने मकानों के भग्नावशेष दिखाई पड़ते हैं। सम्भवतः तेलिया पत्थर से बने होने के कारण गढ़ी का नाम तेलियागढ़ी पड़ा।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि एक तेली जमींदार के नाम पर, जो पीछे मुसलमान हो गया था, इस गढ़ी का नाम पड़ा था।

सकरीगली— साहेबगंज से ६ मील पूरब गंगा के किनारे यह एक गाँव है। इस गाँव का नाम सकरीगली घाटी के नाम पर पड़ा। मुसलमानी वक्त में इस घाटी की बड़ी महत्ता थी और यहाँ कितनी ही लड़ाइयाँ हुई थीं। कहते हैं कि इसमें ६ से १२ फीट चौड़ी सड़क थी जो पहाड़ काटकर बनायी गयी थी। बिहार से बंगाल जाने का मुख्य मार्ग यही था। यहाँ पुराने किले का अब कोई चिह्न नहीं रह गया है। हाँ, यहाँ एक पुरानी कब्र है जो सैयद अहमद मकदुम की समझी जाती है। कहते हैं कि इसको औरंगजेब के सम्बन्धी और सेनापति साइस्ता खाँ ने बनवाया था। सकरीगली गाँव के पास पलटनगंज एक बाजार है जो पहले क्लीवलैंड के पहड़िया सैनिकों का एक अड्डा था।

साहेबगंज—यह संथाल परगने का सबसे बड़ा शहर है जो गंगा के किनारे पर है। यहाँ की जनसंख्या १५,८८३ है। शहर में म्युनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है। यह व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यहाँ ई० आई० आर० का स्टेशन है।

राँची जिला

राँची (सदर) सबडिविजन

राँची—यह शहर समुद्रतल से २,१२८ फीट ऊँचा है और २३°२३' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°२३' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ छोटानागपुर कमिश्नरी और राँची जिले का सदर दफ्तर है। गर्मी के दिनों में विहार-सरकार का दफ्तर भी यहीं चला आता है। सरकारी आफिस दोरंद महल्ले में है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या ५०,५१७ है, जिसमें २७,७१७ हिन्दू, १२,०९६ मुसलमान, ७,५९६ ईसाई, ३,०४६ आदिम जाति, ७७ जैन, ८ सिक्ख और ७ अन्य जाति के लोग हैं। राँची शहर अँगरेजी काल में बसा है। जब सन् १८३४ में दक्षिण-पश्चिम सीमा प्रान्त एजेन्सी कायम की गयी तो उसके पहले एजेन्ट विल्किन्सन ने किसनपुर गाँव में अपना सदर दफ्तर बनाया। जहाँ इस समय इक्जक्युटिव इंजीनियर का आफिस है उसी स्थान पर उसका कोर्ट था। किसुनपुर नाम के और भी कई स्थान थे, इसलिये सदर दफ्तर के स्थान का नाम पास के एक दूसरे गाँव राँची के नाम पर रखा गया। इस गाँव को अब भी लोग पुरानी राँची कहते हैं। १८४३ ई० में एजेन्ट के मुख्य सहायक का सदर दफ्तर भी लोहरदगा से हटकर राँची ही चला आया। उस काल के बने हुए शहर के अन्दर बहुत-से मकान हैं। ईसाई मिशनरियों के भी कई पुराने मकान हैं। पहला जर्मन मिशन चर्च १८५५ ई० में बना था जिसे मिश-

नरियों ने स्वयं अपने हाथों से बनाया था। १८६६ ई० में यहाँ म्युनिसिपैलिटी कायम हुई थी। यहाँ अँगरेजों और हिंदुस्तानियों के लिये पागलखाने हैं। यहाँ कुछ घुड़सवार सैनिकों का भी अड्डा है।

अंगारा—राँची से उत्तर-पूरब की ओर इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है।

ओरमाँझी—राँची-हजारीबाग सड़क पर इस स्थान में थाने का सदर आफिस है।

कुरू—यह स्थान जिले की उत्तरीय सीमा पर राँची-डाल्टनगञ्ज सड़क पर है। यहाँ थाने का सदर आफिस है।

चुटिया या छुटिया—राँची शहर के पूरब भाग में म्युनिसिपल सीमा के अन्दर यह एक स्थान है। यह पहले एक गाँव था जहाँ छोटानागपुर के नागवंशी राजा रहते थे। कहते हैं कि इसी नाम पर यहाँ के विस्तृत भू-भाग का नाम छोटा नागपुर पड़ा। कहा जाता है कि इस वंश के चौथे राजा प्रताप राय ने यहाँ अपनी राजधानी बनायी थी। यहाँ एक पुराना मंदिर है जिसकी दीवाल पर के लेख से मालूम पड़ता है कि यह यहाँ के राजा के गुरु हरि ब्रह्मचारी द्वारा सम्वत् १७४२ (१६८४ ई०) में बनवाया गया था। पहले इस स्थान पर अँगरेज अफसर लोग साल में एक बार बहुत बड़ा मेला लगाया करते थे, पर अब वह मेला नहीं लगता है।

जगन्नाथपुर—राँची से ६ मील दक्षिण-पश्चिम यह एक गाँव है। यहाँ एक पहाड़ी पर एक हिन्दू-मन्दिर है जो जिले का सबसे बड़ा मन्दिर है। यह मन्दिर पुरी के जगन्नाथजी के मंदिर की नकल पर बना है। इसे सम्वत् १७४८ (१६९१ ई०) में नागवंशी घराने के एक खोरपोशदार ठाकुर ऐनीशाही ने
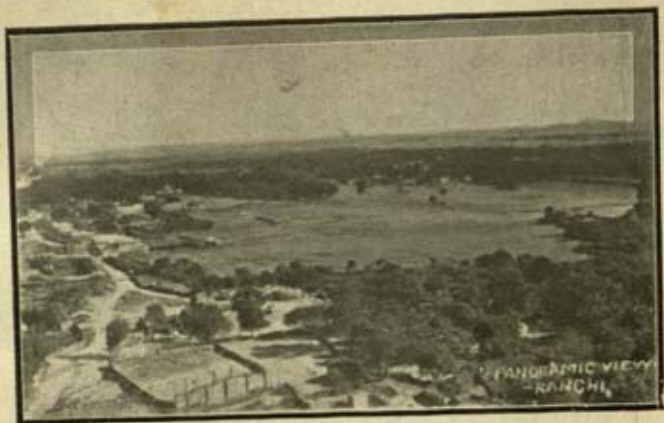
रांची शहर का एक दृश्य

रांची का जर्मन मिशन चर्च जिसे प्रथम मिशनरियों ने अपने हाथों से बनाया

हुंड्रू जलप्रपात (राँची)

बनवाया था । जगन्नाथपुर मंदिर में कुछ देवोत्तर सम्पत्ति है । सन् १८५७ में सिपाही-विद्रोह के समय बड़कागढ़ स्टेट को सरकार ने जप्त कर लिया। अब यहाँ के पुरोहित की बहाली डिप्टी कमिश्नर ही करते हैं। यहाँ रथ-यात्रा धूमधाम से मनायी जाती है।

दोरंद—यह स्थान राँची से दो मील दक्षिण है। सुवर्णरेखा की एक छोटी सहायक नदी इसे राँची से अलग करती है। सन् १८३४ में एजेन्सी कायम होने के बाद ही रामगढ़ सैनिक दल, जो १७५८ ई० में चतरा में कायम किया गया था, दोरंद लाया गया। सन् १८५७ में यहाँ के पैदल सैनिकों ने विद्रोह किया । १९०५ ई० में यहाँ से सेना हटा दी गयी। सैनिकों के रहने के मकान, पुलिस कालेज और पुलिस ट्रेनिंग स्कूल के काम में आने लगे। १९१० ई० में फिर एक नया मकान बना। बिहार-उड़ीसा के अलग प्रान्त बनने पर पुलिस कालेज यहाँ से हजारी-बाग हटा दिया गया और यहाँ गर्मी के मौसम के लिये प्रान्तीय सरकार का दफ्तर रखने का प्रबन्ध हुआ।

बुड़मू—राँची से उत्तर इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है।

बेरो—राँची से पच्छिम इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है।

माँडर—राँची-डाल्टनगंज सड़क पर इस स्थान में थाने का सदर आफिस है।

मुरहू—राँची से २८ मील दक्षिण इस स्थान पर ईसाई मिशनरियों का जबरदस्त अड्डा है। यहाँ १८८७ ई० का बना एक चर्च है। मिशनरियों ने यहाँ अस्पताल और स्कूल भी खोल रखे हैं। यह स्थान व्यापार का केन्द्र है।

लापुंग—सदर सबडिविजन के दक्षिण-पश्चिम कोने में इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है।

लोहरदगा—सदर सबडिविजन में यह एक शहर है, जहाँ की जनसंख्या सन् १६३१ की गणना के अनुसार ७,५७१ है, जिसमें ४,८५० हिन्दू, २,००१ मुसलमान, ३७६ ईसाई और ३६० आदिम जाति के लोग हैं। १८४३ ई० तक लोहरदगा एक जिला था जिसके अन्दर वर्तमान राँची और पलामू जिले थे। इसका सदर आफिस यही शहर था। १८८८ ई० में यहाँ म्युनिसिपैलिटी कायम हुई। इस समय भी यह शहर एक व्यापारिक केन्द्र है। सन् १६१३ में राँची से यहाँ तक बी० एन० आर० की लाइन खुल जाने से इसकी महत्ता और बढ़ गयी है। यहाँ सब रजिस्ट्री आफिस, आनरेरी मजिस्ट्रेट का दफ्तर और एक हाई स्कूल है। यहाँ ईसाई मिशनरी का स्थापित कुष्ठाश्रम है।

सिल्ली—जिले की पूर्वी सीमा पर रेलवे लाइन के पास इस स्थान में थाने का सदर आफिस है।

सुतियाम्बे—राँची से उत्तर पिथौरिया के पास सुतियाम्बे एक छोटा-सा गाँव है, छोटानागपुर के नागवंशी राजाओं का यह आदि-स्थान समझा जाता है। इस वंश के राजाओं की जहाँ-जहाँ राजधानी रही वहाँ-वहाँ भादो के महीने में एक पर्व के अवसर पर ४० फीट लम्बे स्तम्भ पर राजाओं की स्मृति में दो छत्र लगाये जाते हैं। सुतियाम्बे में पहला छत्र प्रथम राजवंशी राजा के पालक पिता मद्रा मुंडा की यादगारी में रहता है।

हुंड्रू जलप्रपात—यह प्रांत का सबसे बड़ा और सुंदर जलप्रपात है। यह राँची से २४ मील उत्तर-पूरब है, जहाँ सुवर्णरेखा नदी ३२० फीट की ऊँचाई से गिरती है। बरसात के दिनों में जब बढ़ी हुई नदी का लाल जल इतनी ऊँचाई से गिरता है, तो दृश्य

अत्यन्त ही मनोरम हो जाता है। राँची जिले में जलप्रपात को घाघ कहते हैं।

राँची से २२ मील दक्षिण-पूरब दासो घाघ है, जहाँ काँची नदी ११४ फीट की ऊँचाई से गिरती है। इस जिले के बासिया थाने और कोचेदगा थाने में पेरुआ नामक घाघ है। राजादेरा अधित्यका में शंख नदी से बना सदनी घाघ है।

खूँटी सबडिविजन

खूँटी—राँची से दक्षिण राँची चाइबासा सड़क पर इस स्थान में सन् १९०५ से सबडिविजनल आफिस है। ईसाइयों ने लड़कियों के लिये यहाँ एक स्कूल खोल रक्खा है जिसमें कपड़े में लगाने के लिये लेस बनाना भी सिखाया जाता है।

कर्रा—खूँटी से पच्छिम इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है।

चोकाहातू—खूँटी से उत्तर-पूरब की ओर सोनाहातू थाने में यह एक गाँव है। जहाँ मुंडा लोगों का एक विशाल समाधि-स्थान या कब्रगाह है।

तमार—खूँटी से पूरब इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार रहते हैं जो तमार परगने के मालिक हैं।

तिलमी—कर्रा थाने में यह एक गाँव है जहाँ नागवंशी ठाकुरों के एक किले का भग्नावशेष है। किले के अन्दर पत्थर के एक कुएँ पर देवनागरी अक्षर और संस्कृत भाषा में लिखा है कि इसे अकबर ठाकुर ने सम्वत् १७९४ (१७३७ ई०) में बनवाया था।

तोरपा—खूँटी से दक्षिण-पश्चिम इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है।

बूंदू—खूँटी से १८ मील उत्तर-पूरब यह एक शहर है। यहाँ की जनसंख्या ६,४८७ है, जिसमें ६,१४६ हिन्दू, २६३ मुसलमान और ४५ अन्य जाति के लोग हैं। यहाँ अस्तपाल, थाना और मिड्ल स्कूल है। यह स्थान लाह की फैक्टरी के लिये प्रसिद्ध है।

सोनपत—खूँटी सबडिविजन के दक्षिण-पूरब कोने पर यह एक घाटी है जो सात मिल लम्बी और ६ मील चौड़ी है। यहाँ कुछ सोना पाये जाने के कारण यह स्थान बहुत प्रसिद्ध है। सोना निकालने के लिये कई बार यहाँ कम्पनियाँ बनीं और काम भी शुरू हुआ, पर इसमें सफलता नहीं हुई। कुछ लोग अब भी इस काम में लगे रहते हैं, पर दिन भर परिश्रम करने पर कभी-कभी दो-चार आने का सोना पा जाते हैं।

सोनाहातू—खूँटी से उत्तर-पूरब स्थान में यह थाने का सदर आफिस है।

गुमला सबडिविजन

गुमला—यह स्थान लोहरदगा से ३२ मील दक्षिण २३°२' उत्तरीय अक्षांश और ८४°३३' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। यह व्यापार का केन्द्र है और यहाँ गाय बैल बहुत बिकते हैं। कहते हैं कि यहाँ गौओं का मेला लगने से ही इस स्थान का नाम गुमला पड़ गया।

घाघरा—गुमला से उत्तर इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है।

चैनपुर—गुमला से उत्तर-पच्छिम इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है।

डैसानगर—सिसई थाने के अन्दर यह एक गाँव है जहाँ छोटानागपुर के राजाओं का एक टूटा-फूटा किला है। यह किला जिसका नाम नवरत्न है, पाँच महल का था और हर एक महल में नौ कोठरियाँ थीं। किले के चारों ओर बहुत-से मन्दिर हैं, जिनमें एक मंदिर में जमीन के अन्दर भी कोठरियाँ बनी हैं। जगन्नाथजी के मंदिर के द्वार पर एक लेख है जिससे मालूम होता है कि यह मंदिर सम्वत् १७३६ (१६८२ ई०) में बना था। कपिलनाथ के मंदिर पर सम्वत् १७६७ का उल्लेख है। छोटा-नागपुर के राजाओं की पुरानी राजधानी जिले के अन्दर चुटिया, खुखरा, डैसा, पालकोट, और भरनो इन पाँच स्थानों में कहीं बतायी जाती है। इस समय इस वंश के लोग रातू में रहते हैं।

नागफेनी—सिसई थाना में यह एक गाँव है जो कोयल नदी के पास है। गाँव के समीप एक पहाड़ी पर बहुत-से खुदे हुए पत्थर मिलते हैं। एक पत्थर पर सम्वत् १७६१ (१७०५ ई०) का उल्लेख है। कहते हैं कि कोई राजा यहाँ महल बनवा रहा था, पर महल के तैयार होने के पहले ही वह मर गया। एक कब्र के पत्थर पर कुछ चित्र हैं जिसे लोग राजा, उसकी सात रानियाँ और एक कुत्ते का चित्र बताते हैं। पहाड़ी पर का एक पत्थर नागफेन के समान है इसलिये इस स्थान का नाम नागफेनी पड़ा।

पाट—जिले की उत्तर-पच्छिम सीमा पर यह एक पहाड़ है जो समुद्रतल से ३६०० फीट ऊँचा है। इसकी ऊँचाई सब जगह एक-सी है। यह पहाड़ पच्छिम की ओर बढ़कर सरगुजा और जसपुर स्टेट की ओर गया है।

पालकोट—गुमला से दक्षिण-पूरब इस स्थान में एक बड़ा बाजार और थाना है। डैसा से हटने पर छोटानागपुर के राजा यहीं रहने लगे थे। यहाँ उनका रहना १८ वीं सदी के आरम्भ में बताया जाता है। १८६७ ई० में वे यहाँ से भरनो नामक स्थान में चले गये। यहाँ राजा का टूटा-फूटा महल अब भी देखने में आता है। इस स्थान से एक मील उत्तर एक प्राकृतिक स्तम्भ है जिसे ओरांव लोग 'पाल' (दाँत) और मुंडा 'पहल' (हल का फाड़) कहते हैं। कहा जाता है कि इसी के नाम पर स्थान का नाम पालकोट पड़ा।

बरवे—यह स्थान गुमला से उत्तर-पच्छिम शंख नदी के किनारे है। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार रहते हैं। यह स्टेट पहले सरगुजा राज्य के अधीन था। १८०१ ई० में यह छोटानागपुर राज्य के अधीन हुआ।

बसिया—गुमला से दक्षिण-पूरब यह स्थान कोयल नदी के किनारे है। यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बिसुनपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

मझगाँव—यह गाँव चैनपुर थाना के पच्छिमी भाग में है। यहाँ तांगीनाथ नामक पहाड़ी टील्हे के ऊपर कुछ टूटे-फूटे मंदिर, पत्थर की मूर्त्तियाँ, स्तम्भ के टुकड़े और जमीन में गड़ा लोहे का एक बड़ा त्रिशूल है।

रईडीह—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सिसई—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सिमदगा—यह पहले कोचेदगा थाने के अन्दर एक गाँव था। सन् १९१५ में यहाँ सबडिविजनल आफिस खोला गया और कोचेदगा थाना भी उठकर यहीं चला आया।

कुरदेग—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

कोलेबीरा—इस स्थान में थाने का सदर आफिस है।

ठेठईटाँगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बानो—यह स्थान सिमदगा के पूरब है जहाँ थाने का सदर आफिस है।

बीरू—यह गाँव सिमदगा से १० मील उत्तर है जो इस नाम के परगने के अन्दर है। इस परगने के मालिक एक पुराने घराने के लोग हैं जो अपना सम्बन्ध पुरी के महाराज से बतलाते हैं। कहते हैं कि महाराज के पुत्र हिताम्बर देव सम्बल-पुर आकर बसे। उनके पुत्र हरिदेव सन् १४५७ में उस स्थान को छोड़कर केसलपुर परगने में आये जो छोटानागपुर के महाराज के अधीन था। एक सुन्दर हीरा उपहार में देने के बदले में महाराज की ओर से उन्हें वह परगना जागीर में मिल गया, तथा उन्हें राजा की पदवी भी मिली। उनके वंशज भीम-सिंह महाराज दुरजनसाल के साथ मुसलमानों द्वारा गिरफ्तार कर दिल्ली ले जाये गये थे। कहते हैं कि उन्हीं की सहायता से दुरजनसाल हीरे की पहचान करने से छुटकारा पा सके थे। इसी से खुश होकर महाराज ने उन्हें बीरू परगना दे दिया था। पीछे उनके एक वंशज से नाखुश होकर महाराज ने उनसे राजा की पदवी छीन ली और उसके बदले उन्हें बड़ेरा की पदवी दी। पर स्थानीय लोग अभी तक उनके वंशज को राजा कहते हैं।

बोलबा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

हजारीबाग जिला

हजारीबाग (सदर) सबडिविजन

हजारीबाग—जिले का प्रधान शहर हजारीबाग २३°५९' उत्तरीय अक्षांश तथा ८५°२५' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ जिले का सदर आफिस है। इसके आसपास कई पहाड़ियाँ हैं, जिनमें चन्दवार या सीतागढ़ पहाड़ी २,८१५ फीट ऊँची है। १९३१ ई० की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या २०,९७७ है, जिसमें १४,६४८ हिन्दू, ४,९७५ मुसलमान, ८६० ईसाई, २६१ आदिम जाति, २१३ जैन, १८ सिक्ख और २ अन्य जाति के लोग हैं। यहाँ से ६ पक्की सड़कें भिन्न-भिन्न दिशाओं को गयी हैं। यहाँ रेलवे लाइन नहीं पहुँची है। जिले के उत्तर भाग से आनेवाले लोग ग्रैंड कार्ड लाइन के कोडरमा या हजारीबाग-रोड स्टेशन पर उतर कर मोटर लॉरी आदि सवारी से यहाँ आते हैं।

हजारीबाग बहुत पुराना शहर नहीं है। यहाँ पहले हजारी नाम का एक गाँव था, जहाँ एक बड़ा बाग था। उसीके कारण इस स्थान का नाम हजारीबाग पड़ गया। १७७२ ई० में जब रामगढ़ के राजा ने यहाँ रहने के लिये एक राजमहल बनवाया तो धीरे-धीरे इस स्थान की प्रसिद्धि हो चली। १७८० ई० में जब रामगढ़ सैनिकदल कायम किया गया तो उसका अड्डा यहीं रखा गया। पीछे सन् १८३४ ई० में यह नवनिर्मित हजारीबाग जिले का सदर दफ्तर भी बना दिया गया। यहाँ से सैनिक छावनी कई बार

हटायी गयी और फिर कई बार लायी गयी। इस शहर में जिले के सरकारी आफिसों के अलावे एक कालेज, दो हाई स्कूल, जनाना अस्पताल, सेन्ट्रल जेल, रिफारमेट्री स्कूल और पुलिस ट्रेनिंग कालेज हैं।

इचाक—यह स्थान हजारीबाग से ८ मील उत्तर है। १७७२ ई० में जब अंगरेजों ने रामगढ़ पर कब्जा कर लिया तो वहाँ के राजा तेज सिंह भागकर इचाक आये। उनके उत्तराधिकारियों ने अपने रहने के लिये यहाँ एक तिमंजिला गढ़ बनवाया जो अब भग्नावस्था में है। इचाक में इस समय थाने का सदर आफिस है।

कोडरमा—कोडरमा रेलवे स्टेशन से यह गाँव ४ मील उत्तर-पूरब है। यहाँ सरकार का सुरक्षित जंगल है जो अबरक की खान के लिये प्रसिद्ध है। कोडरमा में थाना, ईसाई चर्च और डाकबँगला भी है।

गुमिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

गोला—यह स्थान जिले के दक्षिण भाग में है। यहाँ पहले एक सबोर्डिनेट जज का आफिस था जो हजारीबाग और राँची, दोनों जिलों के मामलों को सुनता था। लेकिन, यह प्रबंध कुछ दिन के बाद ही उठा दिया गया। यह स्थान इस समय व्यापार का एक केन्द्र है। यहाँ थाना और रजिस्ट्री आफिस भी है।

जयनगर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

टण्डवा—जिले की पच्छिमी सीमा के पास गरही नदी के किनारे यह स्थान व्यापार का एक केन्द्र है। इसके पास की जमीन में कोयला पाया जाता है। यहाँ थाना और अस्पताल भी है।

पदमा—१८६६ ई० में रामगढ़ राजवंश के लोगों के बीच बची-खुची जमींदारी के लिये झगड़ा चला। अंत में तेज सिंह

फौजदार की दूसरी स्त्री के लड़के की जीत हुई। वे पदमा आकर बसे और उन्होंने यहाँ महल बनवाया। यह स्थान हजारीबाग से १४ मील उत्तर है।

पेटरवार—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बरकागाँव—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बरहकट्ठा—ग्रैंड-ट्रंक-रोड के किनारे यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बरही—यह स्थान ग्रैंड-ट्रंक-रोड के किनारे है। यहाँ पहले सबडिविजनल-आफिस था जो १८७२ ई० में उठा दिया गया। आफिस और जेल के भग्नावशेष अब भी मौजूद हैं। यहाँ थाना, अस्पताल, रजिस्ट्री आफिस और सैनिकों के पड़ाव का मैदान है। इस स्थान में पहले अफीम की खेती होती थी। यहाँ से पक्की सड़क हजारीबाग और कोडरमा रेलवे स्टेशन को गयी है।

बागोदर—यह स्थान ग्रैंड-ट्रंक-रोड के किनारे है। यहाँ थाना और डाकबँगला हैं।

बादम—यह गाँव बरकागाँव थाने में है। पहले बहुत दिनों तक वर्तमान रामगढ़ राज्य की राजधानी यहीं थी। यहाँ राजा हेमन्त सिंह ने पटना के एक कारीगर द्वारा यहाँ सन् १६४२ में किला और महल बनवाया था जिसका भग्नावशेष अब भी मौजूद है। मुसलमानों के उत्पात के भय से १६७० ई० में यहाँ से राजधानी हटाकर रामगढ़ ले जायी गयी। बादम से ५ मील दक्षिण-पच्छिम माहुदी पहाड़ी में एक गुफा है जिसे हिन्दू संन्यासियों ने १६६० ई० में तैयार किया था। उस गुफा के शिलालेखों में बादम के राजाओं का भी जिक्र है।

माहुदी पहाड़ी गुफा—दे० बादम।

मांडू—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

रामगढ़—यह स्थान जिले के बिलकुल दक्षिण भाग में दामोदर नदी के किनारे है। यहाँ १६७० ई० से लगायत एक सौ वर्ष तक एक राजवंश के लोग रहते थे। यह राजवंश रामगढ़ राज्यवंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। रामगढ़ राज्य की स्थापना १३६८ ई० में सिंहदेव और वाघदेव नामक दो भाइयों द्वारा हुई बतायी जाती है। इसकी राजधानी पहले सिसुआ में और उसके बाद बादम में थी। बादम से ही १६७० ई० में यहाँ राजधानी आयी। यहाँ उनके किले और राजमहल के भग्नावशेष अब भी दिखायी पड़ते हैं। १७७२ ई० के बाद इस राज्य के मालिक तेज सिंह इचाक जाकर बसे जिससे यहाँ का किला उजाड़ पड़ गया। इचाक जाने के बाद इस राज्य के कई टुकड़े हो गये, पर अन्त में तेज सिंह की दूसरी स्त्री के लड़के को प्रीवी कौंसिल के फैसले के अनुसार यह स्टेट मिला। वे पदमा जाकर बसे। उन्हीं के वंशज इस समय इसके अधिकारी हैं।

सूर्यकुंड—बरहकट्ठा थाने में ग्रैण्ड-ट्रंक-रोड के २२९ वें मील पर रोड से आधा मील दक्षिण एक गर्म जल का झरना है जो सूर्यकुंड कहलाता है। इसका तापमान १९०° है। यहाँ ठंढे और गर्म जल के और कई झरने हैं। यहाँ माघ मास में मेला लगता है।

गिरिडीह सबडिविजन

गिरिडीह—यह एक शहर है जहाँ इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। पास के करहरबारी कोयले के मैदान के कारण यह शहर बसा है। सबडिविजनल आफिस पहले पास के पचम्बा नामक स्थान में था जो रेलवे स्टेशन से ३ मील की दूरी

पर है। १८८१ ई० में पचम्बा से सबडिविजनल आफिस उठकर गिरिडीह चला आया। १९०२ ई० में यहाँ म्युनिसिपैलिटी भी कायम हो गयी। अब गिरिडीह शहर बढ़ते-बढ़ते पचम्बा को ही अपना एक महल्ला बना रहा है। यहाँ एक अस्पताल तथा दो हाई स्कूल हैं जिनमें एक लड़कों का और दूसरा लड़कियों का है। इस शहर की जनसंख्या २१,१२२ है, जिसमें १५,२०२ हिन्दू, ५,६५४ मुसलमान, १९२ ईसाई, ४७ जैन, २५ आदिम जाति और २ अन्य जाति के लोग हैं।

खड़गडीहा—यह स्थान गिरिडीह से २७ मील उत्तर है। १८३४ ई० से लेकर कुछ दिनों तक यहाँ मुन्सिफ की कचहरी भी थी। यहाँ पहले अफीम की खेती बहुत होती थी। अब यह व्यापार का केंद्र भी नहीं रहा। पंद्रहवीं सदी में यहाँ एक राज्य कायम हुआ था जो खड़गडीहा राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस समय इस राजवंश के लोग धनवार में रहते हैं।

गावाँ—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

गंडे—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

जमुआ—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

डुमरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

देवरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

धनवार—गिरिडीह से ३५ मील उत्तर-पच्छिम यह एक गाँव है। खड़गडीहा राजवंश के लोग अब यहीं रहते हैं। अब उनकी जमींदारी को लोग धनवार स्टेट के नाम से जानते हैं। यह स्थान व्यापार का एक केंद्र है। यहाँ थाने का सदर आफिस भी है।

नावाडीह—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

पचम्बा—दे० गिरिडीह।

पारसनाथ—हिमालय से दक्षिण कई सौ मील तक में सबसे ऊँचा पहाड़ पारसनाथ है। यह हजारीबाग जिले के दक्षिण-पूरब कोने पर मानभूम जिले की सीमा के पास ही है। इसकी ऊँचाई ४,४८१ फीट है। ग्रैंड कॉर्ड लाइन का जिले में दूसरा स्टेशन पहाड़ के पास ही है। पार्श्वनाथ जैनियों का एक प्रधान तीर्थ-स्थान है। कहते हैं कि जैनियों के २३वें तीर्थंकर पार्श्व या पार्श्वनाथ ने अपने पहले के ९ तीर्थंकरों के समान इसी पहाड़ पर निर्वाण प्राप्त किया था। कहा जाता है कि उनका जन्म बनारस में हुआ था और उन्होंने अपने १०० वर्ष की उम्र में अपने ३० साथियों के साथ यहाँ उपवास कर शरीर त्याग किया था। २४ वें तीर्थंकर भगवान महावीर का भी इस स्थान से विशेष संबंध था। यहाँ जैनियों के बहुत-से मंदिर हैं। एक मंदिर पर १७६५ ई० की तारीख लिखी है।

पीरटाँड़—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बिरनी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बैंगाबाद—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बेरमो—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सतगाँवा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

चतरा सबडिविजन

चतरा—यह एक शहर है जहाँ इस नाम के सबडिविजन का सदर दफ्तर है। इस शहर की जनसंख्या ८,७५८ है। यहाँ ६,३०३ हिन्दू, २,४०९ मुसलमान, २४ जैन, १९ ईसाई तथा ३ अन्य जाति के लोग हैं। यहाँ रेलवे लाइन नहीं पहुँची है। यहाँ से भिन्न-भिन्न स्थानों को जाने के लिये बहुत-सी कच्ची-पक्की सड़कें हैं। यह

स्थान व्यापार का केंद्र है। जब १७८० ई० में रामगढ़ जिला कायम किया गया था तो शेरघाटी और चतरा, ये दोनों स्थान बारी-बारी से जिले के सदर आफिस रहते थे। यह प्रबंध १८३४ ई० तक रहा। उस साल जब हजारीबाग एक अलग जिला कायम किया गया तो इस जिले का सदर दफ्तर हजारीबाग हुआ। चतरा में अब केवल मुन्सिफी कचहरी रहने लगी। १९१४ में आकर यहाँ सबडिविजनल आफिस कायम किया गया। पीछे शहर के प्रबन्ध के लिये म्युनिसिपैलिटी भी कायम हुई। १८५७ के सिपाही-विद्रोह में जब हजारीबाग और राँची के सैनिक चतरा होकर कुँवरसिंह से मिलने भोजपुर की ओर बढ़े थे तो चतरा में अँगरेजों के साथ उनकी मुठभेड़ हुई थी। वहाँ डेढ़ सौ सिपाही मारे गये थे, और कुछ अँगरेज भी मरे थे। वहाँ मरे हुए अँगरेजों की कब्र अब भी मौजूद है, पर उन देशभक्त सिपाहियों की यादगारी में कुछ नहीं है।

इटखोरी—चतरा से एक सड़क इटखोरी होकर चौपारन में ग्रैण्ड-ट्रंक-रोड से मिल गयी है। १७७० ई० के पहले यहां छै राज्य के राजे रहते थे। उनके महल का भग्नावशेष अब भी दिखलायी पड़ता है। इस गाँव से एक मील पच्छिम मोहानी (मोहिनी) नदी के किनारे जंगल के बीच कुछ पुराने मकानों के खँडहर हैं जहाँ दो टूटे-फूटे मंदिरों में कुछ काले पत्थर की मूर्त्तियाँ हैं। इटखोरी में थाने का सदर आफिस भी है।

कुंडा—यह स्थान चतरा से पच्छिम है, जहां एक पुराने खा.दान के जमींदार हैं। कुंडा राज्य औरंगजेब के समय में रामसिंह नामक एक व्यक्ति द्वारा कायम हुआ था।

कुलुआपहाड़ी—यह पहाड़ी हंटरगंज से ६ मील दक्खिन-पच्छिम है। इसकी ऊँचाई १,५७५ फीट है। यहाँ कुछ टूटे-फूटे
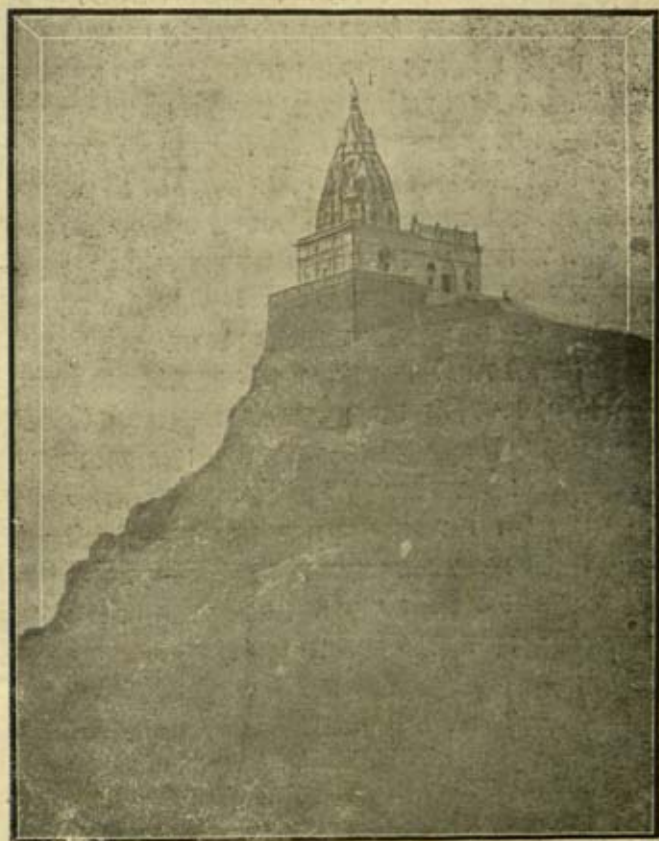
पार्श्वनाथ का मंदिर, पार्श्वनाथ पहाड़ी (हजारीबाग)

कोल्हुआ पहाड़ी में जैनमूर्त्तियाँ (हजारीबाग)

मंदिर तथा दूसरे मकान हैं। इस स्थान को यहाँ के हिन्दू तीर्थ-स्थान मानते हैं। कुछ लोग समझते हैं कि ये मंदिर और मकान जैनियों के बनवाये हुए हैं, क्योंकि यह जैनियों के दसवें तीर्थंकर शीतल स्वामी का जन्मस्थान है। कहते हैं कि पहले जैन लोग यहाँ तीर्थ के लिये आते थे। लेकिन, अब उनका यहाँ आना नहीं होता। बहुत-से स्थानीय हिन्दू इस स्थान का संबंध पाण्डव भाइयों से बताते हैं।

कुँदी—यह स्थान चतरा थाने में है। यहाँ एक पुराने खान-दान के जमींदार रहते हैं। १७०० ई० में मुसलमानों ने चढ़ाई कर कुँदी राज्य की स्वतंत्रता छीन ली थी। तब से यह एक जमींदारी की तरह रह गया है।

गिद्धौर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

चौपारन—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

छै—यह स्थान चौपारन के पास यहाँ से चतरा जानेवाली सड़क पर है। यहाँ पुराने समय में एक राजा का निवासस्थान था। छै राज्य १७७० ई० के लगभग रामगढ़ राज्य में मिला लिया गया। उस समय यह पाँच हिस्सों में बँटा हुआ था।

प्रतापपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

लोवालौंग—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सिमरिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

हंटरगंज—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

पलामू जिला

डाल्टनगंज (सदर) सबडिविजन

डाल्टनगंज—यह शहर जिले का सदर आफिस है जो २४°२' उत्तरीय अक्षांश और ८४°४' पुर्वीय देशान्तर पर कोयल नदी के किनारे बसा है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या १२,०४० है, जिसमें ६,४६१ हिन्दू, २,२६६ मुसलमान, १४० ईसाई, ४८ आदिम जाति, ६ जैन और ३ सिक्ख हैं। इस शहर को १६८१ ई० में छोटानागपुर के कमिश्नर कर्नल डाल्टन ने बसाया था, इसी कारण इसका नाम डाल्टनगंज पड़ा। लोग इसका अपभ्रंश नाम लालटेनगंज भी कहते हैं। शहर के सामने कोयल नदी के दूसरे किनारे पर शाहपुर एक गाँव है जहाँ पलामू के राजा गोपालराय ने १८ वीं सदी के अन्त में एक महल बनवाया था। वह टूटे-फूटे रूप में अब भी देखने में आता है।

अली नगर—जिले के उत्तर-पूरब कोने में यह गाँव हुसैनाबाद से ५ मील पूरब है। यहाँ एक छोटा-सा किला है। लोग इसे रोहिल्ला किला कहते हैं और इसे मुसफ्फीखाँ का बनाया बताते हैं, जिसका वास्तविक नाम मुजफ्फरखाँ समझा जाता है। यह कौन था, पता नहीं। किला एक छोटी पहाड़ी के ऊपर आयताकार में है। हरेक कोने पर एक वर्गाकार कमरा है। किले की दीवाल पत्थर और ईंट की बनी है। आँगन में एक

वर्गाकार कुआँ पहाड़ी की पूरबी ढाल पर है जिसके नीचे एक सुरंग गयी है। किला अब टूटी-फूटी हालत में है।

उन्तरी—यह स्थान जिले के उत्तर-पच्छिम भाग में है। यहाँ थाना, डाकबँगला, अस्पताल और एक पुराने घराने के जमींदार का गढ़ है। यह घराना भैया साहब घराने के नाम से प्रसिद्ध है और सोनपुरा के सूर्य्यवंशी राजपूत घराने की एक शाखा है। कहते हैं कि सोनपुरा के ४४ वें राजा को बड़ी स्त्री की संतान यहाँ आ बसी थी। उनके लड़के को बेलौंजा में स्टेट मिला था और भैया की पदवी दी गयी थी। भैया खानदान के तीसरे व्यक्ति ने १७ वीं सदी में मुगल बादशाह के हुक्म पर उन्तरी को जीतकर उसे बादशाह से जागीर के तौर पर लिया था। बृटिश सरकार ने भी करीब सौ वर्ष पहले इस जागीर को कबूल किया था। इस स्थान का पूरा नाम नागरी उन्तरी है।

कनरी—सोनपुरा से ३ मील दक्षिण-पच्छिम यह एक गाँव है, जहाँ अस्पताल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बंगलो है।

कुटकु—इस स्थान पर कोयल नदी उत्तर की ओर मुड़ जाती है और पहाड़ी होकर अपना रास्ता बनाती है। यहाँ का दृश्य बहुत सुन्दर है। यहाँ एक फॉरेस्ट बंगलो है।

गढ़वा—यह एक शहर है जो डाल्टनगंज से १६ मील उत्तर-पच्छिम और गढ़वा-रोड स्टेशन से ६ मील पच्छिम है। यह दनरो और सरस्वती, इन दो नदियों के किनारे बसा है। यहाँ से कई सड़कें भिन्न-भिन्न दिशाओं को गयी हैं। यह व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। यहाँ थाना, अस्पताल, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बंगलो और एक हाई स्कूल है। यहाँ पहले म्युनिसिपैलिटी और आनरेरी मजिस्ट्रेट की कचहरी थी। इस समय एक यूनियन बोर्ड है। सन् १६३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या

२१,६८५ है, जो करीब डाल्टनगंज की संख्या के बराबर ही है। यहाँ १०,०२३ हिन्दू, १,६२८ मुसलमान और ३४ आदिम जाति के लोग हैं।

चैनपुर—यह गाँव डाल्टनगंज से २ मील दक्षिण-पश्चिम है। यहाँ एक पुराने किले का भग्नावशेष है। यहाँ चेरो राजाओं के दीवान के वंशज रहते हैं। यह घराना अब भी प्रसिद्ध और प्रभावशाली है। इस घराने के लोग ठाकुराय कहलाते हैं। ये लोग राजा दुःशासन सिंह को अपना पूर्वज बताते हैं, जो दिल्ली से ३०० मील दक्षिण-पश्चिम सुरपुर नामक स्थान में रहते थे। उनके लड़के शार्ङ्गधर सिंह रोहतासगढ़ के एक रक्षक बनाये गये थे और उन्हें मुगल बादशाह की ओर से दाउदाँड़ और तिलौथू तालुके जागीर के रूप में मिले थे। दाउदाँड़ में उन्होंने अपने लिये किला बनवाया था। उसके उत्तराधिकारी मक्खन सिंह उर्फ देवसाही हुए, जिन्होंने चेरो राजा भागवतराय को शाही सेना से हार खाकर भागने पर शरण दी थी। देवसाही के लड़के ठाकुराय पूरनमल ने भागवतराय को पलामू जीतने में मदद दी। अँगरेजी राज्य के आरम्भ तक पूरनमल के वंशज पलामू राज्य के दीवान रहे। इस वंश के लोगों के पास आलमगीर मुहम्मदशाह और फरुकशियर, इन तीन बादशाहों के द्वारा जागीर दिये जाने के फरमान अब भी मौजूद हैं। इस वंश में ठाकुराय अमर सिंह एक नामी आदमी हुए, जिन्होंने १७२१ ई० में चेरो राजा रणजीतराय को हटाकर जयकिसुन राय को गद्दी पर बैठाया था। अमर सिंह ने पिंडारियों से एक नक्कारा छीना था, जो अब भी इनके वंशजों के पास है। इनके मरने पर फूट पैदा हो गयी। राजा ने ठाकुराय सैनाथ सिंह को धोखेबाजी से मरवा डाला। इसपर उनके चचेरे भाई

जयनाथ सिंह ने सेना इकट्ठी की और जयकिसुनराय को मारकर १७६४ ई० में चित्रजितराय को गद्दी पर बैठाया। जब से अँगरेजों ने पलामू को जीता तब से इस वंश के लोगों का दीवानी का पद जाता रहा, पर ये लोग अँगरेजों के बड़े खैरख्वाह रहे। १८०२ ई० की सरगुजा की चढ़ाई, १८३२ के कोल-विद्रोह और १८५७ के सिपाही-विद्रोह में इन लोगों ने अँगरेजों की बड़ी मदद की और इनाम में जागीर और खिताब भी पाया। चैनपुर स्टेट का रकबा ३६५ वर्गमील है।

छत्तरपुर—डाल्टनगंज से २८ मील उत्तर इस स्थान में थाने का सदर आफिस है।

जयपुर—पाटन थाने से ६ मील पूरब इस गाँव में देवगाँव स्टेट के मालिक का गढ़ या महल है।

जपला—जिले के उत्तरी सीमा के पास हुसैनाबाद एक स्थान है, उसीका पुराना नाम जपला है। परगने का नाम जपला अब भी चल रहा है। एक शिला-लेख से मालूम होता है कि यहाँ पहले खरवार सरदारों की राजधानी थी। शाहजहाँ के वक्त में जपला परगना रोहतासगढ़ के रक्षक के अधिकार में था। आईन-ए-अकबरी में भी इसका जिक्र है। सन् १८७१ में यह परगना गया जिले से पलामू में मिलाया गया।

देवगन—यह स्थान जिले के उत्तर-पूरब भाग में है। यहाँ चेरो राजा के एक पुराने किले का भग्नावशेष है। कहते हैं कि किसी समय यह स्थान एक उन्नतिशील शहर था, जिसमें ५२ सड़क और ५३ बाजार थे। इस नाम का तप्पा और स्टेट भी है जो ३२७ वर्गमील में फैला हुआ है। यह स्टेट पहले किसी एक भारतराय और उसके अधिकारियों के हाथ में था, पीछे यह पलामू के महाराजा जयकिसुनराय के भतीजे को भरण-पोषण के लिये

दिया गया। उन्हीं से यह वर्तमान अधिकारियों के हाथ में आया।

नागर उन्तरी—दे० उन्तरी।

पनकी—यह स्थान डाल्टनगंज से २८ मील पूरब अमानत नदी के किनारे है। यहाँ थाना, अस्पताल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बंगलो हैं।

पाटन—डाल्टनगंज से १५ मील उत्तर-पूरब इस स्थान पर थाने का सदर आफिस है।

बिश्रामपुर—यह स्थान गढ़वा-रोड स्टेशन से ५ मील की दूरी पर है। यहाँ एक बबुआन परिवार का गढ़ है। इस वंश के संस्थापक नृपतराय कहे जाते हैं जो पलामू के राजा जयकिसुनराय (१७५० ई०) के भाई थे। नृपतराय के लड़के गजराजराय ने १७७२ ई० में पलामू किला को जीतने में अँगरेजों को मदद दी थी।

भंडरिया—जिले के दक्षिण-पच्छिम भाग में यहाँ थाने का सदर आफिस है।

भवनाथपुर—जिले के उत्तर-पच्छिम भाग में इस स्थान में थाने का सदर आफिस है।

मनातू—यह स्थान डाल्टनगंज से ३६ मील उत्तर-पूरब है जहाँ थाना, अस्पताल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बंगलो हैं। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार का एक गढ़ है।

रझरा—डाल्टनगंज से १० मील उत्तर इस स्थान पर सन् १८४७ में कोयले की खान खोदी गयी थी, पर अब यह खान बन्द है।

राँका—यह स्थान गढ़वा से १४ मील दक्षिण है। यहाँ थाना, अस्पताल, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बंगलो और राँका स्टेट के मालिक का गढ़ है।

लादी—डाल्टनगंज थाने के इस गाँव में एक पुराने जमींदार का निवास-स्थान है।

लेस्लीगंज—यह स्थान डाल्टनगंज से १० मील पूरब है। इसका नाम रामगढ़ के कलक्टर के नाम पर पड़ा था। पहले यहाँ सेना की छावनी थी, इस कारण अब भी स्थानीय लोग इसको छावनी कहते हैं। १८५६ ई० में पलामू सबडिविजन का आफिस कोरंडा से हटकर लेस्लीगंज ही लाया गया था, पर १८६२ ई० में डाल्टनगंज ले जाया गया। यहाँ थाना, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बंगलो और सरकारी महाल का तहसील आफिस है।

शाहपुर—दे० डाल्टनगंज।

सतबरवा—डाल्टनगंज से १७ मील की दूरी पर राँची रोड के किनारे यह एक गाँव है जहाँ कुछ पुराने मंदिरों के भग्नावशेष हैं।

सोनपुरा—सोन नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ सोनपुरा स्टेट के मालिक का गढ़ है। कहते हैं कि इस वंश के संस्थापक गोरखपुर जिलावासी राजा नरनारायण थे। इस वंश के नवें राजा रामनारायण शाहाबाद जिले आये। १८वीं सदी के आरम्भ में किंडरसाही ने, जो इस वंश की ५० वीं पीढ़ी के व्यक्ति थे, दिल्ली के बादशाह से जपला और बेलौंजा, ये दो परगने प्राप्त किये और सोनपुरा को निवास-स्थान बनाया। १८०१ ई० में जब अँगरेजी सेना सरगुजा को गयी थी तो सोनपुरा के राजा भूपनाथसाही ने अँगरेजों की मदद की थी। इस वंश के लोगों के पास कई मुगल बादशाहों और पुराने गवर्नर जेनरलों के वक्त के कागजात मौजूद हैं।

हरिहरगंज—यह स्थान डाल्टनगंज से ४२ मील उत्तर है जहाँ थाने का सदर आफिस है।

हुतार—यह स्थान कोयले की खान के लिये प्रसिद्ध है।

हैदर नगर—जिले के उत्तर-पूरब भाग में यह गाँव इस नाम के रेलवे स्टेशन के पास है। इसे १८ वीं सदी में सैयद नबी अली खाँ ने बसाया था। इसका पिता हेदायत अली खाँ बिहार का नायब नवाब था।

हुसैनाबाद—यह स्थान जिले के उत्तर-पूरब कोने पर सोन नदी के किनारे है। यहाँ थाने का सदर आफिस है। इस गाँव को शेर-उल-मुताखरीन के लेखक के पिता बिहार के नायब नवाब सैयद हेदायत अली खाँ ने १८ वीं सदी के आरम्भ में बसाया था। इनके वंशज अब भी यहाँ रहते हैं। यह एक पुराना गाँव जपला दिनारा के स्थान पर बसा है। रेलवे स्टेशन का नाम अब भी जपला है। हुसैनाबाद से ३ मील की दूरी पर सोन के किनारे डेहरी में जपला सिमेन्ट वर्क्स है।

लतेहर सबडिविजन

लतेहर—यह स्थान डाल्टनगंज से ४१ मील की दूरी पर राँची-रोड पर है। सन् १६२४ से यहाँ सबडिविजनल आफिस खुला है। यहाँ अस्पताल, डिस्ट्रिक्टबोर्ड बंगलो और सरकारी स्टेट का तहसील आफिस है।

कुमान्डीह—लतेहर से १२ मील पच्छिम यह एक पहाड़ी है जो २,५३० फीट ऊँची है।

केचकी—यह औरंगा और कोयल नदी के संगम पर है। यहाँ से अधिकतर बाँस कोयल नदी होकर बहा ले जाया जाता है।
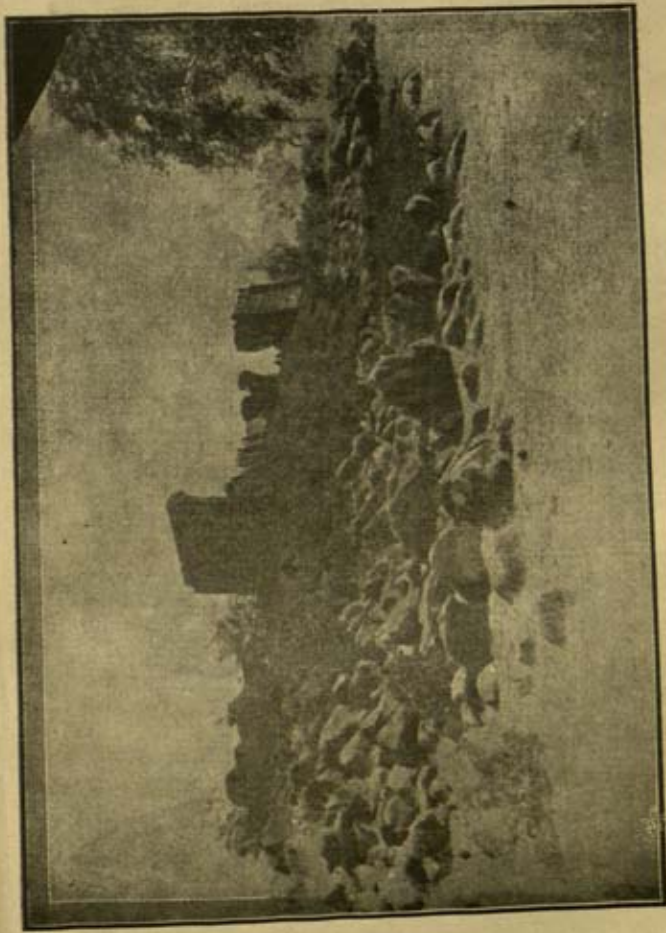
अली नगर के किले का भग्नावशेष (पलामू)
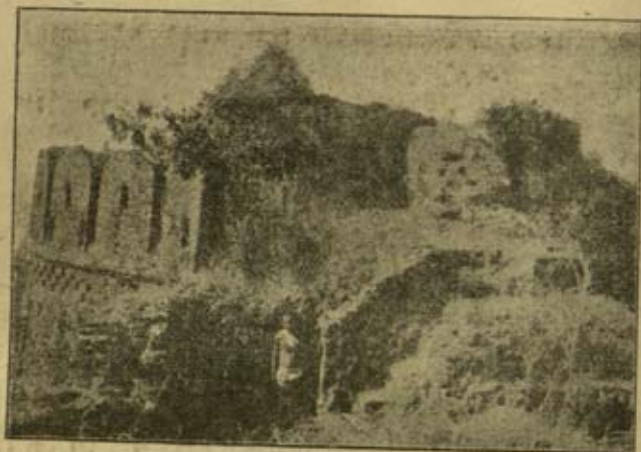
पलामू का नया किला

पलामू के पुराने किले की मस्जिद

केर्ह—यह स्थान बरवाडीह थाने में है। पहले केर्ह में ही थाने का सदर आफिस था।

गरू—यह स्थान केर्ह से १६ मील दक्षिण कोयल नदी के किनारे है, जहाँ थाने का सदर आफिस है।

चन्दवा—डाल्टनगंज से ५७ मील दूर राँची-रोड पर इस स्थान में थाने का सदर आफिस है।

तामोलगढ़—जिले के बिल्कुल दक्षिण भाग में छेछरी तप्पे के अन्दर एक पहाड़ी है, जिसके ऊपर तामोलगढ़ का किला है, जो रक्सेल राजपूत का बनवाया हुआ है।

नारायणपुर—मनकेरी तप्पे में यह एक गाँव है, जहाँ एक पुराना किला है।

नेटारहाट—जिले के दक्षिण में यह एक अधित्यका है, जिसकी सबसे ऊँची चोटी समुद्रतल से ३,६९६ फीट ऊँची है। यह अधित्यका ४ मील लम्बी और २½ मील चौड़ी है। इसका दृश्य बहुत सुन्दर है। यहाँ इस नाम के गाँव में अस्पताल, सरकारी बंगलो और डिस्ट्रिक्टबोर्ड बंगलो हैं। यहाँ कई बार थाना भी रह चुका है।

पलामू—डाल्टनगंज से १५ मील दक्षिण-पूरब औरंगा नदी के किनारे यह एक गाँव है। यहाँ किसी समय चेरो राजाओं की राजधानी थी। यहाँ दो बड़े किले के भग्नावशेष हैं, जिन्हें चेरो राजाओं ने बनवाया था। इन किलों को पहले मुगलों ने और पीछे अंग्रेजों ने जीतकर चेरो लोगों को दबाया था। इनमें से एक किले को पुराना किला और दूसरे को नया किला कहते हैं। चेरो राजाओं की इसी राजधानी नगरी के नाम पर पीछे जिले का नाम पलामू पड़ा। ऐतिहासिकों और पुरातत्त्व-प्रेमियों के लिये यह स्थान जिले के अन्दर सबसे आकर्षक स्थान है।

पलामू के दोनों किले सरकार के रिजर्व्ड फारेस्ट के अन्दर हैं। किले को सुरक्षित रखने के लिये पास के जंगल-झाड़ों को समय-समय पर काटते रहना पड़ता है, तब भी बाघ, चीते आदि जंगली जानवर यहाँ, खासकर पुराने किले के पास, अक्सर आया ही करते हैं। पुराने किले की दीवालों पर अनेक स्थानों में तोप के गोलों के निशान हैं। नये किले में नागपुरी फाटक बहुत सुन्दर है। कहते हैं कि पलामू के सबसे शक्तिशाली राजा मेदिनीराय ने बहुत व्यय करके छोटानागपुर के महाराज का महल विध्वंस करने के बाद इस फाटक को वहाँ से यहाँ लाया था। लेकिन, जिस तरफ यह फाटक लगाया गया वह बहुत अशुभ समझा जाने के कारण पीछे ईंट से बन्द करवा दिया गया; पर अब इसे सुरक्षित रखने के लिये खुलवा दिया गया है।

सन् १९०३-०४ की आरक्योलॉजिकल रिपोर्ट (पुरातत्त्व-सम्बन्धी विवरण) में लिखा है कि पलामु के दोनों किले जंगल के अन्दर पास ही पास हैं। यद्यपि इनमें एक को पुराना किला और दूसरे को नया किला कहते हैं, पर देखने में दोनों एक ही समय के मालूम पड़ते हैं। किले की दीवाल और मकान की बनावट रोहतासगढ़ और शेरगढ़ की दीवाल और मकान की बनावट से इतनी अधिक मिलती-जुलती है कि यह आसानी से कहा जा सकता है कि दोनों एक ही समय के अर्थात् मुगलकाल के आरम्भ के बने हुए हैं। पुराना किला आयताकार है और उसका घेरा एक मील है। किला क्रमशः ऊँचे बने हुए टील्हे पर कायम है। किले की ऊँची जगह और नीची जगह के बीच एक दीवाल है जिसके बीच में एक फाटक है। उसके सामने एक कुआँ है जिसके नीचे एक सुरंग गयी है। किले की दीवाल पत्थर की बनी है जो कहीं-कहीं ८ फीट तक मोटी है। किले के

चारों फाटक बड़े मजबूत और सुरक्षित हैं और हरेक के ऊपर निगरानी के लिये बुर्ज हैं। किले के भीतर चार दो मंजिले महल और एक मस्जिद के भग्नावशेष हैं। मकानों की दीवालें प्लास्तर की हुई हैं। उन पर जहाँ-तहाँ चित्रकारी अब भी नजर आती है। यहाँ बौद्ध और हिन्दू मूर्त्तियाँ भी मिली थीं, पर कहीं मन्दिर का पता नहीं चला है।

नया किला एक त्रिभुजाकार पहाड़ी की ढाल पर बना है। यहाँ वर्गाकार में बनी हुई किले की दोहरी दीवालें हैं। भीतरी दीवाल पहाड़ी की चोटी को घेरती है और बाहरी दीवाल उससे कुछ नीचे है। यहाँ की दीवालें वैसी ही हैं जैसी कि पुराने किले की दीवालें। बाहरी दीवाल अधिक मोटी है, १८ फीट मोटी। किले के भीतर कोई अलग मकान नहीं है। किले की दीवाल से लगे ही कुछ मकान हैं जो कहीं-कहीं कई मंजिले भी हैं। यहाँ की सबसे आकर्षक वस्तु पत्थर को खोद कर बनायी गयी १५ फीट की ऊँची खिड़की है। रोहतासगढ़ या शेरगढ़ में ऐसी कोई चीज नहीं है। ऐसी एक और टूटी-फूटी खिड़की पास में भी पड़ी है। दोनों किले सरकार द्वारा संरक्षित हैं।

बरवाडीह—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बरेसाँड़—बरेसाँड़ तप्पा में बरेसाँड़ एक गाँव है। यहाँ एक फारेस्ट बँगलो है। पहले यहाँ थाने का सदर आफिस था।

बालूमठ—जिले के दक्षिण-पूरब भाग में इस स्थान में थाने का सदर आफिस है।

मनका—डाल्टनगंज से २४ मील पर राँची-रोड के किनारे यह एक गाँव है जहाँ एक चेरो जमींदार रहते हैं।

महुआदाँड़—जिले के बिलकुल दक्षिण भाग में इस गाँव में

थाना, अस्पताल, डिस्ट्रिक्टबोर्ड बँगलो, और रोमन कैथोलिक मिशन है।

रूद—जिले के दक्षिण इस गाँव में एक फॉरेस्ट बँगलो है।

लादी—यह गाँव डाल्टनगंज से ४ मील दक्षिण-पश्चिम है। यहाँ एक राजपूत जमींदार का गढ़ है। ये लोग अपने को गोरख-पुर जिले के मझौलिया राज-परिवार की एक शाखा बताते हैं। ये लोग १८ वीं सदी के मध्य में पलामू जिले में आये थे।

हरहंज—बालूमठ थाने के इस गाँव में घटवाली बँगलो है।

मानभूम जिला

पुरुलिया (सदर) सबडिविजन

पुरुलिया—जिले का प्रधान शहर पुरुलिया २३°२०' उत्तरीय अक्षांश और ८६°२२' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ १८३८ ई० से जिले का सदर आफिस है। म्युनिसिपैलिटी १८६९ ई० में कायम हुई थी। यहाँ बी० एन० आर० का स्टेशन है। यहाँ से एक छोटी लाइन राँची गयी है। यहाँ से कई सड़कें भिन्न-भिन्न दिशाओं को गयी हैं। रेलवे लाइन बनने के पहले बंगाल के लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिये यहीं आते थे। यहाँ साहब-बाँध नाम का एक बड़ा जलाशय है। यहाँ दो हाई स्कूल और दो कुष्टाश्रम चल रहे हैं। बड़ा कुष्टाश्रम ईसाई लोगों का है। यहाँ तेल की कई मिल और लाह की कई फैक्टरियाँ हैं। सन १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या २५,९७४ है, जिसमें २२,१२८ हिन्दू, २,९६४ मुसलमान, ८७६ ईसाई और ३ आदिम जाति के लोग हैं।

अरसा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

आद्रा—यहाँ बंगाल-नागपुर रेलवे का बड़ा जंकशन है। यहाँ इस रेलवे का एक कारखाना और इसके अफसरों के रहने की कोठियाँ हैं।

ईचागढ़—ईचागढ़ में पातकुम राज्य के राजा रहते हैं। यहाँ थाने का सदर आफिस भी है।

काशीपुर—यहाँ पंचेट (पंचकोट) के जमींदार रहते हैं। यहाँ थाने का सदर आफिस है।

केशरगढ़—यह कसाई नदी के किनारे है। यहाँ पहले पंचकोट राज्य की राजधानी थी। यहाँ कई पुराने मन्दिर हैं। यह लाह और हर्रे के लिये प्रसिद्ध है।

गोलमारा—पुरुलिया से ८ मील उत्तर गोलमारा नामक स्थान में कुछ प्राचीन मूर्त्तियाँ मिली हैं, जिनमें एक बड़ी मूर्त्ति जैन मूर्त्ति है। यह यहाँ से हटाकर पटना म्यूजियम में रखी गयी है।

चंडिल—जिले के दक्षिण इस स्थान पर बी० एन० आर० का जंकशन है। यहाँ थाने का सदर आफिस भी है।

चन्दनक्यारी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

चर्रा—पुरुलिया से ४ मील उत्तर-पूरब इस गाँव में कई पुराने पत्थर के मन्दिर हैं। इनमें हिन्दू-मन्दिर के अलावे बौद्ध और जैन मन्दिर भी हैं। यहाँ बौद्ध और जैन मूर्त्तियाँ भी मिलती हैं।

चाकलतर—पुरुलिया से ७ मील दक्षिण इस गाँव में पहले पंचकोट राज्य की राजधानी थी। इस राजवंश के कुछ लोग अब भी यहाँ रहते हैं। पुराने महल और मन्दिर के भग्नावशेष इस समय भी देखने में आते हैं। यहाँ भादो पूर्णिमा के अवसर पर ७ दिन तक एक बड़ा मेला लगता है।

चास—यह स्थान व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ थाने का सदर आफिस भी है।

जयपुर—यहाँ थाना आफिस और रेलवे स्टेशन है।

झालदा—जिले की पच्छिमी सीमा के पास राँची जानेवाली रेलवे लाइन पर यह एक शहर है, जहाँ थाने का सदर आफिस

है। १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या ६,९२४ है। यहाँ १८८८ ई० में म्युनिसिपैलिटी कायम हुई थी। यहाँ लाह की बहुत-सी फैक्टरियाँ हैं। बन्दूक, तलवार वगैरह चीजें भी यहाँ बनती हैं। यहाँ कई औद्योगिक स्कूल हैं। झालदा में एक पुराने जमींदार का निवासस्थान है। कहते हैं कि पंचकोट राज्य की सबसे पुरानी राजधानी यहीं थी।

तेलकुप्पी—यह स्थान दामोदर नदी के दक्षिण चेलियामा परगने के अन्दर है। यहाँ बहुत-से टूटे-फूटे पुराने मंदिर और बहुत-से पत्थर या ईंट के टील्हे हैं जो मंदिरों के टूटने से बने हुए मालूम पड़ते हैं। प्रायः सभी हिन्दू मंदिर हैं। इनमें सबसे पुराना १० वीं सदी का मालूम पड़ता है। कहते हैं कि राजा मानसिंह ने यहाँ के कुछ मंदिरों की मरम्मत करायी थी। दन्त-कथा है कि राजा विक्रमादित्य जब यहाँ आये थे, तो यहीं तेल लगाकर दालमी के पोखर में स्नान किया करते थे, जिससे इस स्थान का नाम तेलकुप्पी पड़ा। यहाँ चैत और पूस में मेला लगता है।

दालमा—जिले के अन्दर सबसे ऊँचा पहाड़ दालमा है। इसकी ऊँचाई समुद्रतल से ३,४०७ फीट है।

दालमी या दियापुर दालमी—सुवर्णरेखा नदी के उत्तर किनारे पर इस स्थान में पुराने जमाने में एक बड़ा नगर बसा हुआ था। कई मीलों तक मकानों और मंदिरों के भग्नावशेष मालूम पड़ते हैं। यहाँ बहुत-सी मूर्त्तियाँ भी मिली हैं। यहाँ के मंदिरों और मूर्त्तियों में कुछ तो बौद्धों और जैनों की और कुछ ब्राह्मण धर्मावलम्बी हिन्दुओं की जान पड़ती हैं।

यहाँ आदित्य देव की मूर्त्ति पर एक लेख है जो दसवीं सदी का जान पड़ता है। मि० बेगलर का कहना है कि यहाँ ९ वीं और

१० वीं शताब्दी में जैनियों की प्रधानता थी। इसके बाद ११ वीं सदी में हिन्दू धर्मावलम्बियों की प्रधानता रही। यहाँ एक किले का भग्नावशेष है जो विक्रमादित्य का किला कहा जाता है। यहाँ एक पोखर है जिसका नाम छाता-पोखर है। यहाँ दो स्तम्भों पर छाते के आकार का पत्थर है, जिससे इसका नाम छातापोखर पड़ा। कहते हैं कि इसके नीचे राजा विक्रमादित्य स्नान करके पूजा किया करते थे। यहाँ भूमिजों के बहुत-से पुराने समाधि-स्थान हैं। दालमी से ६ मील की दूरी पर पाटकुम के वर्तमान जमींदार अपने को विक्रमादित्य के वंशज बताते हैं। इस समय दालमी में पत्थर के बर्तन बनने के कारण इस स्थान की प्रसिद्धि है।

दालमी से कुछ मील उत्तर-पच्छिम सफारन नामक स्थान है। बेगलर का कहना है कि य्वनच्वाङ् द्वारा वर्णित किरण सुफालाना स्थान यही है जहाँ बंगाल के राजा शशांक की राजधानी थी। सफारन में बहुत-से टील्हे हैं। इसके पास देवली और सुइसा में जैनियों की बहुत-सी पुरानी चीजें मिलती हैं। सुइसा में भूमिजों का एक बहुत बड़ा समाधि-स्थान भी है।

निठुरिया—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

पंचा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

पंचेट या पंचकोट—यह एक पहाड़ी है जो ३ मील लम्बी और समुद्रतल से १६०० फीट ऊँची है। यहाँ एक पुराना किला है जहाँ पहले पंचेट के राजा रहते थे। पंचेट शब्द पंचकोट से बिगड़कर बना है, जिसका अर्थ है पाँच कोट (घेरा) वाला किला। किले के हरेक घेरे के बाद खाई थी जो पहाड़ी जल से भरी रहती थी। इसके चिह्न अब भी देखने में आते हैं। किले के कई द्वार थे जिनमें चार के चिह्न अब भी देखने में आते हैं।

तेलकुप्पी के मंदिर का भग्नावशेष (मानभूम)
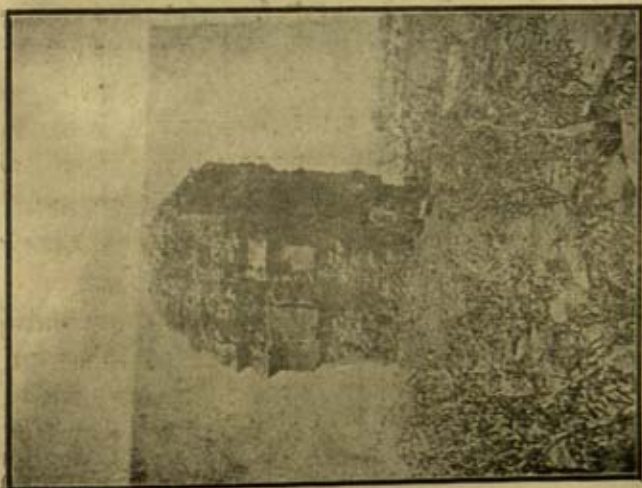
दालमी के मंदिर का भग्नावशेष (मानभूम)
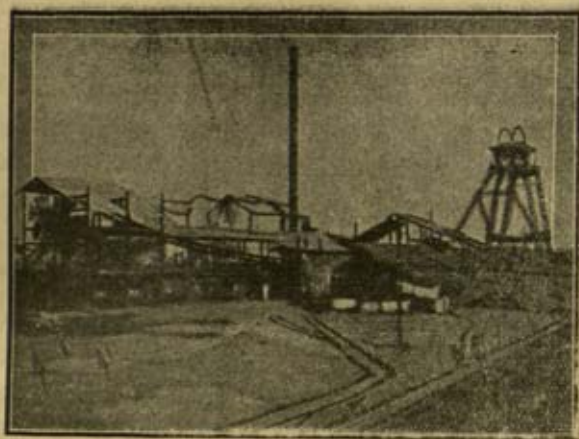
कोयले की खान का ऊपरी दृश्य. झरिया (मानभूम)

खान के अन्दर कोयला काटने की मशीन, झरिया

इनके अलग-अलग नाम हैं, जैसे आँख द्वार, बाजार महल द्वार या देश बाँध द्वार, खोरीवारी द्वार और द्वार बाँध। द्वार बाँध सबसे अच्छी हालत में है। ये द्वार मुसलमानी ढंग पर बने थे और सब लगभग एक ही से थे। ये द्वार लोगों के आने-जाने तथा पानी बहने के लिये थे।

किला बहुत बड़ा है, इसके आखिरी घेरावे की लम्बाई ५ मील है। लेकिन, लोग कहते हैं कि असल में आखिरी घेरावा इससे भी बड़ा था और वह पहाड़ी को छोड़कर १२ वर्गमील के रकबे को घेरता था। किले के अन्दर बहुत-से खँड़हर हैं जो राजा का महल रनिवास तथा दूसरे भवनों के चिह्न बताये जाते हैं। एक-दो मंदिर के भग्नावशेष अच्छी हालत में हैं। लेकिन, सभी मुसलमानी काल के बाद के मालूम पड़ते हैं। पहाड़ी के पास कुछ पुराने मंदिर हैं जिनमें सबसे बड़े को रघुवर मंदिर कहते हैं। राजा रघुवर वर्तमान जमींदार के आठ पीढ़ी पहले हुए बताये जाते हैं। ये करीब १५६० ई० से १६२६ ई० तक शासन करते रहे।

किले का समय इसके दो द्वार, द्वार-बाँध और खोरिबारी के लेख से निश्चित किया जाता है। इन द्वारों पर बँगला लिपि में श्री वीर हमीर का उल्लेख है और उसमें सम्वत् १६५० या १६५६ लिखा है। यह वीर हमीर बिसुनपुर राज का राजा समझा जाता है। इसने १५९० ई० में मानसिंह के उड़ीसा पर चढ़ाई करते समय उसकी बड़ी मदद की थी। यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि इस किले को वीर हमीर ने बनवाया था और पीछे पंचेट के राजा ने ले लिया। सम्भव है, पंचेट राजा ने ही वीर हमीर या मुसलमानों से रक्षा के लिये इसे बनवाया हो। यह किला क्यों छोड़ दिया गया, इसका ठीक पता नहीं चलता भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न तरह की बात बताते हैं।

पंचेट के बाद इस राज्य की राजधानी क्रम से चाकल्तर, केशरगढ़ और काशीपुर को गयी। वर्तमान राजा के पारिवारिक इतिहास के अनुसार इस राज्य के पहले राजा दामोदर शेखर-सिंह देव हुए जो ८० ई० में उज्जैन के बारहवें महाराव थे। कहते हैं, वर्तमान राजा उनके ६७ वीं पीढ़ी के हैं।

पतामदा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

पवनपुर—यह स्थान बराभूम परगने में है। यहाँ बहुत-से पुराने मकानों और मंदिरों के भग्नावशेष हैं जो बढ़कर भूलागाँव तक चले गये हैं। भूला गाँव में भूमिजों का एक बड़ा समाधि-स्थान भी है। कुछ लोग पवनपुर के भग्नावशेष का सम्बन्ध पाटकुम राजा के पूर्वज विक्रमादित्य से भी बताते हैं। दलमी और तेलकुप्पी के भग्नावशेषों से भी इस विक्रमादित्य का सम्बन्ध बताया जाता है। यहाँ दो फीट का एक छोटा मंदिर मिला है जिसके चारों ओर तीर्थंकरों की मूर्त्तियाँ हैं। मालूम पड़ता है कि दालमी तथा अन्य स्थानों की भाँति यहाँ पहले जैनियों और बौद्धों का प्रभाव था। पीछे ब्राह्मणों का प्रभाव हुआ। उन्हें दबा-कर अन्त में भूमिजों ने अपनी प्रधानता कायम की।

पाकबीरा—पुरुलिया से २५ मील दक्षिण-पूरब और मा से २ मील पूरब इस स्थान में बहुत-से पुराने मंदिर और मूर्त्तियाँ हैं। यहाँ ७½ फीट ऊँची एक मूर्त्ति है जिसे लोग बीरम कहते हैं। ऐतिहासिकों का कहना है कि यह जैन तीर्थंकर बीर की मूर्त्ति है। बेगलर ने खोदाई कर यहाँ पाँच बौद्ध मूर्त्तियाँ भी निकाली थीं। पास के खरकियागढ़, धदकी टाँड़ और तुइसामा गाँवों में भी पुराने मंदिर और मूर्त्तियाँ मिलती हैं।

पारा—यह स्थान बी० एन० आर० के खरगली और अनार स्टेशन से ४ मील की दूरी पर है, जहाँ थाने का सदर आफिस
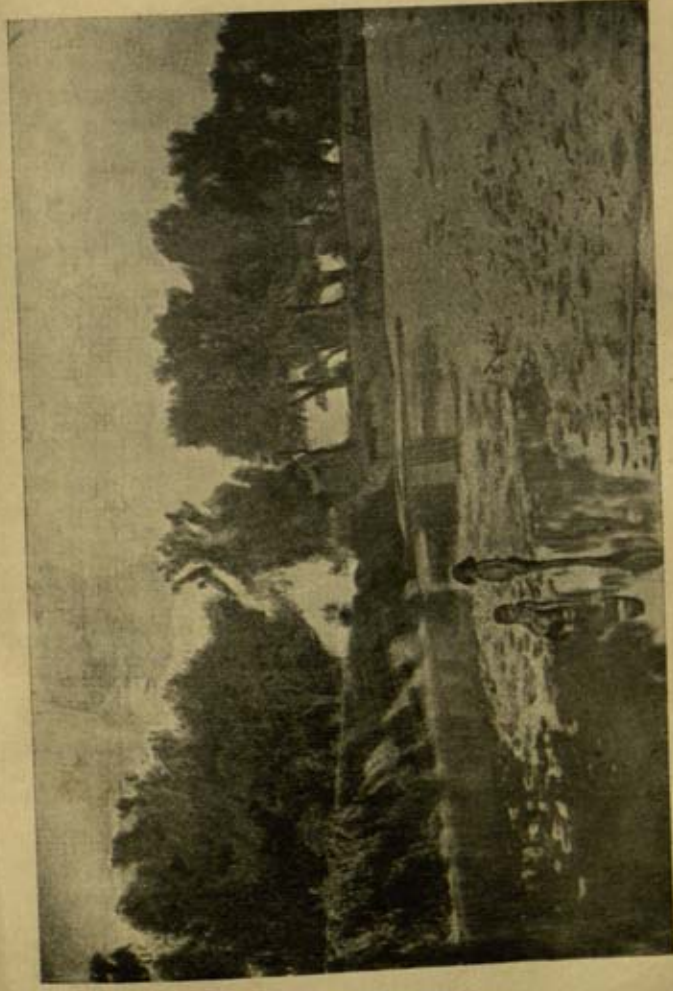
स्वर्णरेखा नदी का एक दृश्य (सिंहभूमि)
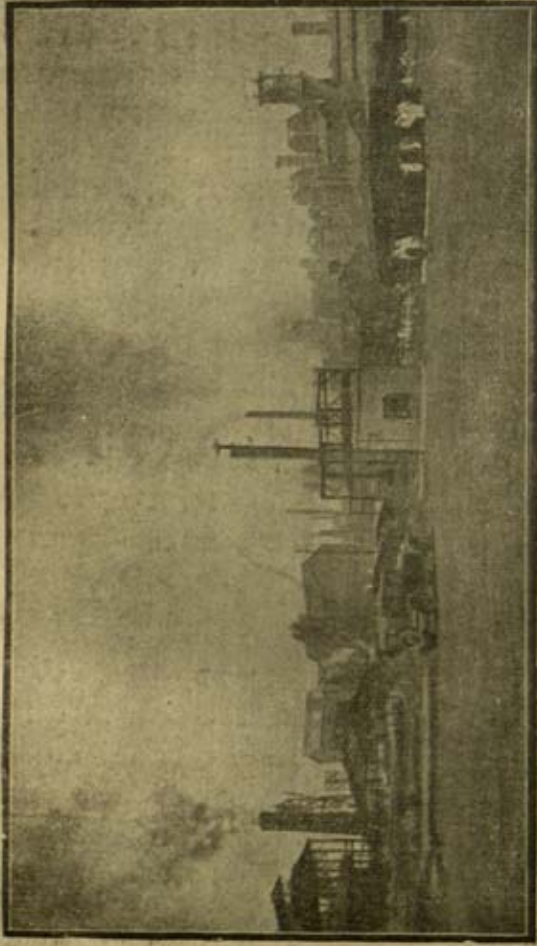
ताता कम्पनी के कारखाने का एक दृश्य, जमशेदपुर (सिंहभूम)

है। यहाँ बहुत-से पुराने मंदिरों के भग्नावशेष हैं। इनमें मुख्य गाँव के पूरब दो मंदिर हैं। कहते हैं कि राजा मानसिंह के समय इसकी मरम्मत हुई थी।

चंदुआन—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बड़ा बाजार—यह बी० एन० आर० के बराभूम रेलवे स्टेशन से १२ मील दक्षिण-पूरब है। यहाँ बराभूम परगने के जमींदार रहते हैं जो बहुत पुराने घराने के हैं। यहाँ अस्पताल और थाना-आफिस है। थाना बराहभूम के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ १८८० ई० से १८९८ ई० तक मुन्सिफी कचहरी थी। बराभूम बाराहभूम शब्द का अपभ्रंश है। भविष्य पुराण में इसका वर्णन आया है। इसमें लिखा है कि यह एक ओर तुंगभूम (बाँकुड़ा जिला) और दूसरी ओर शेखर पर्वत (पारसनाथ या पंचेट पहाड़ी) तक फैला हुआ था तथा इसके अन्दर बराभूम, सामन्तभूम (बाँकुड़ा में चातन थाना) और मानभूम सम्मिलित थे।

बराहभूम—दे० बड़ा बाजार।

बलरामपुर—यह स्थान पुरुलिया से ३ मील दक्षिण-पूरब कसाई नदी के किनारे है। यहाँ पुराने मकानों और मंदिरों के भग्नावशेष हैं। यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बाघमुंडी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बुधपुर—यह स्थान मानबाजार से ४ मील उत्तर कसाई नदी के उत्तरी किनारे पर है। यहाँ बहुत-से पुराने मंदिर हैं, जिनमें सबसे बड़ा अब भी अच्छी हालत में है। यहाँ बहुत-सी बौद्ध और जैन मूर्त्तियाँ भी पायी गयी थीं।

बोरम—राँची लाइन के जयपुर स्टेशन से यह स्थान ४ मील दक्षिण कसाई नदी के किनारे है। यहाँ बहुत-से टूटे-फूटे पुराने मंदिर और मूर्त्तियाँ हैं।

मान बाजार—जिले की पूर्वी सीमा के पास यह स्थान पुरुलिया से २८ मील की दूरी पर है। यहाँ एक पुराने घराने के जमींदार का निवास-स्थान है जिन्हें लोग मानभूम का राजा कहते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि इसी स्थान के नाम पर जिले का नाम पड़ा। १८३३ से १८३८ ई० तक इस जिले पर (उस समय जंगल महाल-जिला का) सदर आफिस यहीं था। मुन्सिफ की कचहरी यहाँ १८७९ ई० तक रही। इस समय यहाँ थाना-आफिस है।

रघुनाथपुर—यह एक छोटा शहर है जो आद्रा से ३½ मील की दूरी पर है। यहाँ थाने का सदर आफिस है। सन् १६३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या ७,१३६ है। यहाँ १८८८ ई० में म्युनिसिपैलिटी कायम हुई थी। यहाँ मुन्सिफ और आनरेरी मजिस्ट्रेट की कचहरियाँ हैं। यहाँ रेशमी और सुती कपड़ा तैयार होता है।

सन्तुरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

हुरा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

धनबाद सबडिविजन

धनबाद—सन् १९०८ से यह स्थान इस नाम के सब-डिविजन का सदर आफिस हुआ है। यहाँ ई० आइ० आर० की ग्रैंड कॉर्ड लाइन का जंकशन है। सरकारी कचहरियाँ और दफ्तर स्टेशन से आधे मील की दूरी पर हीरापुर गाँव में हैं। खान-विभाग का सरकारी आफिस यहीं है। यहाँ खान-सम्बन्धी बातें सिखाने के लिये एक स्कूल है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस शहर की जनसंख्या १६,३५६ है, जिसमें १२,२०२ हिन्दू, ३,३८१

मुसलमान, ७२५ ईसाई, ४४ आदिम जाति और ४ अन्य जाति के लोग हैं। यहाँ दो हाई स्कूल चल रहे हैं। शहर में म्यूनिसिपैलिटी का प्रबन्ध है।

कतरास या कतरासगढ़—यह स्थान इस नाम के स्टेशन से १½ मील की दूरी पर है। स्टेशन के पास एक बड़ा बाजार बस गया है, जहाँ थाना, अस्पताल, डाक और तारघर तथा हाईस्कूल भी हैं। इसके आस-पास कोयले की खानें हैं। इस स्थान को लोग पँचगढ़ी कहते हैं। कतरास में एक पुराने खानदान के जमींदार हैं। कहते हैं कि यहाँ झरिया राज का सदर दफ्तर था, पीछे यह राज कतरास, झरिया, और नावगढ़, इन तीन हिस्सों में बँट गया। कतरास में पुराने मन्दिरों और मकानों के भग्नावशेष हैं। यहाँ झींझी पहाड़ी पर एक मन्दिर है जहाँ चैत में मेला लगता है। कतरास से ८ मील दक्षिण दामोदर नदी के दोनों किनारे पर चेचगाँवगढ़ और बेलौंजा में दूर तक फैले हुए बहुत-से पुराने मंदिर हैं जहाँ किसी समय बौद्ध, जैन और पीछे ब्राह्मण धर्म का अड्डा रहना जान पड़ता है।

केंदुआडीह—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

गोबिन्दपुर—यह स्थान ग्रैंड-ट्रंक-रोड पर है। यहाँ १९०८ ई० तक सबडिविजन का सदर आफिस था। आफिस के हट जाने पर यह स्थान उजाड़ पड़ गया। इस समय यहाँ थाना-आफिस है।

चिरकुंडा—चिरकुंडा में कोयले की खान है। यहाँ थाना और हाई इंगलिश स्कूल भी हैं।

झरिया—यह स्थान कोयले की खान के लिये हिन्दुस्तान भर में प्रसिद्ध है। यहाँ बहुत-सी कोठियाँ, कारखाने, एक सुंदर बाजार, थाना, अस्पताल और हाई स्कूल है। यहाँ एक पुराने

घराने के जमींदार का निवास-स्थान है। पास की एक पहाड़ी पर एक पुराने किले का भग्नावशेष है, जिसे लोग झरियागढ़ कहते हैं। कुछ लोग बताते हैं कि इसी के नाम पर पुराने जमाने में समूचा छोटानागपुर और बिहार के कुछ हिस्से का नाम झारखण्ड पड़ा था।

तुंडी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

तोपचाँची—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

निरसा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

बाघमारा—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

सिंहभूम जिला

चाइबासा (सदर) सबडिविजन

चाइबासा—यह शहर २२°३३' उत्तरी अक्षांश और ८५°४६' पूर्वीय देशान्तर पर है। यहाँ जिले का सदर दफ्तर है। सन् १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या १०,७८५ है जिसमें ८,०३१ हिन्दू, १,६६६ मुसलमान, ५९५ ईसाई, ४५४ आदिम जाति, ५ सिक्ख और १ जैन हैं। यह शहर रोरो नदी के किनारे बसा है। दिसम्बर के तीसरे हफ्ते से यहाँ एक महीने के लिये मेला लगता है। यह स्थान तसर के व्यवसाय के लिये प्रसिद्ध है। चाइबासा के नाम के सम्बन्ध में कई तरह का अनुमान किया जाता है। चाइबासा का अर्थ आराम का स्थान, छाया का स्थान, चोरों का स्थान या चाई नामक एक मुंडा का स्थान लगाया जाता है।

आनन्दपुर—पोराहाट राज्य के अन्दर यह एक जागीर है जिसका रकबा १८८ वर्गमील है। यह जागीर पोराहाट के राजा काला अर्जुन सिंह के दूसरे लड़के को मिली थी। इस वंश के लोग ठाकुर कहलाते हैं।

केरा—केरा की जागीर पोराहाट के राजा अर्जुन सिंह के छोटे लड़के अजम्बर सिंह को मिली थी। इसका रकबा ७५ वर्गमील है।

केसनागढ़—कोलहान के बिलकुल दक्षिण-पूरब में यह एक गाँव है जहाँ दूर तक फैला हुआ मिट्टी का एक टील्हा है जो

किले का भग्नावशेष मालूम पड़ता है। कहते हैं कि यह राजा केसना का किला था।

कोलहान—कोलहान एक गवर्न्मेन्ट स्टेट है जिसका सदर आफिस चाइबासा में है। यह स्टेट १६५५ वर्गमील के रकबे में है। यहाँ के अधिकांश बाशिन्दे हो जाति के लोग हैं जो कोल की एक शाखा है। कोल से ही कोलहान शब्द बना है।

कोहलान पीर—दे० पोराहाट।

गोयलकेरा—कोलहान में यह एक गाँव है जहाँ रेलवे स्टेशन है। यहाँ से लकड़ी बहुत बड़ी तायदाद में बाहर भेजी जाती है। यहाँ लाह का कारबार भी होता है। यहाँ से ४ मील की दूरी पर पहाड़ के अन्दर एक लम्बी सुरंग है जिससे होकर रेलगाड़ी जाती है।

चक्रधरपुर—पोराहाट स्टेट के अन्दर संजय नदी के किनारे यह शहर है, जहाँ १६३१ की गणना के अनुसार ११,१६१ आदमी रहते हैं। इनमें ७,४१३ हिन्दू, २,२३८ मुसलमान १,०५४ ईसाई, ३८१ आदिम जाति, और ५ सिक्ख हैं। यहाँ की आबादी चाइबासा से अधिक है। यहाँ म्युनिसिपैलिटी, हाई स्कूल, अस्पताल, रेलवे स्टेशन, डाक और तार घर, थाना, डाकबंगलो, पब्लिकवर्क्स-डिपार्टमेन्ट-बंगलो, रोडसेस-इन्सपेकशन बंगलो, पोराहाट के राजा का महल और लाह की कई फैक्टरियाँ हैं। यह व्यापार का केन्द्र है और यहाँ से चावल, तेलहन, लाह, तसर का कोआ, चमड़ा, साबै घास, चूने का कंकड़ और मैंगनिज बाहर भेजा जाता है। यहाँ बी० एन० रेलवे के डिस्ट्रिक्ट ट्रैफिक सुपरिन्टेन्डेन्ट का आफिस है। यहाँ रेलवे अफसरों के रहने के लिये बहुत से बँगले हैं। उन लोगों का एक शहर जैसा

चकला बस गया है। चक्रधरपुर में ईसाइयों का भी जबरदस्त अड्डा है।

चैनपुर—पोराहाट स्टेट के अन्दर यह एक जागीर है जिसका रकबा १०३ मील है। सैनिक सहायता पहुँचाने के लिये यह जागीर स्टेट की ओर से रामचन्द्र महापात्र नामक एक व्यक्ति को मिली थी।

जगन्नाथपुर—यह गाँव कोलहान में है। चाइबासा से झंकपानी होकर यहाँ की दूरी २४ मील है। यहाँ मिडल स्कूल, अस्पताल, डाकघर, रोडसेस-इन्सपेकशन-बंगलो और फारेस्ट-बंगलो हैं। पोराहाट के राजा जगन्नाथ सिंह ने यहाँ एक किला बनवाया था जिसका चिन्ह अब भी देखने में आता है।

जैंतगढ़—कोलहान में यह गाँव वैतरणी नदी के किनारे चाइबासा से ३६ मील दक्षिण है। यह व्यापार का एक केन्द्र है। पोराहाट के एक पुराने राजा काला अर्जुन सिंह ने क्योंझर के चमकपुर नामक स्थान को जीत कर यहाँ एक गढ़ बनवाया था। गढ़ वैतरणी नदी के किनारे एक सुन्दर स्थान पर बना है, जैंतगढ़ से ४ मील पच्छिम वैतरणी के ही किनारे रामतीर्थ नाम का एक तीर्थस्थान है। कहते हैं कि रामचन्द्रजी लंका जाते समय यहाँ ठहरे थे। यहाँ एक कुंड है जिसमें ९ फीट ऊँचे जलप्रपात से पानी आता है। नदी के उस पार जैंतगढ़ के सामने चम्पा नामक स्थान में क्योंझर स्टेट का सबडिविजनल आफिस है।

बाँदगाँव—पोराहाट स्टेट के अधीन यह एक छोटा स्टेट है जो जिले के बिलकुल उत्तर-पच्छिम भाग में है। इसका रकबा २५ वर्गमील है।

वेणुसागर—कोलहान के दक्षिण-पूरब भाग में मयूरभंज की

सीमा पर यह एक गाँव है। गाँव के उत्तर एक बड़ा तालाब है जिसको वेणुसागर कहते हैं। इसी के नाम पर गाँव का भी नाम पड़ा। तालाब के किनारे बहुत से मन्दिरों के भग्नावशेष हैं। ये मंदिर ७ वीं सदी के बताये जाते हैं। यहाँ बहुत-सी मूर्त्तियाँ मिलती हैं। इनमें एक जैनमूर्त्ति, एक जैन या बौद्ध मूर्त्ति और बाकी सब शिव, दुर्गा, गणेश आदि की मूर्त्तियाँ हैं। कहते हैं कि इस तालाब को केसनागढ़ के राजा केसना के पुत्र राजा वेणु ने बनवाया था। तालाब के पास एक छोटे गढ़ का भग्नावशेष दिखायी पड़ता है।

पोराहाट—पोराहाट स्टेट जिले के उत्तर-पच्छिम भाग में है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ४० मील और पच्छिम से पूरब तक अधिक से अधिक चौड़ाई ३६ मील है। इसके अधीनस्थ स्टेट आनन्दपुर, केरा, बाँदगाँव और चैनपुर लेकर इसका क्षेत्रफल ८१३ वर्गमील है। यहाँ के राजा पहले सिंहभूम के राजा कहलाते थे। इस राजवंश की स्थापना के सम्बन्ध में तरह-तरह की दन्तकथाएँ कही जाती हैं, लेकिन, इस राजवंश के लोग अपने को राजपूत बताते हैं। इस वंश के प्रथम राजा काशीनाथ सिंह और द्वितीय राजा छत्रपति सिंह बताये जाते थे। छत्रपति सिंह के लड़के काला अर्जुन सिंह हुए। इनके छोटे लड़के माधव प्रताप सिंह आनन्दपुर जाकर बसे और बड़े लड़के जगन्नाथ सिंह राजा हुए। इनके लड़के पुरुषोत्तम सिंह हुए। इन्होंने अपने छोटे लड़के विक्रम सिंह को राज्य का वह भाग दिया जो आज सरायकेला कहलाता है। विक्रम सिंह के वंशज ही आज सरायकेला और खरसावाँ के राजा हैं। इनके बड़े भाई अर्जुन सिंह पोराहाट के राजा हुए। अर्जुन सिंह के दो लड़के हुए, अमर सिंह और अजम्बर सिंह। अमर सिंह

तो राजा हुए और अजम्बर सिंह को केरा की जागीर मिली। अमर सिंह के बाद जगन्नाथ सिंह गद्दी पर बैठे। इनके समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल बिहार की दीवानी मिल चुकी थी और वह इस भूभाग पर अपना आधिपत्य जमा रही थी। १८२० ई० में यहाँ के राजा घनश्याम देव को अँगरेजी सरकार की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। घनश्याम देव के बाद क्रम से अच्युत सिंह, चक्रधर सिंह और अर्जुन सिंह राजा हुए। अर्जुन सिंह सिपाही-विद्रोह में भाग लेने से १८५६ ई० में गिरफ्तार कर बनारस भेज दिये गये। राज्य के कुछ हिस्सों को अँगरेजों ने अपने सहायकों में बाँटा और बाकी हिस्सा सीधे अँगरेजी सरकार के प्रबन्ध में आ गया। १८६५ ई० में राज्य अर्जुन सिंह के बेटे कुमार नरपत सिंह को दिया गया। राज्य के जिस भाग पर सीधे राजा का अधिकार है वह खास पोराहाट कहलाता है और १० पीरों (इलाकों) में बँटा है—बरिंग, चक्रधरपुर, दुरका, गोयलकेरा, गुदरी, झिलरूआन, कुंदरुगुट, लगुरा, पोराहाट और सोंगरा। इनमें चक्रधरपुर और पोराहाट को सदन्त-पीर और बाकी को कोलहान-पीर कहते हैं।

मनोहरपुर—कोयना और कोयल नदी के संगम के पास इस स्थान में रेलवे स्टेशन, थाना और फारेस्ट-बंगलो है।

सदन्त-पीर—दे० पोराहाट।

सारन्द—जिले के दक्षिण-पश्चिम में जंगलों से भरा यह एक पहाड़ी भाग है। इसका रकबा ४५५ वर्गमील है जिसके ३३५ वर्गमील में रिजर्व्ड फारेस्ट है।

सारन्दगढ़—जहाँ पोंगा और कोयना नदी मिलती हैं उससे थोड़ी ही दूरी पर पोंगा नदी के किनारे छोटानागरा गाँव में यह एक टूटा-फूटा गढ़ है जो सारन्द के किसी पुराने राजा का बताया

जाता है। मनोहरपुर से इसकी दूरी २० मील दक्षिण-पूरब है। यहाँ गाय की एक मूर्त्ति है जिसे हिन्दू लोग पूजते हैं। पास के जंगल में लोहे के दो बड़े नगाड़े हैं। कहते हैं कि जब राजा अपनी प्रजा को किले में बुलाना चाहता था तो इन्हें बजवाता था।

धालभूम (दालभूम) सबडिविजन

धालभूमगढ़—इस नाम के रेलवे स्टेशन के पास यह एक गाँव है। यहाँ पहले धालभूम स्टेट के राजा रहते थे। यहाँ के राजा अपने नाम के आगे धाल उपाधि लगाते थे। इसी कारण इस भूभाग का नाम धालभूम पड़ा। इस स्टेट के मालिक अपने को राजपूत बताते हैं। अँगरेजों ने पहले-पहल १७६७ ई० में इस स्टेट पर चढ़ाई की थी और यहाँ के राजा को वे गिरफ्तार कर मेदिनीपुर ले गये थे। उसकी जगह पर उन्होंने जगन्नाथ धाल को राजा बनाया, पर उसके साथ भी उनका बनाव नहीं हो सका। इससे वह भी राज्य से हटा दिया गया और उसकी जगह वैकुंठ धाल राजा बनाया गया, पर प्रजा उससे सन्तुष्ट नहीं थी। इसलिये फिर जगन्नाथ धाल ही गद्दी पर बैठाया गया और उसके साथ १८०० ई० में राज्य का दमामी बन्दोबस्त हुआ। वह १२ रानियों और २ नाबालिग लड़कों को छोड़कर मरा। बड़े लड़के रामचन्द्र धाल ने सयाने होने पर १८८३ ई० में कोर्ट आफ वार्ड्स से अपना राज्य वापस लिया, पर वह १८८७ ई० में मर गया। उसके बाद शत्रुघ्न धाल राजा हुआ।

घाटशिला—यह स्थान सुवर्णरेखा नदी के किनारे है जहाँ धालभूम सबडिविजन का सदर आफिस है। यहाँ बी० एन०

रेलवे का स्टेशन है। यहाँ पहले धालभूम राजा की राजधानी थी। राजा ने पीछे अपना महल नरसिंहगढ़ में बनवाया। घाटशिला में राज्य की अधिष्ठात्री देवी रंकिनी का मन्दिर है। कहते हैं कि रंकिनी का मंदिर पहले महुलिया के पास एक पहाड़ी में था जहाँ नरबलि चढ़ायी जाती थी। सिंहभूम के डिप्टी कमिश्नर डा० विलियम हेज ने नरबलि रोकने के लिये रंकिनी की मूर्त्ति घाटशिला थाना के अहाते में मँगा ली। भादो में यहाँ एक 'बिन्दा परब' मनाया जाता है और इस अवसर पर १५ दिनों तक मेला लगता है। आसिन में इंद्र परब मनाया जाता है जब कि साल के एक लम्बे खम्भे पर धालभूम के राजा एक छाता लटकाते हैं। दसवें दिन खम्भा उखाड़कर पानी में दे दिया जाता है। घाटशिला से ६ मील उत्तर धरगिरि में २० फीट ऊँचा जलप्रपात है, और ३ मील उत्तर-पच्छिम पंच-पाण्डव नामक स्थान में एक पत्थर पर पाँच आदमियों की मूर्त्ति खुदी मिलती है। टिकरी में पत्थर के बर्तन बनते हैं।

कालिकापुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

कालीमाटी—दे० जमशेदपुर।

गोलमुरी—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

चकुलिया—जिले की पूर्वी सीमा पर इस नाम के रेलवे स्टेशन के पास यह एक गाँव है। यहाँ के जमींदारों ने अँगरेजों को पहले-पहल धालभूम में घुसते समय बड़ी बहादुरी से रोका था।

जमशेदपुर—सन् १९०७ में ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी ने कालीमाटी गाँव में एक कारखाना खोला जो आज हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा कारखाना है। कारखाने के कारण अब यहाँ एक बड़ा शहर बस गया है जो जमशेदजी ताता के नाम पर जमशेदपुर या तातानगर कहलाता है। यहाँ के रेलवे स्टेशन

का नाम कालीमाटी से बदलकर तातानगर-जंकशन हो गया है। यहाँ से एक लाइन मयूरभंज की ओर गयी है। जनसंख्या के हिसाब से जमशेदपुर विहार के शहरों में चौथा स्थान रखता है। १९३१ की गणना के अनुसार यहाँ के ८३,७३८ आदमियों में ६०,४९४ हिन्दू, १३,५६७ मुसलमान, ३,७४८ ईसाई, ३,१३० सिक्ख, २,१३३ आदिम जाति, १७५ जैन और २६१ दूसरे लोग हैं। म्युनिसिपैलिटी की जगह यहाँ नोटिफाइड एरिया कमिटी है।

जुगसलाई—जमशेदपुर के पास के इस शहर की जनसंख्या ८,७२१ है। यहाँ नोटिफाइड एरिया कमिटी और थाना है।

तातानगर—दे० जमशेदपुर।

बहरा गोरा—चकुलिया स्टेशन से २० मील दक्षिण यह स्थान व्यापार का केन्द्र है। यहाँ थाना और हाईस्कूल है। इसके पास कलसीमोहन गाँव में एक कुंड है जहाँ वारुणी के अवसर पर दो हफ्ते तक मेला लगता है। खानमोंदा गाँव में लोहा या ताम्बा गलाने के पुराने बड़े बर्तन दिखाई पड़ते हैं।

बिस्टोपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

रुआम—गाल्डीह स्टेशन से कुछ दूरी पर इस स्थान में कुछ पुराने खंडहर दिखाई पड़ते हैं। मालूम पड़ता है कि यहाँ पहले जैनों का निवास-स्थान था। पर कुछ लोग बताते हैं कि यहाँ रुआम नामक राजा रहता था और उसका यहाँ किला था।

साकची—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

स्वासपुर—यहाँ थाने का सदर आफिस है।

हालुद या हल्दी पोखर—तातानगर-जंकशन से १२ मील दक्षिण यह स्थान व्यापार का केन्द्र है। यहाँ से ५ मील पर दासी और कदल नामक स्थान में पत्थर के बर्तन बनते हैं।

देशी राज्य

खरसावाँ—यह स्थान इस नाम के देशी राज्य की राजधानी है जो इस नाम के रेलवे स्टेशन से कुछ ही दूरी पर सोना नदी के किनारे है।

इस राज्य की स्थापना पोराहाट (पूर्वप्रसिद्ध सिंहभूम) के राजा पुरुषोत्तम सिंह के पोते ने की थी। पुरुषोत्तम सिंह के छोटे लड़के विक्रम सिंह ने खरसावाँ पीर अपने दूसरे लड़के को और असनतलिया पीर तीसरे लड़के को दिया था। खरसावाँ के वर्त्तमान राजा इस दूसरे लड़के के वंशज हैं। असनतलिया पीर पीछे पुरुष-उत्तराधिकारी के अभाव से खरसावाँ राज्य में ही मिला लिया गया। अंगरेजों के साथ इस राज्य का सम्बन्ध १७९३ ई० में हुआ। खरसावाँ ने कर कभी नहीं दिया, लेकिन अँगरेजों का आधिपत्य स्वीकार किया। कोलहान को अपने कब्जे में कर लेने पर अँगरेजों ने इसे चाइबासा के प्रिन्सपल असिस्टेन्ट के अधीन कर दिया। लेकिन अब खरसावाँ बृटिश भारत का भाग नहीं समझा जाता है। बृटिश सरकार के साथ इसका सम्बन्ध १८९९ ई० की सनद से कायम है। राज्य के लिये अलग कोर्ट, जेल, थाना और पुलिस हैं। थाना खरसावाँ और कुचाई में है। गाँव के प्रधान और कोतवाल गाँव की पुलिस का काम करते हैं। खरसावाँ और सरायकेला सन् १९३४ के अप्रैल से ईस्टर्न स्टेट्स एजेन्सी के अधीन कर दिये गये हैं। सन् १९३१ की गणना के अनुसार इस राज्य की जनसंख्या ४३,०९७ है।

सरायकेला—यह स्थान इस नाम के देशी राज्य की राजधानी है जो खरकै नदी के किनारे है। यह राज्य सात पीरों (इलाकों) में बँटा है—बंकसै, दुगनी, गमहरिया, इचा, कन्दरा, कुचांग और

सदन्त पीर। राज्य की सीमा के बाहर ५२ वर्गमील के रकबे का एक स्टेट है करायकेला, वह इस राज्य के ही अधीन है।

सरायकेला राज्य की स्थापना पोराहाट (पूर्वप्रसिद्ध सिंहभूम) के राजा पुरुषोत्तम सिंह के छोटे लड़के विक्रम सिंह ने की थी। विक्रम सिंह को पिता ने सिंहभूम पीर दिया था जिसके अन्दर १२ गाँव थे और जिसका रकबा ५० वर्गमील था। इन्होंने और इनके वंशजों ने राज्य को बढ़ाया। १८०३ ई० में गवर्नर जेनरल वेलेस्ली ने यहाँ के राजा कुँवर अभिराम सिंह से कहा कि उसके राज्य से कर नहीं लिया जायगा, वह मराठों की लड़ाई में अँगरेजों की मदद करे। लार्ड मिन्टो ने भी राजा का समानता का पद स्वीकार कर लड़ाई में मदद चाही। १८३७ ई० में जब कोलहान पर अँगरेजों का कब्जा हो गया और वहाँ एक बृटिश अफसर रहने लगा तो सरायकेला के राजा को भी उसकी अधीनता मानने को कहा गया। सन् १८५७ के सिपाही-विद्रोह के दमन में मदद देने के कारण अँगरेजी सरकार ने पोराहाट राज्य का एक हिस्सा करायकेला यहाँ के राजा को उपहार में दिया। बृटिश सरकार के साथ सरायकेला राज्य का सम्बन्ध १८६६ ई० की सनद से कायम है। यह १६३४ के अप्रैल से ईस्टर्न स्टेट्स एजेन्सी के अधीन कर दिया गया है। राज्य के लिये अलग कोर्ट, जेल, थाना और पुलिस हैं। थाना सरायकेला और गोविन्दपुर में हैं। सरायकेला के राजा साहब आदित्य प्रतापसिंह देव ने यहाँ प्रजा-परिषद् (सेन्ट्रल एसेम्बली) और हाईकोर्ट कायम करने की घोषणा की है। सन् १६३१ की गणना के अनुसार इस राज्य की जनसंख्या १,४३,५२५ है।

वर्णानुक्रमणिका